मेघ रंजनी

कथा संकलन

मुकुंद बापट

शुभकामना

डॉ. सी. नारायण रेड्डी

आशंसा

डॉ. भीमसेन निर्मल

प्रकाशक

किरण प्रकाशन

5-2-674, रिसाला अब्दुल्ला

हैदराबाद-500 195.

Grams : "TELVERS"

Phones Off. 236911
234815
Res. 63063

TELUGU UNIVERSITY

Prof. C. Narayana Reddy
M.A., Ph. D., D. Litt.
VICE-CHANCELLOR

KALA BHAVAN.
SAIFABAD,
HYDERABAD.
Pin 500 004 (A.P.)

Lr. No,

Date: 5-3-1990

शुभ कामना

श्री मुकुन्द बापट की सात कहानियों के संकलन 'मेघरंजनी' को मैंने सरसरी निगाह से पढ़ा। यह "मेघरंजनी" सचमुच सतरंगिनी है। इन कहानियों में जीवन के सात विभिन्न दृष्यों का मनोरम मनोबैज्ञानिक चित्रण हुआ है। कहानियाँ सतोगुण से ओत प्रोत है।

श्री बापट जी रेल्वे में सेवारत है। कार्यालय के व्यस्थ जीवन से सृजनात्मक कार्य के लिये वे समय निकाल पाये यह सराहनीय है।

मैं उनके उज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामना करता हूँ।

सि. नारायण रेड्डी
5/3

VICE-CHANCELLOR
Telugu University
Kala Bhavan, Saifabad,
Hyderabad-500 001.
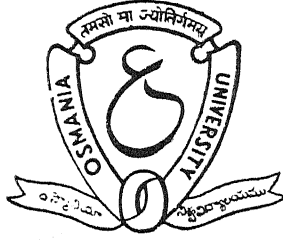
OSMANIA UNIVERSITY

प्रो. भीमसेन निर्मल
एम. ए., पीएच. डी.

प्रोफेसर एवं चैयरमैन
बोर्ड ऑफ़ स्टडीज़, हिन्दी विभाग
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
राष्ट्रीय प्राध्यापक (U. G. C.)

ॐ

आशंसा

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि, श्री मुकुन्द वापट की सात कहानियों का संकलन 'मेघरजनी' के नाम से पाठकों को समर्पित किया जा रहा है।

साहित्य की समस्त विधाओं में कहानी में भी ऐसा प्रभाव है कि, वह पाठकों को शीघ्रता से प्रभावित करती है। कहानी सुनने और सुनाने की मानव की पुरानी आदत है। आधुनिक कहानी का विकास जितने रूपों में हुआ और जीवन के कितने रंगों को उसने अभिव्यक्ति प्रदान की यह अपूर्व एवम् अनुपम है। प्रस्तुत कथा संकलन में जीवन के सतरंगिनी को बड़ी सफलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

'मेघरंजनी' और 'सागरा' जैसी कहानियों में लेखक ने अलौकिक कल्पना के सहारे जो उहापोह किया है वह एकदम रोचक है । 'जलजा' कहानी में नैतिक आचरण के द्वारा पशु जैसे मानव के मन में भी परिवर्तन की झाँकी प्रस्तुत की है । अन्य कहानियों में जीवन की साधारण सी घटनाओं को रोचक और सुपाठ्य ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

यद्यपि लेखक की छूट पुट रचनाएँ पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है, मराठी में तीन-चार कहानी संकलन प्रकाशित हुए हैं तथापि हिन्दी में यह पुस्तकाकार प्रकाशित कहानियों का प्रथम संकलन हैं । इन कहानियों को पढ़ने से यह आशा बंधती है कि, भविष्य में श्री. बापट जी की समर्थ लेखनी से इतोतीय सुन्दर कहानियाँ लिखी जायेंगी । मातृभाषा के प्रभाव से युक्त होने पर भी बापट जी का हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार है ।
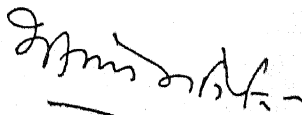
मुझे आशा ही नहीं विश्वास भी है कि, श्री. बापट जी की कहानियों का हिन्दी संसार स्वागत करेगा । मेरी हार्दिक मनोकामना है कि, बापट जी हिन्दी कहानी के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बनाएँ ।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

1-1-405/7/1
गान्धीनगर,
हैदराबाद-500 380.

2-3-८

निवेदन

आन्ध्र प्रदेश की राजधानी में छोटा भारत बसता है कहे तो अति-शयोक्ति नहीं होगी। बहुभाषी, रंगीले इस शहर में राष्ट्रकवि की उक्ति

निजभाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल।
बिन निजभाषा उन्नति मिटत न हिय का शूल।

के अनुसार निज मातृभाषा मराठी में तीन कथा संग्रह प्रकाशित होने के बाद मराठी भाषी पाठकों ने मेरी कथाओं का जो स्वागत किया उसे देख राष्ट्रभाषा हिन्दी में अपनी कुछ नयी रचनाएँ प्रस्तुत करने की इच्छा मन में हुई। ईश्वर की कृपा से कुछ ही दिनों में यह इच्छा भी पूर्ण हो गयी। हिन्दी में रचित कथाएँ 'मेघरंजनी' अक्षर रूप होकर अवतरित हुई। सौभाग्यवश मेघरंजनी कथा संग्रह को आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी ने प्रकाशन हेतु अनुदान देने के लिए चुन लिया।

माँ सरस्वती के वर प्रसाद का यह प्रथम पुष्प सारस्वतों को सुपूर्द करते समय मुझे विशेष आनन्द हो रहा है।

मेघरंजनी कथा संग्रह को अपनी व्यस्तता के बावजूद उस्मानिया विश्वविद्यालय के डॉ. भीमसेन निर्मल जी ने प्रस्तावना दी है उनका मैं हार्दिक आभारी हूँ।

तेलुगु विश्वविद्यालय के उपकुलगुरु तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार से विभूषित डॉ. सी. नारायण रेड्डी जी ने मेघरंजनी कथा संग्रह का अवलोकन कर मुझे प्रोत्साहित किया। ऐसे जेष्ठ और श्रेष्ठ साहित्यकार

की शुभ कामनाओं ने कथा संग्रह को सुशोभित किया है यह मेरा सौभाग्य है। मैं उनका हृदयपूर्वक आभारी हूँ।

आशा है पाठक इस कथा संग्रह का स्वागत करेंगे।

लेखक

3-4-274
"चिंतामणी"
काचिगुड़ा
हैदराबाद-500 027.

अनुक्रम

मेघ रंजनी

मेघना प्रकृति के इस अनुपम खजाने को देखकर अपने आपको भूल सी गयी थी। चारों ओर फल-फूलों से लदे हुए पेड़ों से भरपूर, ऊँचे पहाड़ नई-नई उगी घास से हरे-हरे दिखायी दे रहे थे। पानी के झरने मंद मधुर लयकारी से बह रहे थे और ऊँचाई से मस्ती से नीचे आ रहे थे—पानी फेनील होकर नीचे गिर रहा था। प्रकृति के अंग-अंग से सौंदर्य फूट पड़ा था। पैरों तले की घास में भी अनुपम रंगों के बनफूल अपनी-अपनी छोटी-सी रूप छटा दिखाकर मस्ती से झूम रहे थे। मेघना को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि पूना जैसे कोलाहल वाले शहर से 100/125 मील की दूरी पर इतना शांत, सुन्दर और निसर्गरम्य स्थान हो सकता है। यह घाटी इतनी लुभावनी होगी यह उसने सोचा भी नहीं था। चारो ओर फैले निसर्ग का सौन्दर्य आँखों में समाती हुई वह आगे-आगे चलती जा रही थी। अचानक किसी ने उसे पकड़ कर पीछे की ओर खींचा। उस अजनबी की ओर आश्चर्य और भय की नजर से उसने देखा। अजनबी ने बिना कुछ बोले दो कदम आगे बढ़कर नीचे की गहरी खाई ओर इशारा किया। मेघना के रोंगटे खड़े हुए। प्रकृति के सौन्दर्य का आनन्द लेते-लेते वह आगे चल रही थी मगर सामने की गहरी खाई का ख्याल ही नहीं था। अजनबी ने ऐन वक्त पर आकर उसे पीछे खींचकर उसकी जान बचाई थी। उस देवदूत की ओर

कृतज्ञता से देखते हुए उसने "थँक यू" कहकर आभार प्रदर्शन तो किया मगर और कुछ आगे कहने की मनस्थिति में वह नहीं थी। अजनबी ने आकर उसे पीछे न खींचा होता तो क्या होता ? इस कल्पना से अभी भी उसका हृदय कांप रहा था। मेघना की तरफ देख थोड़ा-सा हँसकर अजनबी चला गया। अपने जीवनदाता का नाम पूछने का भी उसे उस समय ध्यान नहीं रहा।

"मैडम शॉट रेडी है चलिए" कहते हुए युनिट बॉय ने उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। युनिट बॉय के साथ मेघना शॉट देने गई। पूना से एक फिल्म युनिट इस घाटी में आउट डोअर शुटिंग के लिए आया था। बिना रिटेक के शुटिंग पुरी हुई। शॉट ओ. के. हुआ और डायरेक्टर ने मेघना को बधाई दी। वह जिस तरह चाहता था, ठीक उसी तरह की सिच्युएशन उसे मिली थी। वर्षा ऋतु प्रधान मेघमल्हार राग मुक्त मेघों के सहचर्य से इस शांत वातावरण में एक ही टेक में रेकार्ड हुआ था। उसने म्युझिक डायरेक्टर, आर्केस्ट्रा के कलाकार और युनिट के सभी लोगों को धन्यवाद देकर दूसरा सेट लगाने को कहा।

मेघना म्युझिक डायरेक्टर फिल्म डायरेक्टर और रेकार्डिस्ट के साथ रेकार्डिंग सुनने गेस्ट हाउस के तरफ चली गयी। अंतरा सुनते ही सबने वाह वा की। गाना बहुत अच्छा रेकार्ड हुआ था। सबको बीच में रोकते हुए मेघना ने पूछा— "बीच में बाँसुरी किसने बजायी ? बहुत प्यारी लगती है।" तब म्युझिक डायरेक्टर ने आर्केस्ट्रा में बाँसुरी न होने की बात कही। "आपको शायद गाने की रेकार्डिंग सुनते समय

संगीत में बाँसुरी का आभास हो गया होगा।" म्युझिक डायरेक्टर के इस कथन से मेघना का समाधान नहीं हुआ। उसने फिरसे गाना सुनाने की रिक्वेस्ट की। दुबारा जब गीत बजने लगा तो वास्तव में उसमें बाँसुरी के मधुर स्वर सुनाई दिये। सब लोग आश्चर्य में पड़ गये कि आर्केस्ट्रा में कोई भी बाँसुरी बजानेवाला न रहते हुए इसमें सूर आये कैसे ? गीत फिल्माने की सही पद्धतीनुसार गीत हमेशा बन्द सांउड रूम के कक्ष में संगीत से सजाया जाता है और उसको बजाते हुए शुटिंग के स्थान पर उसको फिल्माया जाता है। म्यूझिक डायरेक्टर ने इस बार शांत वातावरण में निसर्ग के सान्निस्थ में प्रयोग को रूप में संगीत बजाकर गाने का रेकार्डिंग किया था। संगीत में किसी अजनबी के बाँसुरी से गीत का माधुर्य और बढ़ गया था। बाँसुरी किसने बजायी और बजानेवाली व्यक्ति शुटींग स्थल के नजदीक रहने के बाबजूद किसी को कैसे दिखायी नहीं दी इसका म्युझिक डायरेक्टर को बार बार आश्चर्य हो रहा था।

मेघना को अचानक शॉट के कुछ क्षण पहले की घटना का स्मरण हो आया। उसने म्युझिक डायरेक्टर को वह घटना सुनायी। "रेकार्डिंग करने के लिये मैं जीवित हूँ यह भी एक आश्चर्य की बात है। मैं इन पहाड़ियों को देखते देखते एकदम किनारे तक गई थी। शायद मैं अगला कदम डालती और सीधे उस गहरी खायी में गिरकर स्वर्ग सिधार जाती। मुझे किसी ने पीछे खींचा। मैं उसे धन्यवाद देने के बाद कुछ ज्यादा पूछ पाती इस के पूर्व "सेट तैयार हो गया है" कहकर युनीट बॉय मुझे बुलाने आने से मैं सीधे सेट

की ओर चल पड़ी। आज की यह दूसरी आश्चर्य कारक घटना है।"

मेघना की बात से म्युझिक डायरेक्टर शेखर को आश्चर्य हुआ। कल एक और गीत फिल्माना था उसकी थोड़ी रिहर्सल करके युनिट के लोगों ने काम बन्द किया। रात में डिनर के बाद बिस्तर में लेटते ही दिन भर की थकान से मेघना गहरी नींद में खो गयी। स्वप्न रूप से उन पहाड़ियों में घटी घटना फिर उसके सामने आयी किसी अनजाने हाथों ने उसे दूर खींचकर खाई में गिरने से बचाया। मगर स्वप्न में भी उसकी सूरत दिखाई नहीं दी। अचानक खड़बड़ा कर मेघना जाग उठी। उसने घड़ी में देखा। रात के दो बज चुके थे। दूर कहीं से बाँसुरी में मीठे सूर उसके कानों तक आ रहे थे। वह सूर ठीक उसी प्रकार के थे जो उसे गीत के रेकार्डिंग में सुनाई दिये थे। उनकी याद उसको आते ही बाहर सुनाई दे रहे बाँसूरी के सूर उसके स्वप्न का आभास समझकर वह एक ग्लास पानी पीकर फिर बिस्तर में लेट गई। लेकिन उसे नींद न आई। अब बाँसुरी की धुन स्पष्ट सुनाई दे रही थी। बांसुरी के सुनाई दे रहे वे स्वर स्वप्न का आभास नहीं सत्यता है यह जानकर वह बेचैन-सी हो गयी। वातावरण में कड़ाके की ठंड थी। बन्द कमरा और डबल ब्लँकेट के बावजूद ठंड का प्रभाव कम नहीं हुआ था। खिड़की खोल कर बाहर झाँकने का विचार उसके मन में आया। मगर ठंड के मारे उठकर खिड़की खोलकर बाहर झांकने की हिम्मत नहीं हुई। बाँसुरी की वह धुन इतने रात में बन्द कमरे के बावजूद उसके कानों में गूंज रही थी। लेटे लेटे आँख बन्द कर उसने नींद लेने का प्रयत्न किया मगर

निद्रादेवी ने उससे अपना दामन कभी का छुड़ा लिया था। बहुत देर तक बिछाने में पड़े रहने के बाद मन की अस्वस्थता उसे खींच कर खिड़की तक लायी। उसने खिड़की खोल दी। ठंडी हवा का एक झोंका जोर से अन्दर आते ही उसका वदन कांप उठा। उसने ठंडी हवा की पर्वा किये बिना खिड़की के बाहर देखा। चारो ओर अंधेरा और सन्नाटा था कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। सिर्फ उस अति शांत वातावरण में बाँसुरी के स्वर अभी भी सुनाई दे रहे थे। मेघना की कल्पना के विपरीत धुन काफी दूर से सुनाई दे रही थी और शांत वातावरण होने से इतनी दूरी पर मेघना उन्हें सुन सकी थी। युनिट में इतर निद्रिस्त कर्मचारियों में इसकी खबर भी नहीं होगी। मेघना उस खुली खिड़की के सामने न जाने कितनी देर खड़ी थी और बाँसुरी के उन मधूर सुरों को अपने कानों में और हृदय में समा रही थी। अचानक बाँसुरी का आवाज बन्द होने से ध्यानमग्न मेघना होश में आयी। उसने खिड़की बन्द कर दी। ठंड से अब उसका शरीर ज्यादा कांप रहा था। ब्लँकेट में शरीर को लपेट वह फायर प्लेस के सामने आयी ठंड से बचने का यह एक ही उपाय था। फायरप्लेस की अग्नि के समाने बैठने से उसके शरीर में चेतना आ गयी मगर बाँसुरी बन्द हो जाने से मन बेचैन हुआ था। बहुत देर तक खुली खिड़की से आयी ठंड का सामना करने के बाद अब फायरप्लेस से दूर होकर बिस्तर में जाने की उसकी इच्छा ही नहीं हुई। वहाँ बैठे बैठे वह बाँसुरी बजानेवाले अन्जाने जादुगर के बारे में सोचती रही।

"गुड मॉर्निग मैडम" इन शब्दों को सुनते ही उसने चौंक

कर पीछे देखा। नौकरानी चाय का ट्रे लेकर खड़ी थी। हँसते हुए चाय की एक प्याली मेघना के हाथ में देते हुए उसने मेघना से कहा मैडम आप बहुत जल्द उठ गयी। युनीट के लोग तो अभी गहरी नींद में है। मेघना ने हँस कर नौकरानी के तरफ देखा मगर वह कुछ बोली नहीं। चाय पीते ही वह फ्रेश हो गयी। सुबह के प्रसन्न वातावरण में नहा धो कर जल्दी जल्दी तैयार हो गयी। अपने कमरे में ही उसने नाश्ता मंगवाया नाश्ता ले कर वह जरा टहलने गयी। सुबह के स्वच्छ वातावरण में निसर्ग का सौन्दर्य उसने अवलोकन किया। शुद्ध हवा से भरपूर उस परिसर में थोड़ी देर टहलते ही उसका मन प्रसन्न हुआ। शरीर में फूर्ति सी आ गयी। युनीट में मेघना वापस आयी तब सब लोगों को आश्चर्य हुआ। वे लोग अभी भी तय्यार नहीं हुए थे। कुछ तो अभी अभी नींद से जागे थे। रोज सुबह 9 बजे से पहले कभी न उठने वाली मेघना को इतनी ठंड के बावजूद इतनी सुबह सबसे पहले उठकर बाहर से ठहलकर आते देख सब को आश्चर्य होना स्वाभाविक ही था।

आज शुटिंग का दूसरा दिन था। कल की तरह आज भी एक गीत फिल्माया जाना था। आज शुटिंग किसी तरह पूरा कर यूनिट को पूना वापस जाना था। युनीट के भावी कार्य व्यस्थता के कारण आज का शुटिंग आज ही होना अत्यावशक था। उसकी पूर्तता करने का निश्चय डायरेक्टर, म्युझिक डायरेक्टर और यूनिट के सभी कर्मचारियों ने किया था।

शुटिंग की शुरुआत हुई। राग मेघ-मल्हार में एक गाना कल रेकार्ड हुआ था। राग मारवा में आज का गीत फिल्माना

था। फिल्म में सिर्फ 4-5 गीत थे और फिल्म के पूर्ण शुटिंग में गीतों को बहुत कम अवधी मिली थी। आजका गीत भी आखरी गीत था। जिसके बाद गीतों का फिल्माना संपन्न होने जा रहा था। मेघना अब की बार सतर्कता से बजते संगीत को ध्यान से सुनती गाती और अभिनय करती सुरों के तरफ अधिक ध्यान दे रही थी। वह देखना चाहती थी गीत के दौरान कहीं बाँसुरी के स्वर सुनायी देते है या कैसे ? उसी प्रकार वह अपने अनजाने जीवन दाता को भी ढूंढ रही थी। उसका मन बार-बार उससे कहता की बाँसुरी बजाने वाला और उसका जीवनदाता दोनों एक ही व्यक्ति है। उसे मारवा राग गाना था। मगर सूर जम नहीं रहा था।

बादलों का पर्दा दूर कर सूर्यदेव भी गरमाने लगा था। रिटेक पर रिटेक हो रहे थे। आर्केस्ट्रा, कैमेरामन, डायरेक्टर म्युझिक डायरेक्टर सभी त्रस्त हुए। एक ही टेक में शॉट ओ. के. कर देने वाली मेघना बढ़ते सूर्य के समान सब को ताँप दे रही थी। खुद वह भी परेशान थी। पर वह क्या करती ? आँखें उस व्यक्ति को और कान सूरों को खोजने में व्यस्त थे। गीत बनता कैसे ? वह भी तो एक साधना है।

मेघना को सारे युनिट पर दया आ रही थी। सभी धूप में उसके कारण तप रहे थे। उसने अब किसी हाल गीत ओ. के. करने का आश्वासन युनिट को दिया। आँखें मूँदकर स्वर लगाया। उसे लगा सारंगी और हार्मोनियम के साथ बाँसूरी के सूर भी मिले हुए हैं। आनंद विभोर होकर वह आँखें खोलकर गाने लगी। उसे दूर एक छोटे पेड़ के पास उसका जीवनदाता व्यक्ति नजर आया। गहरी खाई के तरफ देखकर वह बाँसुरी

वजा रहा था । मेघना के तरफ उसकी पीठ थी और उसने दिल ही दिल में सोचा कि वह सृष्टि सौन्दर्य का आनन्द ले रहा । उसी की तरह वह भी सृष्टि सौन्दर्य का पुजारी है । मेघना ने दिल लगाकर गीत गाया । शॉट ओ. के. हुआ । गाना बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रित हो गया । कड़ी मेहनत का मीठा फल मिला । डायरेक्टर ने चैन की साँस ली और मेघना को बधाई दी । गीत खत्म होते ही डायरेक्टर से अनुमति लेकर मेघना उसके जीवनदाता को मिलने के लिये भागी किन्तु उसने देखा तब पेड़ के नीचे कोई नहीं था । निराश होकर वह लौट आयी ।

सूरज बस अब ढलने को ही था । रेकार्ड हुआ गीत फिर से सुनाने का मेघना ने अनुरोध किया और म्युझिक डायरेक्टर और रेकार्डिस्ट ने तुरन्त गीत रिप्ले करना शुरू किया । "मेघना जी क्या आज भी गीत में बाँसुरी के धुनों को आपको खोजना है ?" रेकार्डिस्ट ने मजाक से पूछा । "आज तो आपको निराशा ही नसीब होगी" म्युझिक डायरेक्टर ने भी अपना मत प्रदर्शन किया । मगर गीत जब दुबारा सुनाई पड़ा तो रेकार्डिस्ट, डायरेक्टर, म्युझिक डायरेक्टर और युनिट के सभी लोग आश्चर्य में पड़ गये । गीत में फिर बाँसुरी के स्वर सुनाई दिये और आज का गीत तो कल के गीत से भी ज्यादा सुन्दर जान पड़ रहा था । और गीत का माधुर्य बाँसुरी के सूरों से ही बढ़ गया था । मेघना को इस बात का बिल्कुल आश्चर्य नहीं हुआ । बाँसुरी बजाने वाला व्यक्ति युनिट के नजदीक ही बैठा बाँसुरी बजा रहा था जिसे मेघना ने अपनी आँखों से देखा था । उसकी सूरत मात्र वह नहीं देख सकी थी । उस

तक पहुँचने से पहले ही वह वहाँ से चल दिया था। मेघना बेचैन हो गई थी और उसकी बेचैनी का कारण युनिट के सभी लोग जान गये थे। वे सब लोग खुद हैरान थे इतना अच्छा बाँसुरी बजानेवाला वहाँ आया कहाँ से और अब तक किसी को कैसे दिखाई नहीं दिया।

डायरेक्टर से अनुमति लेकर वह अपनी सेक्रेटरी मोना के साथ घाटी के तरफ घूमने चल दी। युनिट से ज्यादा दूर न जाने का उसने डायरेक्टर साहब को वचन दिया। अपने जीवनदाता के दर्शन से वंचित होने पर वह निराश तो थी मगर शायद वह घाटियों में कहीं मिल जाय इस आशा से मेघना मोना के साथ टहलने निकली थी। वह हरी-भरी वादियाँ अब उसका मन नहीं बहला सकती थी वह तो जीवनदाता के दर्शन के लिये व्याकुल थी। अंधेरा अब होने ही वाला था। युनिट के तरफ वापस चलने की मोना ने रिक्वेस्ट की। उस अन्जान परिसर से अन्धेरा होने से पहले लौटना आवश्यक था। निराश मेघना मोना के साथ वापस निकली। युनिट जहाँ ठहरा हुआ था वह डाक बँगला दिखाई दे रहा था। बस अब पाँच मिनट में युनिट को पहुँच जायेंगे। कल सुबह पूना लौट जाना है यह विचार मन में आते ही वह और निराश हो गयी। चलते-चलते मेघना उस स्पॉट पर आयी जहाँ कल उसे अजनबी ने बचाया था।

अचानक उसके कानों पर 'गौडमल्हार' राग में बाँसुरी के सूर आये। दिल में आनन्द और आश्चर्य की एक लहर सी दौड़ी जिससे उसका शरीर कांप उठा। छोटे पेड़ के नीचे बैठ कर अजनबी बाँसुरी बजा रहा था और आश्चर्य की बात

यह थी वह मेघना और मोना की ओर एकटक देख रहा था। मेघना भागकर उसके पास गयी। मोना भी पहुँच गयी। अपने जीवनदाता का मुख देखने का सौभाग्य आखिर मेघना को मिल ही गया। कल की घटना के बाद तुरन्त वहाँ से युनीट के तरफ जाना पड़ा था इसलिए अजनबी का चेहरा मेघना ने ठीक तरह देखा नहीं था। वह व्यक्ति अत्यंत सुन्दर था। रंग एकदम गोरा और आँखें निली-निली सी। उसे देखते ही मेघना और मोना ने समझ लिया कि वह व्यक्ति भारतीय नहीं है। मेघना और मोना नजदीक आते ही उस युवक ने बाँसुरी बन्द कर दी। आप बाँसुरी बहुत अच्छी बजाते हैं कहकर मेघना नें उसे धन्यवाद दिया और अपना परिचय कराया और अपने युनीट के शुटिंग के बारे में भी कहा। उसने मोना का भी उससे परिचय करवाया। "आप दोनों बातें करो मैं डायरेक्टर साहब को बोल के आती हूँ नहीं तो वे परेशान होंगे" कहकर मोना वहाँ से चल निकली जाते समय उसने जल्दी लौट आने का वादा किया।

मोना के वहाँ से जाते ही मेघना अजनबी के पास बैठ गयी। अपनी जान बचाने के लिए फिर एक बार उसने अजनबी से कृतज्ञता व्यक्त की। आपने ये गौडमल्हार राग कहाँ से सिखा इस प्रश्न पर अजनबी ने उत्तर दिया "मैंने कहाँ सिखा ? इस बजाने को गौड मल्हार राग कहते हैं यह तो मैं आपके मुख से अभी ही सुन रहा हूँ। मैं तो बस यूँही बजा लेता हूँ रागदारी का ज्ञान मुझे नहीं है" इस बात पर मेघना को आश्चर्य हुआ "अच्छा अब ये बताईए कि आपने हमारे शुटिंग के समम उतनी मीठी बाँसुरी कैसे और

कहाँ से बजायी और बिना किसी को दिखाई दिये वहाँ से क्यूँ चल दिये ?"

इस बात का उत्तर भी मेघना को आश्चर्य में डालनेवाला था । वह यही पेड़ के पास बैठकर बाँसुरी बजा रहा था और उसकी बाँसुरी का शुटिंग के दौरान फिल्माये गये गीत से कुछ संबंध जुड़ गया है इसका अजनबी को बिल्कुल ज्ञान नहीं था और वह अब जहाँ बैठकर धुन बना रहा था । वहाँ से कहीं गया भी नहीं था ।

"आप कहाँ के रहनेवाले है ?" मेघना ने डरते डरते पूछा । कहीं अजनबी को अपने बार-बार सवाल पूछने पर गुस्सा तो नहीं आयेगा ? मगर अजनबी ने हँसते हँसते उत्तर दिया "मैं इन्हीं घाटियों में घुमता फिरता हूँ और यहाँ पास में ही रहता हूँ मेरा नाम क्रिस्टीन है आप मुझे क्रिस्टी कह सकती हैं ।"

अजनबी के बिना हिचकिचाहट के उत्तरों से मेघना की हिम्मत भी बढ़ गयी थी । "नाम से और सुरत से तो आप भारतीय नहीं लगते फिर आप यहाँ कैसे रहते हैं ?" मेघना के प्रश्न पर क्रिस्टीन ने उत्तर दिया कि उसके माता पिता जरूर अंग्रेज थे मगर इंग्लैंड से भारत आकर यहाँ बस गये थे और वापस इंग्लैंड नहीं गये उनकी मृत्यु के पश्चात गये 15/20 वर्षों से वह बिल्कुल अकेला है ।

मेघना को क्रिस्टीन पर दया आ रही थी । उसके रूप और बाँसुरी का आकर्षण उसके मन में और गहराई तक पहुँच गया था ।

"आपने बाँसुरी कहाँ और किससे सिखी ? और आपके गुरु कौन हैं" इस मेघना के प्रश्न पर क्रिस्टीन को हँसी आ गयी। बाँसुरी मैंने खुद अपने आप बजानी सीखी है और यह वादियाँ वह पेड़ पौधे ही मेरे गुरु है।

अब तक बातों में बहुत समय गुजर गया था मेघना क्रिस्टी के पास और सरकर बैठ गयी। "मेरी आपसे एक प्रार्थना है क्या आप अपनी बाँसुरी मेरे लिए एक बार बजायेंगे ?" इस मेघना की प्रार्थना पर क्रिस्टीन ने बाँसुरी बजाना शुरू किया। बाँसुरी के जादुमयी मधुर सुरों से मेघना मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही। उसने बेखयाल होकर अपने दोनों हाथ क्रिस्टी के कंधों पर रख दिये और आँखें बंद किये वह जादुभरी धुनों को सुनती रही। यह क्षण कभी खत्म न हो और इस आनन्द-मयी वातावरण में जीवन समाप्त हुआ तो भी उसे वह मंजूर था।

बाँसुरी एकदम बन्द होते ही मेघना होश में आई और उसने पहले क्रिस्टीन की तरफ और बाद में पीछे मूड़ कर देखा। शर्माकर वह क्रिन्टीन से दूर हो गई मोना और फिल्म का पूरा युनीट वहाँ खड़ा था और न जाने वहाँ कब से खड़ा था। इतनी अच्छी बाँसुरी बजाने और युनीट की चाहेती मेघना की जान बचाने के लिए आगे आकर क्रिस्टीन को धन्यवाद दिये।

म्युझिक डायरेक्टर ने दोपहर फिल्माये हुए गीत को बजाने और उसके लिए बाँसुरी बजाने की रिक्वेस्ट करने पर क्रिस्टीन ने तुरन्त स्वीकृति दी। अंधेरा हो चुका था मगर युनीट के लाईटों ने अंधेरे को उजाले में बदल दिया था। क्रिस्टीन की

तुरन्त हाँ का कारण मेघना है यह बात पूरे युनीट ने जान ली थी। क्रिस्टीन के बाँसुरी की धुन ने पुरे युनीट को मंत्र-मुग्ध कर दिया। गीत की रेकार्डिग हो गई। फिल्म के गीत अब सुपरहिट हो जायेंगे इस बात की ग्यारंटी युनीट बॉय भी दे सकता था।

म्युझिक डायरेक्टर खुश था। उसने क्रिस्टीन को अपने आर्केस्ट्रा में जौईन होने और बम्बई आने का आमंत्रण दिया क्रिस्टीन ने हँसकर म्युझिक डायरेक्टर की तरफ देखा मगर कुछ उत्तर नहीं दिया।

युनिट के लोग क्रिस्टीन के आभार मानकर चल दिये। मेघना ने संधी मिलते ही क्रिस्टीन के दोनों हाथों को अपने हाथों में लिया और अपने साथ चलने को कहा। मैं चाहता हूँ मगर नहीं आ सकता मगर फिर तुम्हें मिलने का वादा करता हूँ कहकर क्रिस्टीन चल दिया। अश्रुपूर्ण नेत्रों से, आँखों से ओझल होने तक मेघना उसकी ओर देखती रही। भीगी आँखों से युनिट को वापस चली गयी रात भर क्रिस्टीन की याद उसे सताती रही।

दूसरे दिन युनिट पूना की ओर चल दिया। कुछ ही दिनों में फिल्म का शुटिंग पूर्ण हुआ। पिक्चर जब रिलिज हुई तो गीतों के कारण हिट हो गयी। कुछ ही हफ्तों में प्रोडयूसर को लाखों का फायदा हुआ। म्युझिक डायरेक्टर फूला नहीं समा रहा था। यह सब मेहरबानी क्रिस्टीन की है यह सभी जानते थे। फिल्म के प्रोडयूसर और डायरेक्टर ने मेघना को बुलाकर उसकी बहुत तारीफ की। क्रिस्टीन के बाँसुरी बजाने का श्रेय उसको ही था। क्रिस्टीन को बम्बई बुलाकर एक लाख रु. का

पुरस्कार देकर उसे सम्मानित करने का निश्चय हुआ । क्रिस्टीन को बम्बई लाने का काम मेघना को करना था । साथ में म्युझिक डायरेक्टर शेखर भी आने वाले थे । क्रिस्टीन का पता मेघना को मालूम नहीं था । गीत के रेकार्डिंग के दौरान उसके कुछ फोटो ग्राफ्स कैमेरामन ने लिये थे । उनके आधार पर शुटिंग स्थल पर जाकर आजू-बाजू पूछताछ करने पर उस पहाड़ी परिसर में क्रिस्टीन को ढूँढ निकालना कुछ मुश्किल काम नहीं था । मुश्किल काम था उसे बम्बई तक आने के लिए राजी करने का । वह काम मेघना कर सकती थी । उसे पूर्ण विश्वास था कि उसका जीवनदाता उसे कभी निराश नहीं लौटायेगा ।

मेघना म्युझिक डायरेक्टर के साथ बम्बई से पूना रवाना हुई । पूना से 100-125 मील दूर का सफर कार से सिर्फ 3-4 घंटे तीन चार साल की तरह लग रहे थे । वह क्रिस्टीन से मिलने के लिये व्याकुल थी और जीवनभर उसका साथ निभाने की उसने ठानी थी । क्रिस्टीन को किसी भी शर्त पर बम्बई लाने का उसने प्रोडयूसर को वचन दिया था । एक बार वम्बई आकर क्रिस्टीन फिर वापस इन पहाड़ियों में आया तो भी उसे वह मंजूर था । सिनेमा सृष्टी छोड़ मेघना भी उसके साथ सारा जीवन इन पहाड़ियों में बिताने को तैयार थी । क्रिस्टीन का सहवास और उसकी बाँसुरी की धुन इनके अलावा अब दुनिया में उसे किसी चीज में आस्था नहीं थी ।

म्युझिक डायरेक्टर शेखर और मेघना जब घाटियों में पहुँचे तो दोपहार के तीन बजे थे । डाक बंगले पर पहुँचते ही अधिरता से मेघना ने डाक बंगले के पहरेदार को क्रिस्टीन के

के बारे में पूछा। मगर उससे कुछ फायदा न हुआ पहाड़ियों में घूम फिर कर शेखर और मेघना ने क्रिस्टीन के बारे में पूछताछ की मगर उस इलाके के लोगों ने न कभी उसका नाम सुना था न उसे कभी देखा था। उसका फोटो दिखाकर भी ऐसे कोई व्यक्ति को जिसने देखा हो या पहचानता हो कोई भी नहीं मिला।

मेघना को एक कल्पना सुझी। उनके युनिट का शुटिंग जहाँ हुआ था और जिस पेड़ के पास क्रिस्टीन बैठा था वहाँ जाकर उसका इन्तजार करने का उसने निश्चय किया। उसे देखकर वह कहीं से भी आयेगा ऐसी उसकी उम्मीद थी। रात काफी पड़ने पर भी वहाँ कोई नहीं आया तो वह निराश हो गयी और शेखर के साथ डाक बंगले पर पहुँच गयी। रात में उसके कमरे में बिस्तर पर लेटी-लेटी वह विचार करने लगी रात के सन्नाटें में कहीं उसकी बाँसुरी का आवाज सुनायी देगा इस आशा से वह रात के दो बजे तक जागती रही। खिड़की खोलकर उसने बाहर देखा मगर उसे बाँसुरी की धुन सुनाई नहीं दी। उसे याद आया क्रिस्टीन ने कहा था कि वह यहीं पास में रहता है। सबेरे उठते ही उसने पूछताछ की डाक बगले में व्यवस्था के लिये नियुक्त सभी कर्मचारियों से उसने पूछा। आश्चर्य की बात यह थी किसी को उसके बारे में कुछ मालूम नहीं था। उसकी बाँसुरी की धुन को बहुतों ने सुना था। रात में उसकी बाँसुरी सुनाई दी तो वहाँ के कर्मचारियों को लगता था कि फिल्म के युनिट में या शेखर के आर्केस्ट्रा में ही कोई बाँसुरी बजाता होगा इसी धारणा से बाँसुरी सुनकर किसी को तब आश्चर्य नहीं हुआ। मेघना और उसके युनिट

के वहाँ से चले जाने के बाद बाँसुरी का वह मधुर आवाज भी बन्द हो गया था ।

ढूंढने पर भी क्रिस्टीन का जब कुछ पता नहीं मिला तो मेघना और शेखर को बहुत निराशा हुई । मेघना को तो अब जीवन व्यर्थ सा मालूम हुआ । अपनी मन की व्यथा उसने शेखर को कह डाली उस परिसर में आसपास ही रहने की और उसे फिर मिलने के क्रिस्टीन वचन की बात भी सुनाई । क्रिस्टीन कौन है कौन था और उसके जीवन में क्यूं आया यह उसके लिए न सुलझनेवाली उलझन हो गई थी । शेखर ने उसे बहुत समझाया । क्रिस्टीन कोई भी हो और कहाँ से भी आया हो वह उसका जीवन दाता और हित चिंतक है यह बात तो मेघना को अच्छी तरह मालूम थी । दूसरे दिन शाम को बम्बई के लिए रवाना होने का निर्णय शेखर ने लिया । मेघना की इच्छा तो नहीं थी मगर वहाँ से लौटकर जाने के सिवा और कोई पर्याय भी नहीं था यह सोचकर वह तय्यार हो गई ।

लौटने का दिन आया तो मेघना का दिल फिर बेचैन हो उठा । वह शेखर को बिना बोले घाटी की ओर चल दी । क्रिस्टीन का ही प्रश्न उसके मन में बार-बार उठ रहा था । एकदम उसे ख्याल आया क्रिस्टीन कोई भी मृतात्मा तो नहीं ? एक अंग्रेज युवक का परिसर में इस तरह भटकना, आर्त स्वर से बाँसुरी बजाना उसे अजीब-सा लगा । उसके मन से भय बिल्कुल नहीं था । कहीं वह क्रिस्टीन की पिछले जनम की प्रेयसी तो नहीं ? इस विचार से वह बेचैन हुई और उसे मिलने के लिये व्याकुल हो गयी । अचानक उसके मन में

विचार आया क्रिस्टीन अगर कोई जीवात्मा है तो उसने उसकी जान क्यूं बचायी । अगर वह सही भी उसकी पूर्वजन्म भी प्रेयसी रही होगी तो वह उसकी जान बचाने फिर आ सकता है । इन्हीं विचारों को मन में समाती वह पहाड़ के उस चट्टान के किनारे गई जहाँ नीचे बहुत गहरी खाई थी और जहाँ से गिरते समय क्रिस्टीन ने अकस्मात आकर उसकी जान बचाई थी । अब सिर्फ एक कदम बाकी था । बस एक ही क्षण में से आकर क्रिस्टीन उसे बचायेगा खाई में गिरकर मृत्यु के पश्चात उसकी आत्मा क्रिस्टीन को खोजकर उससे मिलती ।

अचानक मेघना को किसी ने पीछे की ओर खिंचा । घबराकर मेघना ने देखा । वह शेखर था । मेघना पागल हो गयी हो क्या यह क्रिस्टीन से मिलने का रास्ता नहीं है "ऐसा कहते हुए शेखर ने उसे चट्टान से दूर खींचा और दूर तक ले गया । उसने हाथों से पकड़कर जमीन पर बिठाया । मेघना फूट फूट कर रो रही थी । उसकी सांत्वना करने का शेखर ने प्रयत्न किया । थोड़ी देर के बाद वह जब शांत हुई तो शेखर ने उसे कहा—"अगर क्रिस्टीन पर तुम सच्चा प्रेम करती हो तो उसके वादे का ध्यान भी तुम्हें रहना चाहिये यह पागलपन तुम्हे शोभा नहीं देता ।" मेघना शेखर की ओर आश्चर्य से देख रही थी । उसके चेहरे पर आया प्रश्न चिह्न देखकर शेखर हँसते हुए बोला—"मेघना तुम्हींने तो कहा था कि क्रिस्टीन ने तुम्हें तुमसे फिर से मिलने का वचन दिया था उसका वचन सही है और तुम्हें उससे मिलने की इच्छा है उसके वादे की प्रतिक्षा करने के लिए तुम्हारा जिन्दा रहना

और हँसते खेलते काम करना बहुत जरूरी है। तुम्हारा वह कर्त्तव्य भी है।

अपने पागलपन से की जानेवाली हरकत से बचाकर सीधे रास्ते पर लाने के लिए धन्यवाद देकर वह शेखर के साथ डाक बंगले की ओर चल पड़ी।

बम्बई लौटते समय उसका मन निराश नहीं था। क्रिस्टीन के साथ बिताई घड़ियाँ उसे याद आ रही थी, उसी यादों के सहारे जीवन व्यतीत करने का उसने निश्चय किया क्रिस्टीन ने उसे फिर मिलने का उसने वचन दिया था। उसका इन्तजार करना मेघना के जीवन का मुख्य उद्देश्य था उसी के सहारे उसे अब जीना था।

बम्बई आने पर शेखर ने क्रिस्टीन के न मिलने की बात कहीं। उसको पुरस्कार देने को एक लाख रु. की राशी उसके नाम से उसके लौट आने तक रखने का प्रोडयुसर ने निश्चय किया।

मेघना क्रिस्टीन का इन्तजार करती रही वह इन्तजार कब तक करना है इस प्रश्न का उत्तर कोई नहीं जानता था। उत्तर सिर्फ क्रिस्टीन दे सकता था।

स्नेहा

अजि सुनते होऽऽ। इस स्नेहा की पुकार का उत्तर या प्रतिसाद न आने पर वह तंग आ गई। अन्दर से संगीत का मधुर स्वर आ रहा था। किन्तु स्नेहा को वो आवाज प्रसन्न नहीं कर सका। वह अपने घर की साफ-सफाई में व्यस्त थी। स्टूल पर खड़ी रहकर वह मन लगाकर पेन्टींग और तस्वीरों को साफ कर रही थी। उसने अपने पति को दो-तीन आवाजें दीं। फिर भी कुछ उत्तर न आने पर खींजकर उसने कहा अजि सुनते होऽऽऽ "अबकी बार स्नेहा की इस पहाड़ी आवाज से झुंजलाकर उसका पति शैल बाहर आया और उसने बौखलाकर इस चीख पुकार का कारण पूछा। सुन्दर संगीत सुनने के रंग में भंग करने वाली स्नेहा पर शैल नाराज भी हुआ था। उसने कहा "अच्छा संगीत सुनना चाहा कि तुम्हारी किट किटी शुरू हो जाती है" शैल के इस बौखलाने का स्नेहा पर कुछ भी असर दिखाई नहीं दिया। उसने अपनी आवाज और चढ़ाई और शैल से पूछा "संगीत सुनने के आदत में तुम्हें दूसरी बातें याद ही नहीं रहती आपको कल बुवाजी आने वाली हैं उसकी याद है क्या ?" मेरी बुवाजी कल लखनऊ से आ रही है और उनके आने के पहले घर की साफ सफाई होनी चाहिए। आज मुझे घर के काम में मदद करने की मैंने तुम्हें पहले ही रिक्वेस्ट की है और आज के दिन ऑफिस भी न जाने की प्रार्थना की है। वह सब बातें आप

भूल गये होंगे।" स्नेहा की इन बातों पर नटखट अन्दाज में शैल ने कहा—"मुझे तो नींद में भी आजकल तुम्हारी बुवाजी के आने के स्वप्न दिखाई देते हैं, यह सब बातें तुमने जो अभी कही, वह तो सब अब बाय-हार्ट हो गयी है। तुम्हारी बुवाजी आ रही है लखनऊ से और तुम तो ऐसा हंगामा मचा रही हो जैसे व पहली बार विदेश से तुम्हारे घर आ रही है!"

शैल की उसे चिढ़ाने के उद्देश से की हुई बातों का स्नेहा पर कुछ भी परिणाम नहीं हुआ। उसने बड़ी सरलता से कहा कि "बुवा चाहे विदेश से आए या लखनों से उससे क्या फर्क पड़ता है? उसके सामने हमारा घर एकदम टिपटॉप दिखना चाहिए।"

स्नेहा के इस कथन की पुष्टि करते हुए शैल ने कहा—"घर हमेशा टिपटॉप रहना चाहिये यह तो मैं भी चाहता हूँ और यदि हम रोज घर साफ सुथरा सजा सँवरा रखें तो सिर्फ कोई आनेवाला है इस बहाने से हमें समारोह करके घर की साफ सफाई करनी नहीं पड़ेगी।"

रूठ कर स्नेहा ने कहा—"क्या मैं घर रोज साफ नहीं रखती?"

शैल ने उसे चिढ़ाते हुए कहा तो—"फिर ये छुट्टी लेकर स्पेशल वर्क क्यों? और फिर तुम्हारे स्कूल जैसा मेरा ऑफिस मत समझो कि जब चाहे छुट्टी ले कर घर में बैठे।" स्नेहा को शैल की बात पर गुस्सा तो आया मगर परिस्थिती को ध्यान में रखकर शान्त रहना ही उसने उचित समझा। उसने अपनी बात शैल को अपनी ढंग से समझानी चाही। "देखो शैल। हम घर में हमेशा साफ सुथरे स्वच्छ रहते हैं मगर बाहर

जाते समय अच्छी पोषाख पहनकर बन संवर कर क्यों जाते हैं ? इसीलिये ना की सोसायटी में हमारी छाप जमी रहें। लोग हमें देखकर प्रसन्न हो। समाज में दिखावे के लिये यह सब करना जरूरी है।"

स्नेहा की इन बातों पर हँसकर शैल ने कहा—"तुम औरतों की सारी बुद्धि घुटनों में रहती है। अरे ! जिस पति के लिए तुम नारियाँ व्रत वैकल्य पूजा पाठ करती रहती हो उसके सामने तो चिथडों में, फटे मैले कपडों में रहती हो और बाहर दूसरों के सामने बन ठन कर सजधज कर जाती हो। आप लोगों की सायकॉलाजी ही बड़ी अजीब है।" यह आघात स्नेहा न सह सकी। उसने अपना आखरी अस्त्र निकाला और कहा कि "अगर आज उसे अपनी पत्नी की इच्छा के विपरीत ऑफिस जाने की जिद ही है तो आज उसे घर में खाना नहीं मिलेगा ऑफिस भूखे ही जाना होगा।" स्नेहा को लगा या कि कम से कम यह अस्त्र काम कर जायेगा और शैल घर में रह कर उसकी मदद करने के लिए तैयार होगा।

लेकिन यह अस्त्र भी व्यर्थ गया। शैल ने ऑफिस में ही लंच लेने की घोषणा की। "मैं शाम जब ऑफिस से लौटकर घर वापिस आऊंगा तब तुम्हारी घर के कामों में जरूर सहायता करूँगा।" शैल ने हामी भरनी चाही—

"पत्नी ने कुछ कहा और पति ने वह सुन लिया ऐसा हुआ तो वह पति ही क्या ?" इस व्यंग भरे शब्दों को जोर से कहकर वह तस्वीरें कपड़े से जोर जोर साफ़ करने लगी।

दोनों पति पत्नी के सुख संवाद में शैल के मित्र सौरभ और उसकी पत्नी आने से खण्ड पड़ गया। सौरभ के हाथ में

एक प्रेझेन्टेशन पैक था। स्नेहा ने सौरभ पति पत्नी का स्वागत किया। सबेरे सबेरे प्रेझेन्टेशन लेकर आने का कारण पूछा। जब सौरभ ने स्नेहा से बताया कि उसने हाथ में लाया हुआ प्रेझेन्टेशन पैकेट न प्रेझेन्टेशन है न गिफ्ट बल्कि शैल ने कल बुवा के स्वागत के लिए खरीदा हुआ टी सेट है तो स्नेहा एकदम प्रसन्न हुई। उसने बड़ी आधीरता और उत्साह के साथ वह पैकेट खोला। टी सेट का रंग देख स्नेहा का आनंद चूर-चूर हो गया। स्नेहा की मुद्रा देख सौरभ ने टी सेट की चॉईस उसकी नहीं खुद शैल की है बताते ही स्नेहा बोली "देवर जी ! आपने इन्हे क्यों टी सेट पसंद करने दिया इन्हें तो सौन्दर्य दृष्टी है ही नहीं" इस बात पर शैल एकदम खामोश था। "अब क्यों चुप हो ?" स्नेहा ने शैल को छेड़ा शैल ने शान्तता से "स्नेहा का कहना सच है" कह कर चुप्पी रखी। आगे स्नेहा कुछ बोले इसके पहले ही शैल ने सबके सामने कहा "मुझे सौंदर्य दृष्टि नहीं है यह मुझे एकदम कबूल है। अगर मुझे सौंदर्य दृष्टि होती तो मैं स्नेहा से शादी ही क्यों करता ?" स्नेहा तो चिढ़ गयी मगर सौरभ और उसकी पत्नी हँस पड़े। "वैसे मैंने यह बात मजाक में कही है" कहकर उसने स्नेहा को समझाया। पति पत्नी को झगड़ने के लिए छोड़ सौरभ और उसकी पत्नी उठ खड़े हुए। "अच्छा भाभी कल बुवाजी के दर्शन करने शाम में जरूर आयेंगे कहकर सौरभ अपनी पत्नी के साथ चल दिया।" साढ़े नऊ बज गये हैं मेरा ऑफिस जाने का टाईम हो गया है। तुम्हारे हाथों का खाना खाकर तंग हो गया हूँ। आज दोपहर में किसी अलिशान होटल में लंच ले लूंगा। तुम अपना काम करते रहना शाम

को तुम्हें मदद करने के लिए बन्दा हाजिर होगा" ऐसा चिढ़ाकर शैल भी चल दिया ।

शाम छः बजे दिन भर का काम करके स्नेहा थक गई थी । घर में अकेली थी तो हाथ में एक मैगझिन लेकर सोफे पर लेटी-लेटी पढ़ने लगी । बेल बजने पर उसने दरवाजा खोला । सामने शमा खड़ी थी । सहेली को देख स्नेहा खुश हो गयी । अन्दर आते ही शमा ने पूछा "क्या स्नेहा ! घर इतना शान्त क्या बुवाजी और जीजाजी शहर दर्शन करने गये है ? तुम नहीं गयीं बुवा आज आनेवाली थी मैं उन्हें मिलने आयी हूँ" "इतने सारे प्रश्नों का मेरे पास एक ही उत्तर है । बुवा नहीं आयी टेलीग्राम आया है अब एक हफ्ते के बाद वह आनेवाली मेरी साफ सफाई की मेहनत बेकार गयी ।" निराशा से स्नेहा ने उत्तर दिया । "तेरे जीजाजी बस अब आते ही होंगे वह आते ही चाय बनाऊँगी आगे स्नेहा ने कहा ।

"अच्छा तो बुवाजी नहीं आयी इसलिए तू और जीजाजी ने मैटिनी का प्रोग्राम बनाया और बुवा की खातिर ली हुई छुट्टी थिएटर में गुजारी और अब बनती है ।" कहकर शमा ने स्नेहा को कौन सा पिक्चर दोनों ने देखा उसका नाम बताने को कहा । स्नेहा आश्चर्य में पड़ गई ।

"तेरी कसम शमा । मैं तो दिनभर घर में ही हूँ और बुवाजी नहीं आयी इसलिए तेरे जीजाजी ने छुट्टी कैन्सल की और ऑफिस को चल दिये । तू तो जानती है कि तेरे जीजाजी को घर से ऑफिस ज्यादा प्यारा है" स्नेहा ने नाराजी से कहा ।

शमा ने कहा मेरी सहेली ने जीजाजी को आज निली

साड़ी पहने हुए किसी लड़की साथ सिनेमा थिएटर में देखा था। उसने जब मुझे ये बात कही तो मैं समझी बुआजी नहीं आयी होंगी और आप दोनों ने यह छुट्टी मनोरंजन में बिताई होंगी।

"मेरे ऐसे भाग्य कहा ? तुम्हारे जीजाजी के साथ पिक्चर देखना मुझे पसंद नहीं। पिक्चर में बातें करने से उन्हें डिसटर्ब होता है और चुपचाप गूंगे की भांति बैठकर पिक्चर देखना मुझे पसंद नहीं" स्नेहा की बातें सुनकर शमा आश्चर्य में पड़ गई। स्नेहा के पति सिनेमा घर में किसके साथ होंगे इसपर वह विचार कर रही थी।

"शैलजी आज ऑफिस में बहुत काम है का बहाना कर छुट्टी कैन्सल कर घर से चल दिये और तू कहती है कि तेरी सहेली ने उन्हें किसी लड़की साथ थिएटर में देखा है। शमा। मुझे डर है कि कहीं मेरे पति मुझे धोखे में तो नहीं रख रहे ?" स्नेहा की इस शकी भावना का शमा के पास कोई जवाब नहीं था। उसने बातचित का विषय बदल दिया। कुछ इधर-उधर की बातें करने का प्रयास किया। स्नेहा की सूरत देखकर उसने कहा—"स्नेहा हो सकता है मेरी सहेली को धोखा हुआ हो। उसने किसी और को देखा हो और शैलजी समझ बैठी। "मेरे पती सौरभ जी जीजाजी यानी तेरे पती के बारे में हमेशा मुझे कुछ न कुछ सुनाते रहते हैं। कहते हैं शैल बहुत ही शांत स्वभाव का और सज्जन इन्सान है। कभी किसी लड़की की ओर आँख उठाकर भी देखता नहीं। ऑफिस में हमेशा गर्दन नीचे रखकर काम करता है। उसके ऑफिस में इतनी ढेर सारी लड़कियाँ है मगर उनके

प्रयत्न करने पर वह किसी लड़की से बात तक नहीं करता। बस 'हम भले हमारा काम भला' का उसका हिसाब है। सुना है ऑफिस में सब उसे बुद्धु कहते हैं। इतना सौंदर्य आजू-बाजू रहने के बावजूद नीचे गर्दन झुकाकर काम करने-वाला व्यक्ति बुद्धु नहीं तो और क्या हो सकता है। मगर स्नेहा ! शैलजी को सब बुद्धु कहते हैं इसका तुझे गुस्सा तो नहीं आया ना ?" शमा की यह बातें सुनकर स्नेहा के मुख पर प्रसन्नता आ गई। वह चमकती आंखे देखकर शमा आश्चर्य में पड़ गई।

"शमा ! मेरे पति को सब बुद्धु कहते हैं इस बात का बिल्कुल गुस्सा नहीं आ रहा। उल्टे खुशी हो रही है कि वे ऐसे हैं। मेरे दिमाग पर अब तक जो टेन्शन था वह दूर हो गया है। चलो इसी बात पर तुम्हें स्वीट खिलाती हूँ कहकर स्नेहा सोफे पर से उठ खड़ी हुई।

स्वीट का नाम लेते ही उसे याद आया। सुबह उसने मिठाई का ऑर्डर दे रखा था। बुवाजी के न आने की नाराजी में वह मिठाई लाना भूल ही गयी थी। पैसे तो पहले ही दे रखे थे। "चल हम दोनों जाकर मिठाई ले आते हैं कहते हुए उसने शमा को उठाया। दोनों जल्दी-जल्दी घर के बाहर निकल हीं रही थी कि सामने सौरभ और शैल दोनों आते हुए दिखाई दिये। अपने पूर्व अपनी पत्नी को स्नेहा के घर देख सौरभ आश्चर्य में पड़ गया। दोनों अन्दर आते ही शमा ने शैल को छेड़ा "क्यों जीजाजी ! कैसा था पिक्चर ?" इस अचानक प्रश्न से शैल हड़बड़ा गया। कहने लगा "कैसा पिक्चर ?" मैं तो दिन भर ऑफिस में था। बहुत काम था

आज ऑफ़िस से सीधे घर ही आ रहा हूँ ?" उसकी धांधली देख कर शमा को मजा आ रहा था। उसने फिर छेड़ा "क्यों जीजाजी कैसा था पिक्चर ? मैंने आज दोपहर आपके ऑफिस को टेलिफोन किया तो पता चला आप नहीं है। ऑपरेटर ने कहा कि आप छुट्टी पर हैं। मैंने सोचा चलो अच्छा ही हुआ आप घर पर ही मिलेंगे साथ में बुवाजी के दर्शन भी होंगे। रास्ते में एक सहेली मिली। उसने कहा कि उसने आपको किसी नीली साड़ीवाली लड़की के साथ थिएटर में देखा है। मैं समझी स्नेहा और आपने बुवा के खातिर ली हुई छुट्टी मनोरंजन में गुजारी होगी।" इन बातों से शैल गड़बड़ा गया। सौरभ ने तुरन्त जान लिया कि दाल में कुछ काला है। वह फौरन अपने मित्र की सहायता के लिए आगे आया।

"शमा ! तुझे कुछ गलत फहमी हुई होगी। मैं खुद दिन भर शैल के साथ ऑफिस में था हम दोनों तो सीधे ऑफिस से आ रहे हैं। हमारे बॉस का नाम भी शैल है हो सकता है बॉस के बारे में कोई पूछ रहा हो समझ कर ऑपरेटर ने शैलजी ऑफिस में ना आने की बात कह दी हो। हमारे बॉस शैलजी दो दिन से ऑफिस में नहीं आये हैं। अब स्नेहा और शमा दोनों को इस बात पर यकीन हो गया। शमा के सहेली ने गलती से किसी दूसरे आदमी को देख वह उसे शैल समझ बैठी थी।

"आखिर बात क्या है ?" इस सौरभ के सवाल पर दोनों सहेलिया हड़बड़ाकर बोली—"कुछ तो नहीं हमने तो यूंही पूछा" कहकर दोनों चुप बैठ गयी। "हम बाजार से अभी स्वीट्स् ले आती हैं" कहकर स्नेहा शमा के साथ घर के बाहर चल पड़ी।

दोनों सहेलियां बाहर जाते ही सौरभ ने शैल को छेड़ा ! "शैल साहब ! मामला क्या है ? अरे अपने दोस्त से भी सिक्रेट छिपाने से क्या लाभ ?" इस पर शैल ने कहा "यार ! मामला बिमला या सिक्रेट कुछ भी नहीं है। तुझे तो मालूम है मैं ऑफिस में सारा दिन काम कम और बातें ज्यादा करके गुजरता हूँ। अपने ऑफिस की वह स्टोनो है ना ? वह बेला— बहुत दिनों से पिक्चर दिखाओ, पिक्चर दिखाओ बोलकर पीछे पड़ गई थी। आज कैसे भी बुवाजी के खातिर छुट्टी ले ही रखी थी उसका फायदा उठाया और ...... "बला के साथ पिक्चर देखने चल दिया" सौरभ ने शैल का वाक्य काटकर उसे पूरा किया और बोला—"अबे, गधे ! यह बात कम से कम मुझे पहले तो बता दी होती। तुझे बचाने के लिए मुझे झूट बोलना पड़ा। "वास्तव में तू आज ऑफिस में नहीं है यह बात मुझे अच्छी तरह मालूम थी मगर शमा की बातें और तेरा घबराना देखकर कुछ गड़बड़ है यह मैंने पहचान लिया" सौरभ को धन्यवाद देते हुए शैल ने कहा तू मेरा सच्चा मित्र है आज तुने मुझे बचाया "ए फ्रेण्ड इन नीड इज ए फ्रेण्ड इनडीड" तुझे मैं फिर धन्यवाद देता हूँ। "इस पर सौरभ ने कहा सिर्फ धन्यवाद से काम नहीं चलेगा। फाईव्ह स्टार नहीं तो कम से कम थ्री स्टार होटल में पार्टी देनी होगी नहीं तो भंडा फोड़ दूंगा।"

शैल ने सौरभ को बड़ी सी पार्टी जल्द ही देने का वचन दिया।

इतने में स्नेहा और शमा आने से दोनों मित्रों की बातचीत एकदम बन्द हो गई।

शमा ने पूछा "क्यों मित्रद्वय हमारे जल्दी आने से आपकी बातचीत में खंड़ तो नहीं पड़ा ?" इस पर सौरभ बोला बिल्कुल नहीं । हम तो ऑफिस की ही बातें कर रहे थे । जल्दी ही शैल का इन्क्रीमेण्ट आनेवाला है इस उपलक्ष में पार्टी मांगी तो इस छोटी बात के लिए उसने फाईव्ह स्टार होटल में पार्टी देने का वचन दिया है सौ रुपये के इन्क्रीमेण्ट की खुशी में पाँच सौ रुपये की पार्टी देने राजी हो गया यह बुद्धु" सौरभ के शैल को बुद्धु कहने से स्नेहा को बिल्कुल गुस्सा नहीं आया । उल्टे दोनों सहेलियां एक दूसरी की तरफ देखकर मुस्कुरा रही थीं ।

शैल और सौरभ बातें कर रहे थे इतने में मिठाई की प्लेटें हाथ में लेकर दोनों सहेलियां आ गई । आश्चर्य से शैल ने पूछा "बुवाजी के लिए खरीदी मिठाईयां अभी से क्यों बाट रही हो"

रहने दीजिए बुवाजी हफ्ते भर के बाद आनेवाली है उनके लिए फिर से मिठाई लायेंगे । कहकर स्नेहा ने मिठाई की डिश सौरभ और शैल के सामने रखो । टेप रिकार्डर चालू किया और शैल की पसन्द का सितार का कैसेट बजाना शुरू हुआ । शैल को आश्चर्य हो रहा था । हमेशा उसके संगीत प्रेम को गालियां देने वाली स्नेहा आज उसको खुश करने के लिए सितार कैसेट लगाकर हँस भी रही थी ।

बुवा के न आने की नाराजी, बुवा के लिये ली हुई छुट्टी कैन्सल कर उसका ऑफिस को जाना और शमा के मैटिनी पिक्चर की छेड़ी हुई बात से शैल को लगा था स्नेहा उसपर बहुत नाराज हो गई होगी । मगर परिणाम कुछ उल्टा ही दिखने पर उसे बार-बार आश्चर्य लग रहा था ।

मिठाई की और एक प्लेट मित्रों के सामने रखते हुए स्नेहा शैल से बोली "ऐसे सोच क्या रहे हो ? इतना अच्छा संगीत चल रहा है। अब तो खुश हो ना ? मुझे आपके संगीत प्रेम पर बहुत गर्व सा महसूस होता है। अच्छे क्लासिकल संगीत की पहचान आजकल बहुत थोड़े लोगों को है।"

"तो तुम्हें मेरे संगीत प्रेम पर बिल्कुल गुस्सा नहीं ?" इस शैल की बात पर स्नेहा बोली "बिल्कुल नहीं अब कभी गुस्सा करूंगी भी नहीं शमा ने मुझे सब कुछ बता दिया है।" इस पर शैल जरा घबराया, उसने पूछा "क्या बता दिया तुम्हें शमा ने ?" इस पर स्नेहा ने कहा "आपकी आपके दोस्त सौरभ बड़ी तारीफ करते रहते हैं। आप बड़े.......... जाने भी दीजिए कह कर स्नेहा ने टेपरेकॉर्डर का आवाज जरा बढ़ा दिया। बातचीत बहुत देर चलती रही। अच्छा बहुत देर हो हो गई कल ऑफिस में मिलेंगे शैल से कह कर सौरभ उठ खड़ा हुआ। शमा भी उठ गई।" अच्छा भाभी ! बुवा आते ही फिर दर्शन के लिए हम दोनों हाजिर होंगे कह कर सौरभ और शमा ने शैल और स्नेहा से बिदा ली।

सौरभ और शमा के जाने के बाद शमा बहुत देर तक अपने आप कुछ सोचकर हँस रही थी। अपने बुद्धु शैल पर आज वह खुश थी। शैल के पूछने पर भी उसने कारण नहीं बताया उसको खुश देखकर शैल भी खुश था सौरभ ने शमा को और स्नेहा को दोनों को कैसे बुद्धु बनाया यह कल्पना से उसे भी हँसी आ रही थी।

मोहित

परिचय की औपचारिकता पूरी होने के पश्चात एम. डी. का पहिला क्लास प्रारंभ हो गया ! डा. सिन्हा ने अपने प्रास्ताविक भाषण में सब डाक्टर विद्यार्थीयों का स्वागत किया और कहा कि 'यद्यपि आप सभी हार्ट सर्जरी के स्पेशलायझेशन के लिए आये हो, यह विषय गंभीर और महत्वपूर्ण है— फिर भी इसे आपको कॉलेज की अकॅडेमिक ॲक्टिव्हिटिज् में हिस्सा लेते हुए विदाऊट टेन्शन पूरा करना है। अत: मैं चाहूँगा कि आप आज मुझे अपनी-अपनी हॉबीज के बारे में भी बता दें।' डा. प्रो. सिन्हा की बात का तालियों द्वारा स्वागत हुआ और हर एक डाक्टर विद्यार्थी ने अपने-अपने हॉबी या हॉबीज के बारे में बता दिया। एक ही ऐक्सेप्शन था—मोहित। डा. मोहित वर्मा-उसने बड़ी रुक्षता से कहा था। आय हॅव नो स्पेशल हॉबीज्। उसकी रुक्षता का सभी को आश्चर्य लगा। "अपने सब्जेक्ट का इन्ट्रोडक्टरी लेक्चर मैं आपको 4 बजे देऊँगा" कह कर लंच के लिये डा प्रो. सिन्हा ने सब को छोड़ दिया। सब लोग मेस की तरफ चल दिये।

प्रकृति के ऋतुचक्र के अनुसार मेडिकल कॉलेज का रुटिन भी उसी प्रकार चल रहा था जैसे हर साल चलता है। स्टुडंट डाक्टर नई उमंग से स्पेशालिस्ट एक्सपर्टस् जिम्मेदारी के बोझ की भावना से अपने-अपने कामों में मग्न थे। काले बादल आकाश में जमा होने लगे थे और नटखट हवा सभा स्थान

पर लाठी चार्ज कर पब्लीक को तितर-बितर करने वाले पुलिस के समान बादलों को अपने जोर से ढकेलकर अस्तव्यस्त कर जमने नहीं दे रही थी। आसमान में कुछ भी हो धरती पर तो छांव और ठंडी हवा के कारण जून की गर्मी से राहत मिली थी। ठंडी हवा के हल्के झोकों के समान अपने ही अपने में मुस्कुराता मोहित लॉन से सर्जिकल वार्ड की ओर जल्दी-जल्दी चला रहा था। अचानक उसे आभास हुआ कि कोई उसे बुला रहा है। उसने थोड़ा सा पलटकर देखा और फिर चलने लगा। फिर से किसी के बुलाने का आभास हुआ। "डॉ. मोहित मैं आपही को बुला रही हूँ" का मधुर स्वर सुनाई देने से उसने रुक कर पीछे देखा। डॉ. आभा जल्दी-जल्दी उसके पास आ रही थी। "डा. मोहित वर्मा। आपसे कुछ कहने के लिए मैं जनरल वार्ड से यहाँ तक आपके पीछे दौड़ती आ रही हूँ आपको दो तीन बार पुकार चुकी हूँ मगर आप सुने तो न" "आय एम. व्हेरी सौरी, मैं कुछ सोच रहा था किसी खयालों में था इसलिये आपकी आवाज सुनाई नहीं दी माफ कीजिएगा" कहकर मोहित ने डा. आभा से माफी माँगी।

"माफी तो मुझे मांगनी चाहिए।" कहकर डा. आभा ने अपने आने का कारण बताया। "डा. मोहित कल आप स्वीमिंग पुल पर न होते तो मैं आज यहाँ आपके सामने नहीं होती। कल स्वीमिंग पुल में मिस रैना का पैर मेरे नाक पर लगने से मेरे होश उड़ गये थे। ऐन समय पर आपने आकर मुझे स्वीमिंग पुल से बाहर न निकाला होता तो मेरी जान कब की चली गयी होती। आपने मुझे बचाया। मैं स्वीमिंग

पुल से कपड़े चेंज करने के लिए चली गयी वापस आयी तब तक आप स्वीमिंग पुल से जा चुके थे। मैं आपको थँक्स देना भूल गयी। इसी के कारण परेशान सी अभी आपके पीछे दौड़ती आयी हूँ। डा. मोहित ने हँसते हुए कहा—"कल की बात तो मैं कभी की भूल चुका था और स्वीमिंग पुल से बचाकर आपको बाहर निकालना मेरा कर्त्तव्य था। मुझे स्वीमिंग नहीं आती तो आपकी सहायता मैं चाहकर भी नहीं कर सकता था। आपको थँक्स न दे सकने के लिये परेशान होने की आवश्यकता नहीं है, मिस रैना का मजबूत पैर लगने के बावजूद आपकी नाक अभी एकदम नार्मल दिखाई दे रही है।" ऐसा हँसकर उसने कहने के बाद डा. आभा खिल-खिलाकर हँस दी। मगर अगले ही क्षण मुँह लटकाये नकली गुस्सा चेहरे पर लाकर उसने कहा—"छोड़िये मेरी नाक को और यह बताइए कि आपको इतनी अच्छी स्वीमिंग आती है यह बात सबसे आपने छुपाकर क्यों रखी और कल की स्वीमिंग काम्पिटिशन में आपने हिस्सा क्यों नही लिया ?" डा. आभा ने मोहित से यह प्रश्न पूछने पर वह हँस दिया। "स्वीमिंग तो मुझे आती है मगर काम्पिटिशन के स्तर की नहीं। इसिलिये मुझे स्वीमिंग आता है या नहीं यह मैंने किसी से नहीं बताया" ऐसा कहकर उसने आगे डा. आभा से कहा कि उसे अभी सार्जीकल वार्ड में जाकर इव्हिनिंग राउण्ड पूरा करना है। इसपर नाराजी से डा. आभा चल पड़ी। जाने से पहले फिर कभी फुरसत से मिलने का वचन उसने डा. मोहित से ले ही लिया। जल्दी-जल्दी चलती दूर होनेवाली डा. आभा की सुन्दर छवि को स्वप्नील नेत्रों से देख वह रहा था।

अरुणोदय हो चुका था और प्राची पर रवि राज भी उदित होने वाला था। डॉ. सिन्हा अपना मॉर्निंग वॉक पूरा कर सीधे उनके बंगले की लॉन की तरफ गये। चाय और ब्रेक फास्ट की तैयारी के साथ डॉ. आभा वहाँ बैठी थी। डॉ. सिन्हा को आते देख चाय की केटली पर से टिकोझी उठाते हुए उसने "गुड मॉर्निग पापा" कहा। "गुड मॉर्निग माय डॉल" कह कर सिन्हा साहब कुर्सी में बैठ गये। उनकी मुद्रा अत्यंत प्रसन्न दिखाई दे रही थी। आभा चाय बनानेवाली ही थी कि इतने में सिन्हा साहब बोले "आभा। वेट फार सम टाईम-मैंने किसी को चाय पर बुलाया है, बस अब वह आता ही होगा।"

"इतने सबेरे साढ़े छह बजे आपने किसे बुलाया है पापा ?" आभा के इस प्रश्न पर सिन्हा साहब बोले—"आने पर पता चल ही जायेगा।

मुँह लटकाये आभाने कहा "पापा ! आपको सारी बातें सस्पेन्स में रखने की बहुत बुरी आदत है।"

सिन्हा साहब सिर्फ मुस्कुराये पर मुँह से कुछ न बोले। इतने में "गुड मॉर्निग सर।" का परिचित स्वर सुनते ही आभा ने सामने देखा। वह दंग रह गई। थोड़े गुस्से से उसने कहा "आईए। गुड मार्निग।" उसकी बात पर हँसते हुए मोहित ने कहा "सर। आज सुबह-सुबह टेंपरेचर……… पर उसकी बात को बीच में से काटते हुए मुस्कुराकर सिन्हा साहब बोले। "अरे तुम्हे देखकर तो किसी का टेम्परेचर बढ़ना स्वाभाविक ही है। कल आप टेनिस कोर्ट पर आभा के प्रति स्पर्धि रहे। उसे हरा भी दिया। तुम्हें देखकर उसका टेम्परेचर

बढ़ना ही चाहिये। "आभा की तरफ देखते हुए सिन्हा साहब बोले—"अच्छा आभा। अब हमारे लिये फर्स्ट क्लास चाय तो बनाओ।" आभा ने चुपचाप तीनों के लिये चाय बनायी दोनों के हाथों में चाय की प्यालिया थमा दी। और खुद अपनी प्याली लेकर चुपचाप चाय पीने लगी। शांतता भंग करते हुए सिन्हा साहब ने कहा—"कल का गेम अच्छा था। क्यों आभा ?" आभा ने कहा "हाँ पापा।" और क्रोध भरा कटाक्ष मोहित की ओर डाला। मोहित आश्चर्य में पड़ गया।

इतने में डॉक्टर सिन्हा का नौकर आया और उसने सिन्हा साहब के लिए किसी का फोन आया है कहा, तो वहाँ मोहित और आभा को छोड़ "माफ कीजिए। मैं अभी आया" कह कर वे चल दिये।

नौकर ने आकर टेबल पर कुछ समाचार पत्र रख दिये। मोहित एक पेपर उठाकर पढ़ने लगा। आभा ने जोर से चमच्च डिश पर रखा। आवाज से चौंककर मोहित ने आभा की तरफ देखा। "शायद आपकी तबियत अच्छी नहीं है, मैं चलूँ ?" कहकर मोहित उठने लगा। आभा ने कहा—"आप पापा के गेस्ट हैं उन्होंने आपको बैठने को कहा है।" कुर्सी पर बैठते हुए मोहित ने आभा से प्रश्न किया—"क्या कल की हार के लिये आप मुझसे नाराज है ? हार जीत तो गेम में होती ही रहती हैं" इसपर आभा ने कहा—"खेल में गेम हारने का मुझे कोई दुःख नहीं हुआ लेकिन आश्चर्य इस बात का हुआ की उस घमंडी शुभा को आपने गेम में अपना पार्टनर कैसे चुना ?" इसपर मोहित ने उत्तर दिया मैंने कहाँ चुना ? वो तो मैं लायब्ररी में जाते समय आपका थोड़ा-सा गेम देखूँगा सोचकर मैं ग्राउण्ड

में आया था। शुभा का पार्टनर रंजन उसके पैर में मोच आने से खेल नहीं सकता था उसी ने मुझे शुभा के साथ खेलने की रिक्वेस्ट की।"

इस पर आभा ने जज के अंदाज में पूछा—"हमें नहीं मालूम कि आप लॉन टेनिस भी खेलते हैं, और फिर उस रंजन को कैसे मालूम ?" इस पर मोहित ने कहा पिछले साल एक टेनिस कॉम्पिटिशन में मैं विनर था और रंजन रनर।" मोहित हँसकर कह रहा था और इतने में सिन्हा साहब को आते देख वह खामोश बैठ गया। आते ही सिन्हा साहब ने पूछा—"क्या कह रही थी आभा ?" इस प्रश्न का उत्तर मोहित ने दिया "मुझे कल के गेम लिये बधाई दे रही थी।" "अच्छा-अच्छा।" हँसते हुए सिन्हा साहब ने कहा और फिर बोले—"भई हमारी तरफ से भी बधाई। और हाँ मोहित ! आज शाम के फंक्शन में आप गायेंगे।" इस पर मोहित ने कहा—"मुझे इतना अच्छा गाना नहीं आता।" इतनी देर खामोश बैठी आभा ने कहा—"डॉ. मोहित वर्मा। आप छुपे-रुस्तुम हैं। आपको गाना ही पड़ेगा।" मोहित ने पूछा—"ये ऑर्डर है या रिक्वेस्ट ?" तो डॉ. सिन्हा साहब बोले भई। मेरी तरफ से तो रिक्वेस्ट है मगर आभा के तरफ से ऑर्डर है। मोहित ने फिर पूछा—"मैं गा सकता हूँ या नहीं आपको कैसे मालूम।" "आप गायेंगे और इसके आगे कुछ न बोलेंगे" कहकर आभा ने उसे चुप कराया। फंक्शन में गाने का वचन देकर मोहित ने उन दोनों से विदा ली।

फंक्शन के दिन एक बहुत ही प्यारा गीत गाकर मोहित ने सब को आश्चर्य में डाल दिया। एम. डी. का सेमिस्टर्स शुरू

होने से पूर्व मुझे किसी बात की हॉबी नहीं है कहनेवाला मोहित स्वीमिंग, लॉन टेनिस, म्युझिक सभी क्षेत्रों में दिलचस्पी रखनेवाला दिखाई दिया और एक अच्छा स्पोर्टसमन और गायक होने का परिचय भी उसने दिया। साथ ही अपनी पढ़ाई में भी वह सब से आगे था। दो तीन मेजर हार्ट सर्जरी ऑपरेशन्स में उसने डॉ. सिन्हा का अच्छा साथ दिया था। आगे चल कर वह एक ख्याति मान सर्जन होनेवाला है यह बात सारे स्टुडंट्स् और प्रोफेसर्स जान चुके थे।

मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई जोरों पे थी। दरम्यान डॉ. आभा से मोहित की बार-बार मुलाकातें होती रही मन ही मन मोहित का मन उसकी तरफ आकर्षित हो चला था। मगर एक डॉक्टर और एम. डी. का स्टुडंट होने के कारण एक प्रेमी की तरह आभा से कुछ पूछना, अपने बारे में उसके विचार क्या है जान लेना मोहित के लिए संभव नहीं हो सका वैसे एक दो बार उसने आगे के करिअर के बारे में आभा के के विचार जानने चाहे। आभा ने जब उल्टे उसको अपने बारे में पूछा तो उसने कह दिया था कि एक अच्छा सर्जन बनने की उसकी इच्छा है। हो सके तो यही हॉस्पिटल में एम. डी. करने के पश्चात सर्जन की हैसियत से काम कर अपने वैद्यकीय ज्ञान में वृद्धि और रोगियों की सेवा करने का उसका मानस है। अच्छी जीवन साथी डॉक्टर पत्नी मिली तो जीवन में और ज्यादा आकांक्षाएँ उसकी नहीं थी। उसके विचारों की डॉ. आभा ने सराहना की थी।

डॉ. मोहित वर्मा डॉ. आभा को अपनी जीवन साथी बनाना चाहता है यह बात सारे मेडिकल के विद्यार्थी जानते थे।

डॉ. आभा के विचार जानने की कोशिश जब मोहित ने की तो उसे निराशा हुई । डॉ. आभा का विचार एफ. आर. सी. एस. के लिए लन्दन जाने का था और हो सके आगे लन्दन में ही स्थायिक होने का भी विचार था । डॉ. सिन्हा एक जाने माने सर्जन थे उनकी ख्याति विदेशों में भी थी। उनकी सहायता से एफ. आर. सी. एस. के लिए लन्दन जाना डॉ. आभा के लिए एक संभव की बात थी और यह जिद्दी लड़की जरूर लन्दन जाकर ही बसेगी इसका मोहित को पूरा विश्वास हो गया था । अपने विचारों से एकदम विपरीत विचार धारणा वाली आभा प्यार की परिभाषा समझ ही नहीं पायेगी इस बात का मोहित को यकीन हो गया था । आभा और वह सिर्फ अच्छे मित्र रह सकते हैं प्रेमी नहीं यह बात मोहित जान चुका था। उसने डॉ. आभा को दिल ही दिल में वहुत चाहा मगर उसकी विचार धारणा देख दिल की बातों को कभी आभा के सामने प्रकट नहीं किया ।

देखते ही देखते सारे सेमिस्टर्स पूरे हो गये। सारे प्रॅक्टिकलस उसने यशस्वी बन कर पूरे किये एक्झामिनेशन के बाद रिझल्ट अब आने वाले ही थे । आज ऑपरेशन थिएटर के बाहर मोहित आ ही रहा था कि, वार्ड बॉय ने आकर उसे एक चिठ्ठी दी । इनमें वहाँ एक्झामिनर डाक्टर्स भी आये और उन्होंने मोहित को बधाई दी । वह एम. डी. बन गया था । और सर्व प्रथम आया था । खुशी-खुशी वह अपनी रूम की ओर जा ही रहा था कि इतने में वार्ड बॉय ने फिर आकर उसको चिठ्ठी की याद दिलाई "साहब मैंने आपकी चिठ्ठी पढ़ने

के लिए दी थी—आपने पढ़ी नहीं आभा मेम साहब आपका इन्तजार कर रही है। और आपको खाने पर बुलाया है।" वार्ड बॉय को बिदा करके मोहित सीधे डॉ. सिन्हा के बंगले पर पहुँचा। डॉ. आभा उसका इन्तजार कर रही थी।

मोहित के आते ही आभा ने उसका अभिनन्दन किया वह एम. डी. बन गया था इस बात की खुशी आभा के मुखपर साफ दिखाई दे रही थी। "पापा आपका इन्तजार कर रहे हैं" कहते ही आभा के साथ वह बंगले के अन्दर गया। डायनिंग टेबल के पास सिन्हा साहब बैठे थे। मोहित आते ही मोहित का अभिनंदन कर उन्होंने उसे अपने पास बिठाया, एक पत्र उनके हाथ में था उसे टेबल पर रख दिया। मोहित को फिर से बधाई दी। मोहित ने नम्रता से उसके इस यश का श्रेय डॉ. सिन्हा को देते हुए कहा कि "सर यह सब आपकी वजह से हो सका अच्छा मेडिकल कालेज, अच्छे प्रोफेसर और अच्छे साथी मिलने से ही वह कामियाब हो सका। डॉ. सिन्हा ने खुशी से उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा कि उन्हें मोहित पर गर्व है और रिपोर्टों के जाँच के बाद सर्व संपत्ति से इस वर्ष का गोल्डमेडल उसे ही देने का फैसला किया गया है। मोहित से और आगे कुछ कहा नहीं गया। वह चुपचाप डॉ. सिन्हा की तरफ से उसकी प्रशंसा सुन रहा था। डॉ. सिन्हा साहब ने आभा को खाना लगाने को कहा।

खाने के पश्चात रिलॅक्स होकर बातें करते हुए डॉ. सिन्हा ने अचानक मोहित से पूछा "मोहित तुम कलकत्ता के डॉ. वर्मा को जानते हो ना ? इस पर मोहित ने चमक कर सिन्हा

साहब की तरफ देखा और कहा "हाँ मैं उन्हें जानता हूँ। उनके बारे में सुना है। इस पर अपनी आदत के अनुसार जोर से ठहाका मारकर हँसते हुए डॉक्टर सिन्हा ने कहा—"माय बॉय डॉ. वर्मा हार्ट स्पेशालिस्ट एफ. आर. सी. एस. लन्दन मेरा क्लास फेलो है उसका आज ही मुझे पत्र आया है कि उसका छुपा रुस्तुम बेटा मेरा स्टुडंट है। इस पर मोहित ने कहा "लेकिन.........उसकी बात को बीच में ही काटकर डॉ. सिन्हा बोले "लेकिन तेरे डैडी ने अपना प्रॉमिस तोड़ा नहीं। उसने भी तेरा कोर्स खत्म होने के पश्चात् ही मुझे पत्र लिखा। उसे जब एक्झामिनर बनकर मैंने बुलाना चाहा तब उसने व्यस्थता का कारण दिखाकर यहाँ आना टाल दिया था। उसका उत्तर भी मुझे मिला। अभी-अभी मेरी उसकी फोन पर बातचीत हुई। मैंने उसके पास एक प्रपोजल भेजा है उसका उत्तर तुम मुझे आज शाम तक दे देना।" मोहित सोचने लगा इतने में फोन की घंटी बजी। डॉ. सिन्हा ने कहा "मोहित। प्लीज अटेण्ड दी फोन"

आज्ञा धारक स्टुडंट के समान मोहित ने फोन उठाया और हॅलो कहते ही जो प्रति उत्तर मिला उससे वह आश्चर्य चकित हो गया। ओ ऽऽ थँक यू-यस सर-आय अॅग्री विथ यू डैडी फोन का संभाषण चलते समय मोहित का चेहरा चमक रहा था और चेहरे पर की खुशी छुपायी नहीं जा रही थी। "किसका फोन था मोहित ?" डॉ. सिन्हा ने पूछा "मेरे डॅडी का सर" मोहित ने जवाब दिया आपके कहने अनुसार वह कल यहाँ आ रहे हैं" आज मोहित को सरप्राईज मिलने की बारी थी इतने दिन

अपने छिपे हुए गुणों से सबको सरप्राईज करने वाला मोहित आज खुद आश्चर्य में पड़ गया था ।

डॉ. सिन्हा और आभा ने उसे आश्चर्य में डाला था । "आपके डॅडी मम्मी कल आ रहे हैं उनके स्वागत की तैयारी मुझे करनी हैं मैं जरा बाहर हो आता हूँ, तुम आभा से बात करो" कहकर हँसते हुए डॉ. सिन्हा बाहर चल दिये ।

अब सिर्फ आभा और मोहित घर में रह गये । मोहित और आभा को जीवन साथी के रूप में देखने की डॉ. सिन्हा और मोहित के डॅडी मम्मी की इच्छा अब पूर्ण हो गई थी सिर्फ धार्मिक सूत्रों से एक दूसरे को बान्धकर समाज के सामने लाना बाकी था ।

शर्माते आभा का हाथ पकड़कर मोहित ने पूछा—"यह सब हुआ कैसे ?" अब छिपाने के लिए कुछ रहा ही न था तो उसकी पार्श्वभूमि आभा ने बता दी ।

डॉ. मोहित वर्मा जब एम. डी. करने के लिए मेडिकल कॉलेज में आया तो कुछ ही दिनों में उसने अपने गुणों से डॉ. सिन्हा और उनकी बेटी आभा को प्रभावित कर दिया था । एम. डी. का अभ्यास क्रम पूरा होने तक मोहित को कुछ न बताने का डॉ. सिन्हा और आभा ने निश्चय किया था । मोहित का आभा के लिए आकर्षण तो सारे मेडिकल कालेज और डाक्टरों एवं प्रोफेसरों को मालूम ही था । अपने एम. डी. कोर्स पूरा करने के बाद, बितानेके भावी जीवन के और डॉ. जीवन साथी चुनकर रोगियों की सेवा करने के विचार जब मोहित ने आभा के सामने प्रदर्शित किये तो पहले वह फूली न समायी । मगर उसकी एम. डी. की उपाधी के लक्ष को देख

और उसकी पढ़ाई की लगन को देखकर आभा ने जानबूझकर अपने एफ. आर. सी. एस. करके लन्दन में स्थायिक होने की वात कही। जिससे प्रथम तो मोहित निराश हुआ मगर बाद में आभा का विचार दिल से निकाल कर उसने पढ़ाई में मन लगाया और गोल्ड मेडल ले सका। वास्तव में आभा का लन्दन को जाने का विचार विल्कुल नहीं था। वह खुद मोहित पर मोहित हो चुकी थी। सिन्हा साहव को भी दामाद पसन्द था। मगर उन्हीं के विचार से एम. डी. पूर्ण होने तक यह वात आगे न छिड़ने से और उन्हीं के इच्छानुसार आभा ने एफ. आर. सी. एस. लन्दन में करने की और वहाँ बसने की मनघडंत बातें मोहित को बताई थी। मोहित का कोर्स पूर्ण होने के समय ही मोहित उनके बचपन के साथी डॉ. वर्मा का पुत्र होने की खबर सिन्हा साहब को मिल गई। फिर क्या पूछना था उन्होंने तुरन्त पत्र लिखकर अपने मनकी वात डॉ. वर्मा को वताई और डॉ. वर्मा ने एकदम हाँ कह दी। मोहित को पूछने का सवाल ही नहीं था। उसका मन तो सबने पहले ही जाना था। खाने पर बुलाने के बाद डायनिंग टेबल के पास बैठकर डॉ. सिन्हा मोहित के पिता का आया हुआ पत्र ही हाथ में लेकर मोहित से बात कर रहे थे। मोहित के पिता को सिन्हा साहब ने फोन पर पहले ही मोहित के विषय पर बातचीत की थी और मोहित खाने पर आने के बाद फिर थोड़ी देर से फोन करने को कहा था। मोहित जब फोन पर अपने पिता जी से बात कर रहा था तो डॉ. सिन्हा हँस रहे थे क्योंकि पिता पुत्र में क्या संभाषण हो रहा है वह उन्हें पहले से मालूम था।

आभा की बातें सुनने के बाद आश्चर्य चकित हुए मोहित ने आभा से कहा "आभा ! आजकल तुम और तुम्हारे पिता और मेरे सारे साथी मुझे छुपा-रुस्तम कह रहे थे मगर वास्तव में तुम और तुम्हारे पिता यानी डॉ. आभा और डॉ. प्रो सिन्हा सही अर्थ में छुपे रुस्तुम निकले !" बिना कुछ कहे हँसती हुई आभा अपने भावी पति को देख रही थी ।

जलजा

जिले का स्थान बनने से गाँव का महत्व बढ़ गया था। और ऐसे में लॉ कॉलेज और इंजिनियरिंग कॉलेज खुल जाने से उसका नक्शा ही बदल गया था। बाहर गाँव के विद्यार्थी, प्रोफेसर्स लेक्चरर्स आदि नये-नये लोगों दिखाई देने लगे थे। साथ ही कॉलेज तक जाने के लिये सिटी बसेस और अन्य वाहनों की यातायात भी बढ़ गई थी। कॉलेज के अध्यापकों के लिए नयी कॉलेज कॉलनी बन चुकी थी और पास ही नया कान्व्हेन्ट स्कूल खुल चुका था। साथ ही साथ नया शॉपिंग सेन्टर, व्होजिटेबल मार्केट आया था। आम तौर पर सभी दृष्टि से शहर में बदलाव आकर रौनक बढ़ गई थी। नये बने शहर में नया चैतन्य आया था।

इसी चैतन्यमय गाँव में सीधे कॉलेज सर्व्हिस कमिशन की परीक्षा पास होकर सिलेक्ट हो जाने से गोल्ड मेडलिस्ट जलजा नये लॉ कॉलेज की असिस्टंट प्रिन्सिपल बनकर आ गयी थी। उम्र थी 28 साल ! पहले तो उसकी माँ ने उसे इस नये कालेज में नौकरी करने से रोकने की चेष्टा की थी। उसके पुराने विचारों के अनुसार कॉलेज में पढ़ना पढ़ाना अच्छी बात नहीं थी। कॉलेज का वातावरण लड़कियों के लिए उसके अनुसार ठीक नहीं था। जलजा ने अपनी माँ का कहा सुना न मानकर कॉलेज में पढ़ाई के लिए न जाने के खिलाफ आवाज उठाई थी और उस पीढ़ी में मॉर्डन समझे जाने वाले पिता की

मदद से कॉलेज में अॅडमिशन लेकर कॉलेज की पढ़ाई करके अपनी एल. एल. बी. को उपाधी मिलने तक प्रगति तो की थी, मगर अब उसका कॉलेज में पढ़ाने के लिए फिर जाना भोली और पुराने विचार की माँ को मंजूर नहीं था। फिर भी किसी तरह कॉलेज सर्व्हिस कमिशन की वह कठिन परीक्षा पास करके जलजा ने कॉलेज के व्हाईस प्रिन्सिपल की हैसियत से नौकरी प्राप्त करने तक सफलता प्राप्त कर ली थी। माँ को अपनी बेटी की यह प्रगति देख गर्व का अनुभव तो जरूर हुआ था मगर प्रत्यक्ष अपॉईटमेन्ट आर्डर मिलने के बाद बेटी की नयी नौकरी जब शुरूआत होने जा रही थी तो माँ को वह इतना अच्छा नहीं लग रहा था। माँ के भोले-भाले विचारों के अनुसार इतनी उपाधियाँ और नाम प्राप्त करने के बाद जलजा को कोई अच्छा पढ़ा लिखा वर ढूंढ के शादी कर लेनी चाहिये थी। उसके विचार से यही जीवन का सही मार्ग था। मगर पढ़ी लिखी उपाधी प्राप्त बेटी के विचार कुछ अलग थे। उसकी महत्वाकांक्षा अलग ही थी। जलजा को नये पद मिलने पर पिताजी ने उसे आशीर्वाद दिये। कुछ दिनों के लिए जलजा की छोटी वहन और माँ को जलजा की सहायता के लिए नये गाँव में भेजा खुद घर में अकेले रहने की जोखीम उठाई।

जलजा नये गाँव में (शहर में) आ गयी। कॉलेज के लेक्चररों और कर्मचारियों के लिए नये क्वाटर्स की व्यवस्था थी। जलजा अपनी माँ और बहन के साथ नये शहर और नये वातावरण में आकर अपने कॉलेज के तरफ से दिये गये नये घर में आ कर प्रविष्ट हुई। प्रिन्सिपल साहब को नयी कार

तो थी ही ...असिस्टंट ...व्हाईस प्रिन्सिपाल अर्थात जलजा के लिए नये कार का प्रबंध जल्दी ही होनेवाला था। बेटी का यह ठाठ बाट देखकर जलजा की माँ एकदम खुश हो गई। कॉलेज के वातावरण के बारे में उसके भोले भाले दिल में जो भय था वह भी अब काफी मात्रा में दूर हो गया था। कॉलेज का वातावरण भारत भर में कहीं भी वैसा ही था जैसी उसकी धारणा थी, यह बिचारी बुढ़िया को पता नहीं था। जलजा का नया कॉलेज—लॉ कॉलेज भी कुछ अलग नहीं था।

कॉलेज की आरंभिक परिक्षायें अर्थात एन्ट्रन्स एक्झामिनेशन्स अभी होनी बाकी थी। उसके बाद ही योग्य कॉलेज के (दृष्टि से) विद्यार्थियों का चयन होकर नये विद्यार्थियों के साथ नया कॉलेज शुरू होने वाला था।

कॉलेज की इस आरम्भिक परिक्षाओं में भाग लेने वाले इच्छुक विद्यार्थियों की संख्या भी बहुत बड़ी थी। उसमें छोटे गाँवों से और आजु-बाजु के देहातों से आनेवाले उम्मीदवारों का भी समावेश भी था।

अभी शहर बने इस गाँव के तीन विद्यार्थी एल. एल. बी. की उपाधि के लिए अॅडमिशन के लिए इच्छुक थे। इन तीन विद्यार्थी रत्नों का नाम था जॉनी, वेंकी और पॅट। यह तीनों विद्यार्थी रत्न एल. एल बी. का एन्ट्रन्स लिखने निकले थे। तीनों एक ही मोटर बाईक पर सवार थे। जॉनी बाईक चला रहा था। वेंकी और पॅट उसके पीछे बैठकर मुँह से कुछ बोलते जा रहे थे और देश का नाम भी रौशन कर रहे थे। इन तीनों में जो जॉनी था उसका असली नाम था जनार्दन।

जनार्दन एक बहुत बड़े जमीनदार का बेटा था। वंश परापरंपरा से चली आ रही जमीनदारी की कृपा से जनार्दन के जमीनदार वाप के पास पैसा बहुत था। और जॉनी यानी जनार्दन अपने वाप की पुरी कमाई का अकेला वारिस था। पिता ने अगर अपने इस रंगीले बेटे जनार्दन अर्थात जॉनी के कारनामे सुने होते तो अपनी मृत्यु के वाद अपनी इस विशाल दौलत का मालिक जनार्दन को कभी नहीं बनाता। जनार्दन के भाग्य से ऐसा कुछ नहीं हुआ। और बाप की दौलत का मालिक वह खुद बन गया था।

जॉनी या जनार्दन का जिगरी दोस्त था वैंकय्या। उसका यह मार्डन नामाभिधान देने वाला उसका दोस्त था—पेंटय्या उर्फ पॅट। वेंकी अर्थात वैंकय्या के बाप का गाँव के अनाज की मंडी में बड़ा स्थान था। उसके पिता का बजार में बड़ी अडत का दुकान थी। अडत या दलाली के इस धंधे में वैंकय्या के पिता ने बहुत धन कमाया था। और वैंकय्या अर्थात वेंकी उस धन का वारिस बन गया था। दुनिया में सिवाय ऐश और आराम करने के सिवा उसके पास दूसरा काम ही नहीं था। कुछ तो भी करना है इस उद्देश्य से उसने कॉलेज की पढ़ाई शुरू की थी और 5-6 वर्षों से फेल होते-होते अब उसके भाग्य में बी. ए. की उपाधी आयी थी। उसके लिए भी उसे बहुत प्रयत्न करने पड़े थे और बहुत सारा पैसा खर्च करना पड़ा था। यह वैंकी जनार्दन के साथ एल. एल. बी. करने इस शहर के नये कॉलेज में आया था। जनार्दन के सिवा उसका कोई चहिता और जिगरी साथी उस नये शहर में कोई नहीं था। पैंटय्या अनाथ बालक था। वह जॉनी अर्थात जनार्दन के घर

ही बड़ा हुआ था। उसके माता-पिता उसके बचपन में ही स्वर्ग सिधार गये थे और उसका पालन-पोषण जनार्दन के पिता ने ही किया था। यह पैंटय्या गरीब और अनाथ रहने के बावजूद सर्वगुण संपन्न था। समवयस्क धनी मित्र के साथ बाल्यावस्था से जीवन बिताने के कारण उसने गरीबी देखी नहीं थी। और कुछ कष्ट न झेलने के कारण उसका जीवन-काल आवारा गर्दी में ही गुजरा था। पैंटय्या ने ही जनार्दन का नाम जॉनी, वैंकय्या का नाम वेंकी और खुद का नाम पॅट रख लिया था। अपने दोनों लखपती मित्रों के कारण उसे किसी चीज की कमी नहीं थी। ऐसे ये तीनों वीर आज लॉ कॉलेज की ओर एक ही मोटर-सैकल पर सवार होकर निकले थे।

कॉलेज में आज प्रारंभिक परीक्षा थी और जलजा को आज ही कालेज में जाना था। पहला-पहला अनुभव था इसलिए मन बेचैन था और साथ ही सुबह से हो रही मूसला धार बारिश ने नये जीवन की नयी शुरूआत में बाधा सी पैदा कर दी थी। किसी तरह से बारिश तो कम हो गई। कॉलेज की तरफ से मिली कार आज ही खराब हो गई थी। बहुत देर तक ड्रायव्हर की राह देखकर अपनी छोटी बहन को साथ लेकर कॉलेज में पैदल ही जाने का जलजा ने निर्णय किया।

अपनी छोटी बहन को साथ लेकर और माँ से कहकर जलजा नये घर से कॉलेज की ओर निकल पड़ी सुबह के 9-30 बज चुके थे। कॉलेज नजदीक ही था। अब बारिश भी रुक गई थी। मगर उस नये शहर के सड़कों की हालत बहुत ही खराब थी। सारा सीमेंट रोड़ कीचड़ से भरा हुआ था।

आजू-बाजू के जमा हुए पानी की वजह से पैदल चलने वालों को अपने आपको वाहनों से और वाहनों के साथ उड़नेवाले कीचड़ और पानी से अपने आप को बचाना बहुत मुश्किल था।

कॉलेज के अहाते में जलजा अपनी बहन के साथ आयी। अपने नाजूक बदन, नीली पतली साड़ी और वेशभूषा के कारण 28 व्हाईस प्रिन्सिपल जलजा एकदम कॉलेज कुमारी लग रही थी। साथ में उसकी छोटी बहन भी थी। ये दोनों कालेज कुमारियों को देखकर बहुत सारे कॉलेज के नवयुवक आकृष्ट हो गये थे और आनन्द के साथ दूर से आती हुई इन कॉलेज युवतियों का अवलोकन कर रहे थे। जलजा की छोटी बहन वैदेही को भी उसी कॉलेज में प्रवेश देने का जलजा का मानस था और उसी उद्देश्य से वह बहन को अपने साथ लाई थी।

कॉलेज के प्रवेश द्वार में जलजा अपनी बहन के साथ प्रवेश कर ही रही थी इतने में अपनी मोटर बाईक पर सवार वैंकी, जॉनी और पेंट तीनों मित्र तेज गति से कॉलेज के प्रवेश द्वार के पास आये। सामने दो सु-स्वरूप युवतियों को जाते देखकर जवानी का जोश बढ़ा और मोटर बाईक की स्पीड भी बढ़ गई। प्रवेश द्वार से कॉलेज की इमारत तक का कॉलेज का रास्ता बारिश के पानी से भरा हुआ था। तीनों युवकों ने अपने मोटर बाईक की स्पीड बढ़ाते हुए लड़कियों के पास गाने आनन्द तो लिया साथ में उन दो सुन्दरियों की साड़ियों को बारिश के पानी से भिगाने का आनन्द भी लिया। इस आनन्द का श्रेय उस तेज गती मोटर बाईफ को था। जिसकी गती सुंदरियों को देखते ही बढ़ गई थी। जलजा और उसकी बहन की साड़ियाँ उस कीचड़ भरे पानी से भीग कर मैली हो गई।

उन्होंने गुस्से में उस आवारा अपराधी त्रिकूट की तरफ देखा। अपनी मैली दंत पंक्तियाँ बताकर जीत के आनन्द में बेहोश तीनों युवक जॉनी, वेंकी और पॅट आगे चल दिये। दरबान ने इन तीनों युवकों की शरारत देख ली थी। उन तीनों हिरोओं को दरबान ने रोक लिया। "लड़कियों की साड़ियाँ भीग गयी इसका दोष हमें नहीं बारीश के पानी को देना चाहिये" ऐसा कह कर तीनों युवक छूट गये। अपनी दौलत का नशा जॉनी और वेंकी की आँखों में था ही। दरबान ज्यादा कुछ नहीं कर सका।

एल. एल. बी. को ॲडमिशन मिलना उस नये-नये खुले कॉलेज में उस देहाती शहर में कठिन न था। विद्यार्थी कम थे। कॉपी करके सारे पास हो सकते थे। वेंकी जॉनी और पॅट ने कॉपी करके पेपर लिखने का सत्कार्य तो किया। लिखित परिक्षा में पास होना निश्चित हो गया था। दो तीन दिनों बाद मौखिक परिक्षा के बाद एल. एल. बी. में ॲडमिशन और सिर्फ तीन साल ऐसे-वैसे गुजारकर तीन बड़े कॉलेज वीर वकील बनने जा रहे थे। आज के दो सुन्दरीयों को भिगोने और कॉलेज में कॉपी मारने के आनन्द की याद दिमाग में रखकर ही जॉनी वेंकी और पॅट घर लौटे। आज के सुनहरे दिन के अनुभव के लिए उन्होंने अपनी मोटर बाईक को धन्यवाद दिये।

मौखिक परिक्षा का दिन आया। परिक्षक बहुत शांत स्वभाव के और दयालु रहने का परीक्षा देकर बाहर आनेवाले विद्यार्थियों ने हवाला दिया। जीन्स, जॅकेट और गागल्स पहने हुए जॉनी अर्थात जनार्दन ने परीक्षा कक्ष में प्रवेश किया तीन परिक्षक मौखिक परीक्षा के लिए बैठे थे। उन तीनों में से

एक परिक्षक को देखते ही जनार्दन अर्थात जॉनी का दिल भी पानी-पानी हुआ। तीन दिनों पहले जिस सुन्दर युवतीओं को पानी में भिगाकर उसने अपने मित्रों के साथ आनन्द लूटा था उन दो युवतीओं में से एक युवती वहाँ परिक्षक के हैसियत से बैठी थी। वहाँ बैठे तीन परिक्षक में से एक ने उस युवती को अपने कॉलेज की नई व्हाईस प्रिन्सिपाल बताया तो जॉनी के चेहरे का रंग उड़ गया। जलजा ने अपने चेहरे पर तीन दिन पहले घटी घटना का जरा भी परिणाम अपने चेहरे पर न दिखाते हुए जनार्दन को कुछ प्रश्न किये जवाब देना जनार्दन अर्थात जॉनी बस की बात नहीं थी। वह जल्दी बाहर आया। वेंकी और पॅट जॉनी का कथन सुने बिना इंटरव्हयू दिये वहाँ से चल दिये। जॉनी, वेंकी, पॅट तीनों को एल. एल. बी. में प्रवेश नहीं मिला। अपनी दौलत का सहारा लेकर जॉनी और वेंकी ने किसी भी हालत में कितना भी पैसा देकर अँडमिशन लेने की कोशिश की। नये व्हाईस प्रिन्सिपल सिलेक्शन कमेटी में होने से पैसे का प्रभाव नहीं पड़ सका। तीनों वीर निराश होकर वापस लौट गये। तीनों भावी वकील, बनने से वंचित हो गये। नया शहर तीन नये वकील नहीं देख सकता था। कॉलेज के दरबाजे बन्द हो गये। इस अपमान का प्रभाव तीनों के दिल पर बहुत गहरा था। आज तक अपयश इन तीनों वीरों ने कभी नहीं देखा था। जलजा से इस अपमान का बदला लेने की कसम तीनों दोस्तो ने होटल में बैठकर सिगरेट के कश लेते हुए खायी।

एल. एल. बी के क्लासेस शुरू हुए। जॉनी, वेंकी और पॅट जैसे तीन गुण्डों को कॉलेज में प्रवेश न मिलने पर कॉलेज

के अच्छे विद्यार्थियों को खुशी हो गयी थी और मनोमन वह नयी व्हाईस-प्रिन्सिपल को दुआएँ दे रहे थे ।

जलजा की पढ़ाई से भी विद्यार्थी खुश थे । जलजा की बहन वैदेही को कॉलेज में अॅडमिशन मिल गई थी । जनार्दन अर्थात जॉनी की बहन पुष्पा को भी अॅडमिशन मिल गई थी । जॉनी अपनी बहन को कॉलेज में जाने से रोकना चाहा । मगर वह कामयाब नहीं हुआ । जॉनी के लिए और उकसाने वाली एक और बात थी । वैदेही और पुष्पा सहेलियाँ बन गई थी । वैदेही और उसकी व्हाईस प्रिन्सिपल बहन की तारीफ अपनी बहन पुष्पा के मुख से कभी सुनाई देती तो गुस्से से जॉनी पागल हो जाता था । अपने अपमान का बदला एक दिन जरूर लेने की योजना उसने अपने दोनों साथियों के साथ बातचीत के बाद पक्की कर ली थी । संधि के तलाश में वह तीन हीरो बेचैन थे ।

तुफानी बारिश के कारण वातावरण भयानक जान पड़ रहा था । शाम के 5 बजे थे मगर चारों ओर अंधेरा छा गया था । सारा कॉलेज खाली था । विद्यार्थी और विद्यार्थिनियां कभी की अपने घर की ओर प्रस्थान कर चुकी थी । अपना काम खत्म कर वैदेही के साथ जलजा कॉलेज के प्रांगण के बाहर आयी । तब काफी अंधेरा छा गया था । कॉलेज का गेट पार कर जलजा अपनी बहन के साथ आयी । बहन की चीख से उसका ध्यान सामने की ओर खींच लिया । जॉनी, वेंकी और पॅट हाथ में लाठियां लेकर खड़े थे । वैदेही डर से काँप रही थी । जलजा ने उसे धैर्य से अपने आपको काबू में रखने को कहा ।

वेंकी विजय की मुस्कान चेहरे पर लिए सामने आया। "व्हाईस प्रिन्सिपल जी आप दोनों बहिनों को अपनी बहादूरी दिखाने का समय आ गया है। डरिये नहीं हम इस लाठियों से हम आपको मारेंगे नहीं। आप दोनों के मस्त बदन को चुपचाप आप हमारे हवाले कीजिए। हमारा जो अपमान हुआ था। उसके बदले में यह कीमत आपको चुकानी होगी आप दोनों बहनों ने कुछ विरोध किया तो ही इन लाठियों का उपयोग हम करेंगे अन्यथा नहीं घबराने की कोई बात नहीं आइए" कहते हुए" वेंकी ने वैदेही का हाथ पकड़ा। मूसलाधार बारिश हो रही थी रास्ता सूनसान था। क्वाटर्स नजदीक थे मगर वहाँ से यहाँ मदद मिलने की कोई संभावना नहीं थी। वैदेही ने घबराकर चीख मारी। "इस चीख का कोई फायदा नहीं डियर" कहकर वेंकी ने वैदेही का दूसरा हाथ भी पकड़ा। वैदेही डर से काँप रही थी। "देखो भाईयों यह अच्छी बात नहीं है। यह आप कुछ अच्छा नहीं कर रहे हैं आप बदले की भावना को भूल जाईए। आप तीनों को एल. एल. बी. में ॲडमिशन नहीं मिली इसमें मेरा दोष नहीं सिलेक्शन कमेटी के राय में आप तीनों परीक्षा में फेल थे। और एल. एल. बी. के जैसे न्याय देवता की रक्षा करने वाली डिग्री के लिए आप तीनों का प्रवेश लेना उचित नहीं था। "ऐसा कहकर जलजा ने उन तीनों नराधमों को समझाने का प्रयत्न किया।" यह भाषण अब देने से कुछ फायदा नहीं हम तीनों कौन है यह जानकार भी आपने हमारी ॲडमिशन के खिलाफ कदम उठाया हमें कॉलेज में मुँह दिखाने के काबिल न रखा अब आपको कोई नहीं बचा सकता कहते हुए पॅट आगे आया।

जलजा ने जानी की तरफ देखते हुए कहा "जानी वैदेही तुम्हारी बहन जैसी है। तुम्हारी अपनी बहन की सहेली और क्लासमेंट है कम से कम तुम तो यह बुरे काम की हिम्मत न करो।" जानी पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा।

वेंकी ने शरारत भरे अंदाज में कहा "जलजा डार्लिग। आज तुम मजबूर हो। "इसलिए डट कर उपदेश कर रही हो। सिलेक्शन के दिन हम मजबूर थे। तुमने अपनी मनमानी की आज हमें भी अपनी मनमानी करने का भाग्य नसीब हुआ है देखते हैं अब तुम्हें कौन बचा सकता है। चीखकर दरबान को बुलाओ। वह यहाँ तक नहीं आ सकेगा।"

देखो आप तीनों को अभी सीधे घर जाने की मैं रिक्वेस्ट करती हूँ। सीधे जाइए वरना पछताना पड़ेगा। "जलजा के इस विधान से तीनों वीर और जोश में आये। पछताने की बारी तो अब तुम्हारी है जलजा मॅडम" पँट ने हँसते हुए कहा देखता हूँ अब मजबूर नारियों की मदद करने कौन हीरो सामने आता है कहकर पॅट और नजदीक आया। वैदेही के हाथ छोड़ने की जलजा ने फिर एक बार वेंकी से विनती की मगर वेंकी ने हाथ और सख्ती से पकड़ कर वैदेही को अपनी तरफ खींचा।

अब चमत्कार हुआ। कराटे की एक ही मार से वेंकी 4 फीट दूर जा गिरा। आकर्षक और छोटी बच्ची जैसी दिखने वाली जलजा का यह रूप देखकर वह आश्चर्य चकित हुआ। उसके बाद सिर्फ 4-5 क्षणों की अवधी में जॉनी वेंकी और पॅट चीत होकर कीचड़ में गिरकर तड़प रहे थे। तीनों के चेहरे खून से

लतपथ थे। उठकर बैठने की शक्ति भी उनमें बची नहीं थी। 4-5 कराटे के वारों से जलजा ने तीनों गुण्डों को पराजित किया था और अपनी बहन का संरक्षण किया था। "मैंने कॉलेज शिक्षण के दौरान एन. सी. सी. का कोर्स भी पूरा किया था। उसी दौरान कराटे का शिक्षण भी लिया था। आत्म-संरक्षण के लिये उस शिक्षण का उपयोग करना नहीं पड़ेगा ऐसा सोचा था। मगर आज करना पड़ा और उसकी उपयुक्ता भी सिद्ध हुई। आशा है यह सबक आपको याद रहेगा।" ऐसा कहते हुए अपनी घबराई हुई बहन का हाथ पकड़कर जलजा वहाँ से चल पड़ी।

दूसरे दिन पूरे कॉलेज में और शहर में यह बात फैल गयी। जॉनी, वेंकी और पॅट के इस प्रक्षोमक व्यवहार से कॉलेज के विद्यार्थी संताप जनक अवस्था में थे। साथ-साथ जलजा की वीरता देख उसके बारे में विद्यार्थियों का आदर और बढ़ गया था।

कॉलेज के नजदीक भी अब कभी आने की जॉनी, वेंकी और पॅट हिम्मत नहीं कर सकते थे। भाई के इस कारनामे से जॉनी की बहन पुष्पा को कॉलेज में अपना मुँह दिखाने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी।

तन से और मन से घायल जॉनी, वेंकी और पॅट इस अपमान का बदला अब कैसे ले सकते हैं यह बात सोच रहे थे।

दिन बीतते गये हर तरफ शांतता थी। कॉलेज ठीक से चल रहा था। घटी घटना शायद सब भूल गये थे। जॉनी

अपने घर में कुछ किताब लेकर पढ़ रहा था। जॉनी और उसके दोनों मित्र आजकल ज्यादा बाहर नहीं घुमते थे। डर और अपमान ने उन्हें खुली हवा में घुमने से वंचित किया था।

अचानक रोती हुई पुष्पा घर आई तो जॉनी ने उसे कारण पूछा। बहुत देर तक तो वो बिना कुछ बोले रोती ही रही। भावनावेग थोड़ा कम होने के बाद उसने भाई को कहा—"तेरे कारण आज मैं संकट में पड़ गई थी मगर एक देवता ने आकर मुझे बचाया, नहीं तो आज मुझे आत्म-हत्या करने के सिवा ओई चारा नहीं था।" जॉनी पुष्पा के तरफ देखते ही रहा। उसने जो कुछ कह सुनाया वह उसके जीवन में बदलाव लाने के लिए काफी परिणामकारी था।

जॉनी, वेंकी और पॅट को कॉलेज में बहुत से दुश्मन थे। बहुत से विद्यार्थी उन तीनों ने जलजा के साथ जो अनादर किया उसका बदला लेने के इच्छुक थे। ऐसा ही एक अवसर मिलते ही कुछ कॉलेज के युवकों ने जॉनी की बहन पुष्पा को कॉलेज के एक रूम में घेर लिया और जॉनी और दोस्तों ने जलजा और उसकी बहन वैदेही का जो अपमान किया उसका बदला पुष्पा से लेने के निश्चय से उसे पकड़ लिया तभी ऐन वक्त पर जलजा वहाँ पहुँची और उसने विद्यार्थियों को उपदेश देकर समझाकर पुष्पा को बचाया। पुष्पा कलंकित होने से बच गई। पुष्पा को बचाने वाली वह नारी थी जिसको कलंकित करने का प्रयत्न उसके भाई जॉनी और उसके दोस्तों ने किया। पुष्पा ने जो कुछ कहा उससे जॉनी के दिल पर

वहुत गहरा प्रभाव पड़ा। कुछ सोचकर वह घर से बाहर निकला। सीधे अपने जिगरी दोस्त वेंकी और पॅट के पास वह गया उनसे बातचीत की और घर वापस आया।

जलजा अपने घर में माँ और छोटी बहन वैदेही से बातचीत कर रही थी। अचानक दरवाजा खटखटाने की आवाज से उसने वैदेही को दरवाजा खोलने को कहा। वैदेही दरवाजा खोलते ही डर गयी। जॉनी-वेंकी-पॅट दरवाजे में खड़े थे। उनके गंभीर चेहरे देख वैदेही कांप उठी। आपको क्या चाहिये कहकर डर से पीछे हटी। "हमें जलजा जी से मिलना है कहकर जॉनी अन्दर घुसा पीछे वेंकी और पॅट भी आये। अब क्या होनेवाला है इस डर से वैदेही और उसकी माँ देख रही थी। जॉनी ने आगे जाकर जलजा के चरण छुए वहन हम तीनों को माफ करना कहते समय जॉनी के आँखों में आँसू थे। जलजा ने उसे उठाया। उसके बाद वेंकी और पॅट ने भी जलजा के चरण छुए और छोटे भाइयों को माफ कर पुरानी बातें भूल जाने को कहा।

"मैं तो कब की पुरानी बाते भूल गई। मैंने आपको माफ किया है मगर अब से अच्छे युवक और अच्छे विद्यार्थी बनने का आप तीनों को वचन देना पड़ेगा" ऐसा जलजा के कहने पर तीनों ने बुराई छोड़ अच्छे बनने की सौगन्ध खाई। इनसान के अन्दर बुराई के साथ-साथ अन्दर छिपी हुई अच्छाई भी बाहर आती है इस बात की सत्यता सबके सामने थी। वैदेही ने अन्दर जाकर कुछ मिठाईयाँ लाकर तीनों भाइयों को खिलायी हँसते-हँसते समय बीत गया जॉनी, वेंकी और पॅट नया जन्म लेकर अपने घर लौट गये।

पुष्पा के आग्रह से तीनों युवकों ने कॉलेज में, गुजरी हुई वातों की सबके सामने माफी माँग ली। परिणाम स्वरूप जिन विद्यार्थियों ने बदले की भावना से पुष्पा को कलंकित करने की कोशिश की थी उन्होंने भी पुष्पा से और साथ ही साथ जलजा से भी माफी माँगी।

जलजा के कतृत्व से प्रभावित जलजा की माँ को जलजा पर और स्वयम् उसकी माँ होने पर गर्व हो रहा था।

सागरा

सिंदुरी प्रकाश सागर की लहरों पर फैलकर उसे सिंदुरी बना रहा था। दोना-पालवा की पहाड़ी पर तो दृश्य बहुत ही लुभावना लग रहा था। इस प्रकाश से हरी भरी वनस्पतियों का रंग भी चमक रहा था। गोवा प्रकृति के अद्भुत खजाने का सुन्दर उदाहरण है। फिरते रंग मंच के समान सृष्टि के विशाल रंग मंच की छबी और छटा क्षण-क्षण बदल रही थी। टुरिस्टों का जमघट इस सुन्दर दृश्य को आँखों में समाकर आनन्द लूट रहा था। अन्य यात्रियों के साथ आया हुआ टॉम इन बदलते दृश्यों को अपने कॅमरे में बन्द किये जा रहा था। टॉम के इस उपक्रम में सूर्य अस्त होकर आश्विन मास की पूर्णमासी का पूर्ण चन्द्रबिम्ब आकाश में अवतरित हुआ। साथ ही पहाड़ी पर फैली छोटी-छोटी वनस्पतियों के चित्र भी वह उतारे जा रहा था। अचानक उसकी नजर दूर जाती हुई उसकी लाँचपर गई और "ओ गाड व्हाट टू डू !" के उद्गार अचानक उसके मुँह से निकल पड़े।

टॉम वास्तव में जर्मनी का निवासी था। जर्मन स्थित एक औषधी कंपनी के सहकार्य से चलनेवाली एक भारतीय कंपनी के मैनेजर पद पर अपने पिता की नियुक्ति होने के कारण टॉम पिता के साथ बम्बई आया हुआ था। भारत आकर उसे करीब साल भर हो चुका था। जर्मन भाषा के व्याकरण से साधर्म्य होने के कारण टॉम को संस्कृत भाषा में

रुचि हो गयी थी और उसने वह भाषा सीखना शुरू कर दिया था और वर्ष भर में काफी प्रगति भी की थी। संस्कृत के कारण आयुर्वेद के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा मूलत: संशोधक वृत्ति वाले टॉम के मन में उत्पन्न हुई। बम्वई स्थित एक आयुर्वेद कॉलेज के सौजन्य से उसने आयुर्वेद का काफी ज्ञान प्राप्त किया था।

औषधी विज्ञान में विशेष खोज करने के लिए अनुसंधान कार्य में जुठे रहने से शोध कार्य और साथ ही साथ 'साईट सीईंग' करने के उद्देश्य से वह गोवा आया हुआ था। वास्को (वास्को डी गामा) स्थित अपने होटल में लौटना टॉम को आवश्यक था और लाँच चले जाने से दोना पावला की इस पहाड़ी से दूर वास्को के अपने होटल तक अव कैसे जाना इसी संभ्रम में वह पड़ गया था। पणजी तक बस से जाकर फिर वास्को जाना बसे वन्द होने के कारण नामुमकीन था। वास्को जानेवाला एकमात्र सहारा वह लाँच चले जाने से रात का भोजन कहाँ करे ? रात किधर काँटे ? इन विचारों से वह बेचैन हो गया। सूर्यास्त के बाद किसी लाँच को मार्मागोवा हार्बर के तरफ जाने की अनुमती न रहने के कारण उस पार जाने को प्रयत्न करने पर भी कोई अन्य लाँच चालक राजी नहीं हुए। निराश होकर वापस आकर टॉम ने दोना पावल की चट्टान के ऊपर चढ़कर आजूबाजू के परिसर का चारों ओर दृष्टि लगाकर अवलोकन किया। उसने समुद्र के एक दिशा की तरफ दृष्टि दौड़ाई तो वास्को का मार्मागोवा हार्बर दूर दिखाई दे रहा था। दूसरी दिशा की ओर दो चार बड़ी-बड़ी पहाड़ों की चट्टानें थी। और एक दिशा की ओर

यानी जिस जगह वह खड़ा था उस तरफ दूर कुछ बँगले दिखाई दे रहे थे। बाकी तीनों दिशाओं को पहाड़ और बीच में अथांग सागर वातावरण एकदम शांत था। इतनी शांतता टॉम को इस वक्त बहुत भयावह लग रही थी। नीचे उतर कर उसने पास ही दो तीन होटलों में जाकर रहने और खाने का कुछ बन्दोबस्त करने के लिये पूछताछ की। उसको निराशा ही नसीब हुई। 'नो-रूम' कहकर सौजन्यता से मगर नकारात्मक भाषा से लॉजेस और होटलों से उत्तर मिले। खाने के लिए भी कुछ न मिला। और आगे अंधेरे में जाकर किसी अनजान व्यक्ति से पूछने की या सहारा माँगने की अब टॉम को इच्छा भी नहीं थी।

टॉम को संस्कृत सुभाषित की एक बात सोचकर धैर्य आया कि विपत्ति में कायर बनकर रहना उचित नहीं है। उसने रात अब इसी पहाड़ी पर काटने का विचार किया। उसके हाथ के हॅन्ड बॅग में एक बिस्किट पॅकेट मिला। बिस्किट खाकर उसने साथ ही लाये हुए वॉटर बॅग को खोलकर देखा उसमें काफी पानी था। बिस्किट खाकर और वॉटर बॅग का पानी पीकर क्षुधा कुछ शांत हुई तो मन उस निराशामय परिस्थिती में भी प्रसन्न हुआ। वहाँ की एक पौधों से घिरी एक ऊँची शीला पर बैठकर वह सोचने लगा। प्रकृति का कितना अनमोल खजाना भारत की भूमि पर फैला है। आयुर्वेद में अनेक दिव्य औषधियों का वर्णन है—उनमें से कुछ आज भी अस्तित्व में है और अपने अमृत तुल्य औषाधी गुण धर्मों से हजारों की जाने बचाती है—बचा रही है। प्रकृति में फैले इन वनस्पतियों में जो औषाधी तत्व हैं

रक्षा तो होती आ रही है किन्तु संजीवनी जैसी दिव्य वनस्पती आज अप्राप्य है ।

टॉम ने निश्चय किया कि वह एक दिन जरूर संजीवनी खोज निकालेगा । जर्मनी के डॉक्टर हायनेमान ने होमियोपाथी का आविष्कार किया । आज लाखों करोड़ों लोगों को होमिओपाथी द्वारा अनेकानेक रोगों से राहत मिल रही है टॉम ने सोचा—"मैं आयुर्वेद की दिव्य औषधी को जरूर खोज निकालूंगा-अमरत्व प्राप्त कराकर जीवनदान देनेवाली इस वनस्पति को असंख्य बुद्धिमान अविष्कारकों को देने से वे मानव कल्याणकारी और सुविधा देनेवाले अनेक नये अविष्कार कर सकेंगे ।"

दिनभर साईट सीईंग करने से टॉम का शरीर थक गया था । भूख और निराशा ने उसकी रही शक्ति भी लुप्त हो गई थी । अब उस शीला पर बैठे-बैठे विचार कर मन भी थक गया । नसीब में दूध न सही दूध जैसी चांदनी तो है यह सोचकर वह प्रकृति का फिर अवलोन करने लगा । वहीं लेटे-लेटे आकाश की ओर उसने दृष्टि डाली । चारों ओर चांदनी छायी हुई थी । इस चांदनी द्वारा सुधांशु सारी वनस्पतियों पर अमृत वर्षा कर रहा था इस अमृत वर्षा से अपने शरीर को नहलाते हुए उसने आँखें मूंद ली । कुछ क्षणों में वह निद्रिस्त हो गया । हवा के हल्के झोंके ने लोरी का काम किया था । उसे कब नींद लगी उसे पता ही नहीं चला ।

हवा में फैली सुगंध की लहर से और पायल की छुन-छुन से उसकी आँखें खुली । थोड़ी ही दूरी पर दो श्वेत वस्त्रा युवतियाँ कुछ मंत्र बोल रही थीं । अपने आप में घूमकर

प्रदक्षिणा कर गोल घूम रही थी जिसके कारण उनके पैंजनों की छुन-छुन ध्वनी आ रही थी ।

टॉम को पहले लगा कि वह ड्रीम देख रहा है । वह जो देख रहा है वह सच है या सपना इसे पहचानने के लिए टॉम ने अपना हाथ उठाना चाहा मगर हाथ हिलने का नाम नहीं ले रहा था । टॉम दे दूसरा हाथ उठाने की कोशिश की । वह हिला लेकिन उसकी संवेदना टॉम को नहीं रही । वह अपने आप में सोचने लगा—"कहीं मुझे पॅरालिसिस तो नहीं हुआ ?" और इस कल्पना से अचानक उसके मुंह से चीख निकली "ओऽ नो ! आय कान्ट लिव्ह लाइक धिस" टॉम की घबराई हुई चीख से वातावरण में खलबली उत्पन्न हुई । दोनों श्वेत वस्त्रा स्त्रियाँ रुक गई और वन्य वेष में दो पुरुष टॉम की ओर दौड़े उनके हाथ में शस्त्र भी थे ।

टॉम की नींद अब पूरी तरह खुल गई थी । दो शस्त्रधारी जंगली युवक अपनी ओर आते देख उसे लगा कि अब उसका जीवनकाल समाप्त होने जा रहा है । जन्मदायिनी संजीवनी के शोधक और मानव कल्याण के साधन ढूंढनेवाले टॉम का जीवन समाप्त करने के लिए दो यमदूत तेजी से आ रहे थे । उनका इरादा क्या है वह बहुत जल्द ही मालूम होने जा रहा था । भाषा की अड़चन के कारण उन्हें कुछ समझाना बातें करना तो असंभव ही था । टॉम ने क्षण भर के लिए आँखें मूंद ली । शस्त्रधारी नौजवानों के पदचापों के पीछे से टॉम को नींद से जगाने वाली पायल की मधुर ध्वनि के फिर से सुनाई देने से उसे कुछ राहत मिली और मधुर ध्वनि करनेवाली पायल पहननेवाली को देखने के उद्देश्य से टॉम ने आँखें खोल

दी। मौत के मुंह में भी कंचन और कामिनी का मोह पुरुष नहीं त्याग सकता इस तथ्य को समझकर उस दशा में भी टॉम हँस पड़ा।

टॉम ने आँखें खोलकर देखा। शाकुन्तल की शकुन्तला समान पेहेराव लिये एक गौरांगना और एक श्यामला उन दोनों शस्त्रधारी नौजवानों के पीछे खड़ी थी। गौरांगना दो युवकों में से एक को कह रही थी "भैय्या अपनी पूजा तो पूरी हुई भंग तो नहीं हुई यह बेचारा कोई टुरिस्ट लग रहा है।" 'यात्री' शब्द को छोड़ वाकी वातें टॉम के समझ में नहीं आयी मगर जान में जान आ गई और वह बोला "यस यस आय एम टुरिस्ट-यात्री यात्री" टॉम को युवक ने इशारे से ही उठने की आज्ञा दीं तव टॉम वह इशारा समझ गया और फिर बोला "आय कान्ट गेट अप सॉरी और इशारों से उठने में असमर्थता दर्शायी। गौरांगना ने साथी युवक को यात्री की मदद करने को कहा—"बोली भैय्या देखो तो इस यात्री को कहीं खरोच तो नहीं आयी जिस वनस्पतियों के सान्निध्य में यह सोचा है वह अत्यंत विषैली वनस्पतियां है और जरासी खरोच भी लगी तो जान का खतरा है।" उस युवक ने अपना शस्त्र गौरांगना के हाथ में दिया और टॉम को उठाकर उसका हाथ देखा। स्फटिक सामन स्वच्छ चांदनी में टॉम के गोरे हाथों पर आयी खरोचें युवक को दिखाई दी। उसने कहा "सागरा ! तुमने ठीक ही कहा था खरोचें है अव क्या किया जाय ?" इस पर सागरा ने कहा।" शोमू भैय्या और शतरूपा को घर जाने दो। बाबा राह देख रहे होंगे। मैं इस यात्री के लिए कुछ आवश्यक औषधी वनस्पती लेकर आती हूँ।" उनकी

वातें टॉम को समझ में नहीं आ रही थी मगर इतना विश्वास हो गया था कि ये सभी लोग अपनी जान लेने की नहीं बचाने की कोशिश में हैं। अपनी आँखें उसने मूंद ली उसे फिर से ग्लानी आ गयी।

टॉम ने जब आँखें खोली तो उसे ऊपर चन्द्रमा और आकाश के बजाय सूखे नारियल के पत्ते दिखाई दिये। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहाँ है? उसने फिर से अपनी आँखें मूँद ली और वह याद करने लगा—वह कहाँ हो सकता है। हॉटेल में या किसी कॉलेज में? उसे एकदम याद आया कि वह रात में दोना पावला की पहाड़ी पर अकेला था। अचानक उस गौरांगना की मूर्ति उसकी आँखों के सामने आ गयी। और पहाड़ी पर उसे लेटा हुआ देख शस्त्रधारी युवक और गौरांगना का वहाँ आना और आपस में कुछ बाचचीत करना याद आया उसके बाद शायद वह बेहोश हो गया और आगे क्या हुआ इसका तर्क करना भी मुश्किल था।

टॉम ने फिर से आँखें खोली तो सामने अपने विपुल केश संभार को मुक्त रखी हुई, सिन्दुरी वस्त्र पहनी हुई मुस्कुराती हुई वह गौरांगना सागरा दिखाई दी। सागरा उसके सामने खड़ी थी। उसे देखते ही टॉम उठकर बैठा। उसने अपने दोनों हाथ हिलाए और खुशी से खड़ा भी हो गया। कहने लगा "स्ट्रेन्ज-स्ट्रेन्ज आय ॲम ऑल राईट। ओऽ ओऽ" उसकी खुशी देखकर सागरा मुस्कुराई "थँक्स ए लॉट" कहकर कृतज्ञता दर्शाने हेतु उसने सागरा का हाथ अपने हाथ में लिया। बिजली के झटके समान अपना हाथ छुड़ाकर सागरा वहाँ से भागी। थोड़ी ही देर में शस्त्रधारी युवक यहाँ आये "आप कैसे हैं?"

उसमें से एक ने टॉम को पूछा। टॉम ने उत्तर दिया 'आय अॅम आल राईट और उन दोनों युवकों को प्रणाम किया। इशारों की भाषा और टूटी फूटी हिन्दी का सहारा लेकर टॉम उन्हें ये समझाने में सफल हुआ कि एक डॉक्टर और संशोधक है और आयुर्वेद में उपयुक्त वनस्पतियों का संशोधन करने यहाँ आया है। इतने में सागरा और उसके पिता भी वहाँ आ गये। वे संस्कृत जानते थे। टॉम ने अपनी हॅंड बॅग कहाँ है पूछने पर एक युवक ने उसकी हॅंड बॅग जो युवक टॉम के साथ ही यहाँ से जिस जगह टॉम था ले आये थे उसको दी। टॉम ने अपनी हॅंडबग खोलकर कुछ जड़ी-बुटियाँ, वनस्पति जमा कर रखी थी वह सागरा के पिताजी को बताई। सागरा के पिताजी ने आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रंथ-लोलिंबराज टीका टॉम को बताया साथ में घर के अन्दर ले जाकर अपनी बहुत सी औषधियाँ उसे बतायी। इससे टॉम ने यह समझ लिया कि जंगल में रहने वाला यह संगर एक वैद्य है। और अपने जैसा डिग्री होल्डर और संशोधक न होकर भी मानवजाती के कल्याण के लिए नई-नई औषधियाँ बनाने में उसे रुचि है। सागरा उस वैद्य की जेष्ठ पुत्री है और उसे ही केवल वैद्य शास्त्र में रुचि अधिक होने के कारण बहुत सारे मंत्र और गुप्त औषधियों के विषय में जानकारी केवल वह उसे ही देना चाहता है।

टॉम ने भी उस वैद्यकों संस्कृत का सहारा लेकर कुछ आधुनिक औषधियाँ-इंजेक्शन्स के बारे में बताया और बहुत कुछ अपने वारे में भी। वह इस जगह कैसे आया यह पूछने पर सागरा ने उसे सब कुछ सुनाया। कुछ मंत्र विद्या का अभ्यास करते समय उस जगह टॉम का अचानक चीखना

और बाद में बेहोश हो जाना और उसके बाद उस पर दया आकर इलाज के लिये यहाँ इस जगह ले आना यहाँ तक तो सारी बातें टॉम को बताई गई मगर वह कौन सी जगह जहाँ वे सब लोग इस वक्त बातें कर रहे है ? इस बात का जवाब उसे किसी ने नहीं दिया। उसे सिर्फ इतना बताया गया कि वह दोना पावला से बहुत दूर समुद्र पार करके एक पहाड़ी इलाके से लाया गया है।

टॉम ने वापस वास्को जाने की इच्छा प्रकट की और उसे वास्को तक पहुँचाने का प्रबंध करने की बिनती की। वास्को के होटल का मैनेजर और सभी लोग उसके न आने पर चिंतित जरूर होंगे यह बात भी उसने बड़ी मुश्किल से उन्हें समझायी।

थोड़ी देर तो सब लोग मौन रहे। बाद में शांतता भंग करते हुए सागरा के पिता ने उसे कहा "ठीक है। तुम जाना चाहते हो तो जा सकते हो। रात में सागरा और सोमु तुम्हें नांव से दोना पावला छोड़ देंगे वहाँ रात काटकर सुबह तुम वास्को वापस जाओगे। इस अज्ञात जगह का पता दूसरे लोगों को नहीं है। तुम यहाँ कैसे आये और वापस कैसे दोना पावला पहुँचे इस बात की गुप्तता का वचन तुम्हें देना होगा।" टॉम को उनकी बातों का अर्थ समझ में आया मगर वह जवाब नहीं दे सकता था उसने इशारों से ही गुप्तता रखने का वचन दिया।

वह पूरा दिन उस अज्ञात स्थल और जंगली लोगों के साथ टॉम ने बिताया। उनका दिया हुआ रुचिकर भोजन भी बड़े आनन्द से लिया। वह वहाँ के सब लोगों का मित्र बन गया।

शाम को सूरज ढलते ही उसकी जाने की तैय्यारी हुई। नांव तैयार थी। जाते समय सब से भाव भीनी बिदाई लेते समय सागरा के पिता ने टॉम से कहा "टॉम। मानव कल्याण के लिये संशोधन का कार्य हमारे साथ रह कर अगर तुम करना चाहो तो जरूर लौट आना तुम्हारे आने से हमें खुशी होगी।" टॉम ने अपनी चारों तरफ देखा सबसे दूर अकेली खड़ी रह कर सागरा उसे देख रही थी। उसकी आँखों में चमक थी। वह आँखें टॉम को कह कर रही थी। "टॉम तुम जरूर लौट आना मेरे लिये"।

टॉम नांव की तरफ आया। सव लोग उसके साथ आ रहे थे। सागरा ने सुगंधित फूलों की पुष्पमाला टॉम के गले में डाली और हाथ में कुछ फल दिये सव लोग एक टक टॉम को देख रहे थे। सागरा के पिता ने कहा—"जाओ टॉम और लौटकर हमारे पास आओ। सागरा ने पहनाई हुई यह माला तुम्हें जरूर हमारे पास खींच लायेगी। सागरा नांव में बैठ गई। सोमू ने सागरा के भाई ने चप्पु चलाया और टॉम सागरा और सोमु के साथ किनारा छोड़ समुद्र में आया। करीब दो घंटों के सफर के बाद नांव दोनों पावला के नजदीक आयी। एक पत्थर के पास नांव रुकी। सागरा ने हाथ पकड़ कर टॉम को वह पथरीले जगह पर उतरने में मदद की। "आज से ठीक पांचवे दिन रात के 11 बजे हम तुम्हारा दोना पावला की चट्टान पर इन्तजार करेंगे हमें आशा है तुम जरूर आओगे" सागरा के इस बात पर टॉम ने कुछ नहीं कहा सिर्फ उसका हाथ हलके से दवाया। सोमु से उसने हाथ मिलाया और विदा ली कुछ ही क्षणों में नांव वापस चली गयी एक

पहाड़ के पीछे चली जाने के बाद फिर दिखाई नहीं दी। टॉम दोना पावला के पहाड़ पर चढ़ आया।

आज की रात दोना पावला पर गुजारने का अब उसे डर या भय नहीं लग रहा था। सुबह होते ही पहली ही जो लाँच मिली उसमें बैठकर वह वास्को की तरफ रवाना हुआ। होटल वापस आने पर उसने देखा मैनेजर और दूसरे यात्री चिंतित थे। उसके आते ही सब लोग खुश हो गये। लाँच मिस होने से दोना पावला में रात काटनी पड़ी यह बात टॉम ने बताई मगर उसके आगे कुछ नहीं बताया। उसने ट्रंककॉल कर बम्बई स्थित उसके पिता से बातचीत की। शॉवर बाथ लिया अच्छा खाना खाया। अपना कुछ काम था वह उसने दिन भर में पूरा किया और रात में ड्रिंक का आस्वाद लेते-लेते वह बिस्तर पर लेटा नींद की आराधना करने लगा था। सागरा की मूर्ति और वह बोलती आँखें उसके सामने आयी तो नींद उससे दूर हो गई। उसने उठकर खिड़की खोलकर बाहर देखा। समुद्र के पास ही बनाये उस होटल की खिड़की के बाहर चांदनी में समुद्र का विहंगम दृष्य और समुद्र की लहरों का रात को उस शांतता में आनेवाला एकमेव आवाज-समुद्र के उस पार ही दोना पावला है यह सोचते ही फिर उसे सागरा और पांचवे दिन उसको इंतजार में ठहरने का वादा याद आया। बहुत देर तक वहां खड़े रहने के बाद सोने के इरादे से टॉम अपने बेड के पास गया लॅम्प बुझाने के लिए उसका हाथ स्विच की तरफ गया। अचानक उसने देखा उसके फोर हॅंड की तरफ दृष्टि जाते ही फोर हॅंड पर कुछ नीले रंग से लिखा हुआ था। वॉश बेसिन के पास जाकर

साबुन से टॉम ने अपना हाथ धोया । टॉवेल से हाथ रगड़कर पोंछने पर भी हाथों पर की लिखाई नहीं मिट सकी । उसने गौर से देखा 'सागरा' अक्षर उसके हाथ पर लिखे हुए थे। वह हँस दिया । और सागरा के बारे में ही सोचते रहा ।

रात भर नींद न मिलने के बावजूद टॉम का चेहरा दूसरे दिन प्रफुल्लित था । सागरा को मिलने जाने का उसने निश्चय कर लिया था । सागरा जहाँ रहती थी उस परिसर में सागरा के साथ अपना जीवन बिताने का अब उसने फैसला किया था । जीवनोपयोगी वस्तुएँ, संशोधन सामग्री टॉम ने इकट्ठा की एक ट्राँझिसटर, पोर्टेबल टीव्हीं सेट और एक कॅलेन्डर का भी उसने अपने सामान में समावेश किया। सब चीजे इकठ्ठा करने में 2-3 दिन चले गये । पाँचवे दिन दोना पावला में उसे किसी हालत में रहना था । सागरा से मिलने वह बेचैन था । मगर शायद विधि को यह मंजूर न था । मार्मागोआ हार्बर जाते ही उसे पता चला कि सभी लाँच चालाक स्ट्राईक पर है । बहुत सारे पैसे ऑफर करने के बावजूद कोई भी टॉम को दोना पावला ले जाने के लिये तैयार नहीं था । टॉम निराश होकर होटल को वापस आया । "सागरा आज इन्तजार करेगी मेरे न जाने से मेरे बारे में क्या-क्या सोचेगी रोती रहेगी" यह सोचते-सोचते वह पागल सा हो गया । रात में उसे बुखार चढ़ गया । बुखार में वह सागरा-सागरा नाम दोहराते जा रहा था । वेटर ने मॅनेजर को खबर दी । मॅनेजर ने डॉक्टर को बुलवाया । डॉक्टर ने टॉम को देखा "इन्हें मलेरिया हो गया है बुखार तेज है चार पांच दिन में ठीक हो

जायेंगे मगर कम से कम उसके बाद 7 दिन के विश्राम की आवश्यकता है डॉक्टर का कहना सच था।

अपने टॉम को देखने के लिए सागरा बेचैन थी। पाँचवे दिन का और मिलने के घड़ी का व्याकुल होकर इन्तजार कर रही थी। दोना पावला पहुँचते ही आँखें टॉम के तलाश में थी। मगर सागरा की नसीब में निराशा मिली उदास होकर वह अपने भाई के साथ वापस चली गई।

"टॉम अब कभी भी नहीं आयेगा। ये विदेशी सब एक जैसे होते है" सागरा के पिता ने कहा। कुछ न कह सकी। मगर उसका दिल कहता था कि टॉम ऐसा नहीं हो सकता वह अन्य विदेशियों की तरह नहीं है। जाने से पहले उसकी आँखों ने सागरा को बिना कहे सब कुछ कह दिया था।

अपनी बिमारी के कारण टॉम को दस दिन बिस्तर में पड़ा। शरीर और दिमाग दोनों कमजोर हो गये थे मगर बिमारी की हालत में भी सागर की याद कम नहीं हुई। बीमारी से उठने के बाद गोवा में कुछ और दिन ठहरने का उसने निश्चय किया। वह रोज लाँच से दोना पावला जाने लगा। दो-दो रातें बिताने पर भी रात में कोई भी उस पहाड़ी पर न आया तो वह निराश हो गया। फिर भी दोना पावला के चक्कर लगाना उसने नहीं छोड़ा। टॉम का रोज दोना पावला आना जाना देख वहाँ के एक वृद्ध ने समझ लिया इसमें कोई राज छिपा है। उसने टॉम को समझाया "दोना-पावला प्रेम कहानी में दोनों प्रेमियों को मृत्यु हो गई थी। यह जगह ट्रैजिडी पॉइंट है। आप यहाँ आना छोड़िये व्यर्थ क्यों

जीवन बरबाद करने पर तुले हो ?" टॉम वृद्ध के कथन पर सिर्फ मुस्कुराया ।

दिन बीतते गये । आज पूर्णमासी की रात थी । ठीक एक महिने पूर्व टॉम यहीं पर सागरा से मिला था । आज की रात फिर दोना पावला में गुजारने का निश्चय उसने कर लिया । शायद मेरे भी जीवन का अंत इस ट्रेजेडी पॉइंट पर होने वाला होगा सोचकर वह उसी पथरीली जगह पर जा लेटा जहां एक महिने पहले लेटा था । उस दिन भी उसका मन निराश था और आज भी निराश था मगर निराशा के कारण भिन्न-भिन्न थे । पत्थर पर लेटे-लेटे आकाश की ओर वह देख रहा था और उसे देखते-देखते नींद आ गयी ।

वही सुगन्ध और वही छुन-छुन इस आवाज से टॉम की नींद खुल गई । उसका अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था । सागरा दूर उसके सामने खड़ी थी । दौड़कर वह सागरा के पास गया और उसे उसने बाहों में समा लिया । ट्रॅजिडी पॉइंट पर इन दो प्रेमियों के मधुर मिलन से आनन्द का वातावरण छा गया कुछ दिनों बाद दोना पावला के परिसर में 'सागरा-टॉम' आयुर्वेदिक फार्मसी-विशेष गुणकारी औषधियाँ बनाने वाली कम्पनी शुरू होने का विज्ञापन गोआ के वृत्तपत्रों में आया । इस कंपनी के शुरू होने के पीछे दो प्रेमियों के मधुर मिलन की पार्श्व भूमिका शायद ही किसी को मालूम थी ।

भ्रमण

उपन्यास पढ़कर पूरा करने का गोपाल ने निश्चय किया था। गत तीन दिनों से उपन्यास पढ़कर पूरा कर न सकने से उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था। आज रात चाहे कुछ भी हो उसे उपन्यास पढ़कर पूरा करना ही था। जब अक्षर धुंधले हो चले तो उसे लगा कि अब नींद उसे प्रयत्न करने पर भी पुस्तक बन्द करने पर मजबूर कर रही है। बस ! अब कुछ ही पृष्ठ पढ़ने थे। मगर दो-तीन पंक्तियों को पढ़ने में भी कठिनाई हो रही थी। नीन्द को हटाने हेतु उसने उठकर सुराही का ठंडा पानी ग्लास में लिया और दो घूंट पानी पीकर घड़ी की ओर देखा। रात के दो बजने थे। कल सुबह जल्दी उठना था। उपन्यास पूरा करने में आज भी उसे सफलता नसीब नहीं होने वाली थी। उपन्यास बन्द कर उसने बत्ती बुझा दी। बिस्तर पर लेटे-लेटे वह कहानी के बारे में सोचता रहा। नीन्द कब आयी उसे पता ही नहीं चला।

"भैया उठिए !" की जोरदार आवाज कानों में आते ही उसने आँखे खोली तो चारों ओर उजाला ही उजाला था। गोपाल की आँखें लाल थी। नीन्द पूरी नहीं हुई थी। "क्या नीन्द से उठाने के लिए इतने जोर से आवाज करना जरूरी है ?" उसने गुस्से से अपनी छोटी बहन से पूछा। "भाई जान ? आधे घंटे से आपको उठाने का प्रयत्न कर रही हूँ। मंद मधुर सूर से, नाजूक आवाज से उठाने की चेष्ठा की मगर कुछ

फायदा नहीं हुआ तो यह उपाय करना पड़ा। आज रविवार नहीं है, नहीं तो मैं मेरे भैया को 2-3 घंटे और सोने से मैं मना नहीं करती थी।" बिमला हँसते-हँसते सब कुछ कहकर भैय्या की ओर देख रही थी। गोपाल के क्रोध का उसपर कोई परिणाम नहीं हुआ था।

चाय पीते समय माँ से गोपाल ने कहा—"यह बिमली मुझे बहुत तंग करती है। इस बला को जल्दी इस घर से निकाल देना चाहिए" गोपाल ने बिमला की ओर देखा सताने की अब उसकी बारी थी।

"इसे घर से निकालना है तो तुझे ही कुछ करना होगा, तू जितना जल्दी प्रयत्न करेगा उतना तेरे लिये लाभ दायक होगा। बिमला के लिए कोई लड़का तेरी नजर में है क्या ?" माँ के इस प्रश्न का उत्तर तो गोपाल के पास था मगर अपनी छोटी आमदनी के सहारे बहन की शादी के लिए धन जुटाना निकट भविष्य में तो संभव नहीं था इसका पता उसकी माँ को भी था। सीतापूर जैसे छोटे गाँव में वहाँ के हायस्कूल में वह छोटेसा अध्यापक था। अपने वेतन के सहारे माँ और बहन के साथ जीवन बिता रहा था। धन का उसे लोभ नहीं था। गरीबी के वातावरण में अपनी माँ और नन्ही सी बहन के साथ वह जीवन आनन्द से व्यतीत तो कर रहा था मगर अपने जीवन में कुछ बातों का अभाव उसे जरूर खटकता था अपना जीवन अत्यंत साधारण है और इस अति सामान्य जीवन में कुछ अलग उज्वल भविष्य संभव नहीं है इस सत्यता को जानकर कभी-कभी वह उदास भी हो जाता था। आज माँ के साथ बातचीत करते समय उसका मन एक बार फिर उदास हुआ।

अपने गत जीवन का चित्र उसके सामने आया तो इस अति साधारण जीवन का दोष उसने अपने भाग्य को ही दिया। गोपाल बम्बई युनिव्हर्सिटी में एक अच्छा ब्राईट स्टुडंड जाना जाता था। बी. ए. में सर्व प्रथम आने के बाद एम. ए. में भी उससे होशियार विद्यार्थी सारे युनिव्हर्सिटी में नहीं था। अंग्रेजी भाषा पर उसका प्रभुत्व उसके अंग्रेजी के प्रोफेसर को भी आश्चर्य में डाल देता था। गोपाल के घर की सांपत्तिक हालत कुछ अच्छी नहीं थी। पेन्शनर पिताजी की थोड़ी सी प्राप्ति पर सब कुछ चल रहा था। बस अब कुछ महिनों की ही देर थी। एम. ए. होते ही अंग्रेजी भाषा के प्राध्यापक की नौकरी उसे युनिव्हर्सिटी में ही मिलने वाली थी। इतने होशियार विद्यार्थी को छोड़ने के लिए युनिव्हर्सिटी के सदस्य तैयार नहीं थे। परीक्षा पास होते ही नौकरी देने का वादा उससे किया गया था। मगर विधाता को यह मंजूर नहीं था। अचानक पिता की एक दिन मृत्यु होने से पढ़ाई छोड़कर एक छोटी कम्पनी में गोपाल को नौकरी करनी पड़ी। बाद में एक साल में प्रयत्न करके उसने एम. ए. की पढ़ाई तो पूरी की मगर यूनिव्हर्सिटी में प्राध्यापक बनने से वह वंचित रहा। बीच में पढ़ाई छुटने से वह अवसर उसने खो दिया था। भारी प्रयत्नों के बावजूद बम्बई में या कहीं बाहर भी उसे अच्छी नौकरी नहीं मिली। एम. ए. तक की पढ़ाई बेकार सी हो गयी थी। सीतापूर के एक छोटे से गाँव के उस हायस्कूल का विज्ञापन देखकर उसने अध्यापक के नौकरी के लिए आवेदन पत्र भेजा। यह नोकरी उसे मिल गयी। वेतन कम था मगर नौकरी तो पक्की थी और अध्यापन के द्वारा

शिक्षा के क्षेत्र में रहने का अवसर उसे मिला था। युनिव्हर्सिटी में न सही स्कूल में वह विद्यार्थियों को अंग्रेजी पढ़ा सकता था। उसके पढ़ाने के ढंग पर विद्यार्थी खुश थे। उसके प्रिन्सिपाल और सह अध्यापक भी उसके शांत स्वभाव और सौजन्यशील व्यवहार से उससे प्रसन्न थे। बम्बई जैसे बड़े शहर को छोड़ इस छोटे गाँव के शांत वातावरण में सीमित वेतन में गुजारा करना ज्यादा लाभदायक था।

आज स्कूल में पढ़ाने में उसका ध्यान रोज के जैसा नहीं था। वह सुस्त था और उसे नींद भी आ रही थी। न जाने क्यों पर आज जल्दी घर जाने का उसका मूड़ था। अचानक उसके घर के पड़ोसी लड़के को क्लासरूम के बाहर खड़ा देख गोपाल बाहर आया। लड़के ने उसे जो कहा उससे उसका मन धड़कने लगा। माँ ने उसे जल्दी घर बुलाया था। अचानक इस बुलाने का कारण भी लड़के को नहीं बताया था। शायद माँ या बिमला की तबीयत खराब हो, इस आशंका से प्रिन्सिपल साहब से अनुमति लेकर वह लड़के के साथ घर आया। माँ और बहन को हँसता देख उसके जान में जान आयी। "माँ स्कूल से इस तरह घर बुलाने का कारण क्या है ? मैं तो पहले डर गया था मुझे यूं ही डरा कर घर बुलाने से तुम लोगों को क्या मिला ?" उसने नाराजी से पूछा।

"भैय्या हमें कुछ नहीं मिला। मिला तुम्हें ही है ऐसा हँसते हँसते कह कर बिमला ने गोपाल के हाथ में एक पत्र थमा दिया। "यह क्या है ?" कहते हुए अधीरता से गोपाल ने पत्र पढ़ा। उसके हाथ काँप रहे थे ? मगर वह कंपन डर

से नहीं खुशी के कारण हो रहा था। पत्र पढ़ते ही हर्षोल्हास ने उसने बिमला को ऊपर उठाया और उसके हाथ पकड़ कर वच्चे ही की तरह उछलना नाचना शुरू किया ? माँ की खुशी की भी सीमा नहीं थी। बात ही कुछ ऐसी थी। जर्मनी में आयोजित कथा प्रतियोगिता में उसकी कथा चुन ली गयी थी और उसे प्रथम पुरस्कार मिला था। दस हजार जर्मन मार्क का प्रथम पुरस्कार लेने के लिए उसे जर्मनी में बुलाया था और उसके जर्मनी आने जाने का खर्च भी जर्मन सरकार ही करनेवाली थी। व्हाईस ऑफ जर्मनी की ओर से देश विदेश की अनेक भाषाओं में प्रतियोगिता के लिए कथाएँ मंगवाई गयी थी। विज्ञापन को देख गोपाल ने भी अपनी कथा भेजी थी और वह सब कुछ भूल भी गया था। आज छः महिनें बाद अचानक ऐसा कोई पत्र और यह भी विदेश से आयेगा ऐसी कल्पना भी उसने नहीं की थी। आश्चर्य की बात तो यह थी कि, वह पत्र जर्मनी से हिन्दी भाषा में टाईप होकर आया था।

गोपाल की कहानी चुनी जाने की खबर सारे गाँव में फैल गयी। आंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता होने की वजह से सारे समाचार पत्रों में भी यह खबर छपकर आयी थी।

दूसरे दिन स्कूल में पहुँचते ही विद्यार्थियों ने और सह अध्यापकों ने उसे घेर लिया। बहुतों के हाथों में आज का समाचार पत्र था। बात सबको मालूम हो गई थी। स्कूल में आज पढ़ाई होनेवाली नहीं थी। अध्यापक और विद्यार्थी 'हॉलिडे' मूड़ में थे। हर एक ने गोपाल को उसकी कथा के और जर्मनी के बारे में पूछना शुरू किया। प्रिन्सिपाल साहब ने

उसे बुलाकर बधाई दी । "मुझे और सारे स्कूल को भी आपके ऊपर गर्व है ।" कहते हुए प्रिन्सिपाल साहब ने उसे जर्मनी जाने के लिए पूर्ण रूप से सहायता और वह चाहे जितने दिनों की छुट्टी मंजूर करने का आश्वासन दिया ।

आजकल गोपाल को मिलने गाँव के छोटे बड़े बहुत से लोग आने लगे थे । उसके साथ जिनकी जान पहचान नहीं थी ऐसे लोग भी उससे आकर इस तरह मिलते और बातें करते थे जैसे उनकी गोपाल से बहुत पुरानी पहचान हो । देखते ही देखते एक सामान्य शिक्षक को लोगों ने व्ही. आय. पी. बना दिया था । समाज के अमीर, गरीब, जवान-बूढ़े हर वर्ग के लोग उससे मिलते थे । इतने लोग उसे क्यों मिलने आते थे यह गोपाल समझ चुका था । वह फॉरिन को जाने वाला था इसलिए एकदम उसे प्रतिष्ठित व्यक्ति लोगों ने बना दिया था । आज तक उसने बहुत सी कथाएँ लिखी थी । मासिक पत्रिकाओं और अखबारों को छपवाने के लिए भेजी थी । मगर आज तक किसी ने उसकी रचना छापने का कष्ट नहीं किया था । इतना ही नहीं उसका अप्रकाशित साहित्य उसे लौटाने का सौजन्य भी उनमें से किसी ने नहीं दिखाया था । उसके पत्रों का जवाब तक देने की सभ्यता किसी ने नहीं दिखाई थी । उसी गोपाल को समाज ने आज एकदम प्रथित-यश लेखक, और साहित्यकार कहना शुरू कर दिया था । सिर्फ एक बात सच थी । देश विदेश से आयी हुई अलग-अलग 600 कथाओं में से उसकी कथा प्रथम पुरस्कार के लिए जर्मनी में चुन ली गई थी । देश में ना सही विदेश में तो अपनी रचना को सराहा गया इस बात से गोपाल संतुष्ट था ।

जैसे जैसे प्रयाण के दिन नज़दीक आये गोपाल का दिल धड़कने लगा। जर्मनी कैसा देश होगा ? हवाई जहाज का सफ़र कैसा होगा पूरी विदेश यात्रा कैसी रहेगी ? इन प्रश्नों से उसकी रातों की नीन्द उड़ा दी थी। अड़ोस-पड़ोस में और मित्र परिवारों में गोपाल के विदेश यात्रा की चर्चा भी जोरों में थी।

"जर्मन सुन्दरियों के साथ रहकर कहीं अपने आपको खो न देना तुम्हारी माँ और बहन की जिम्मेदारी तुम पर है।" पड़ोस की एक महिला ने अपना स्त्री सुलभ उपदेश दिया।

कुछ लोगों ने जर्मनी से अपने लिए क्या-क्या वस्तुएँ लानी उनकी सूची भी उसे दी। "बाद में आप भूल जायेंगे इसलिए पहले पैसे ले लीजिए" एक मित्र ने आग्रह किया। "भारतीय मुद्रा जर्मनी में काम नहीं आती पैसे मैं यहाँ वापस आने के बाद ले लूंगा" कहकर गोपाल ने उन्हें समझाया।

"लेकिन आप वापस तो आयेंगे ना ?" एक मित्र ने शंका प्रकट की। "मेरे मित्र ! मैं चाहूँ भी तो वहाँ मुझे कोई रहने नहीं देंगे बस आठ दस दिनों के बाद वापस आना है" कह कर गोपाल ने उसका समाधान किया।

जर्मनी में आप हाम्बुर्ग में रहेंगे या फ्रँकफूर्ट में ! बर्लिन शहर जरूर देखना। "भूगोल विषय पढ़ानेवाले उसके सहपाठी शिक्षक ने जर्मनी के बारे में गोपाल से ऐसी बातचीत शुरू की जैसे वह जर्मनी में रहकर आया हो। उसके समाधान के लिए गोपाल ने कहा—"मैं आपके कथानुसार जितने हो सके उतने शहर देखने की कोशिश करूँगा। मगर पहले मुझे व्हाईस

ऑफ जर्मनी के कोलीन शहर में स्थित कार्यालय में पुरस्कार लेने के लिए जाना है।"

जर्मनी के बारे में बातें करते समय कोलोन शहर का नाम लेना भूल गया यह बात भूगोल के शिक्षक को खटक रही थी। अपना भूगोल का ज्ञान गोपाल को और अवगत कराने के उद्देश्य से उसने कहा—"गोपाल! जर्मनी के वास्तव्य में कितना ही कम समय क्यों न मिले तुम व्हिएन्ना जरूर देख आना जर्मनी का वह सबसे सुन्दर शहर है।"

भूगोल के अध्यापक का भूगोल का ज्ञान देखकर गोपाल को हँसी आयी। व्हिएन्ना शहर जर्मनी में नहीं ऑस्ट्रिया देश में है यह बताकर भूगोल के अध्यापक को अपमानित करने की गोपाल की इच्छा नहीं थी। "मैं हो सका तो व्हिएन्ना जरूर जाऊँगा" कहकर उसने उस अध्यापक का समाधान कर दिया।

प्रयाण का दिन आ गया। सीतापूर में विमान की व्यवस्था न होने से ट्रेन से ही बम्बई के लिए जाना था। बम्बई में अपने बाल मित्र चंपालाल के घर दो दिन ठहर कर विमान द्वारा (हवाई जहाज द्वारा) गोपाल जर्मनी के लिए रवाना होने वाला था।

रेल्वे स्टेशन पर गोपाल को छोड़ने वाली भीड़ को देखकर स्टेशन के और ट्रेन के प्रवासी कोई महान कलाकार या व्ही. आय. पी. कहीं जा रहा होगा समझकर लोग देखने लगे। जब उन्हें मालूम हुआ कि एक मामूली अध्यापक विदेश जा रहा है तो उन्हें निराशा नसीब हुई। माँ और बहन की भिगी पलकें देख गोपाल की आँखों में पानी आया। मैं जल्दी लौट आऊँगा। कह कर उसने दोनों को समझाया। मित्र परिवार

और हितचिंतको से बिदाई लेते वक्त हर्ष और दुःख के अनोखे से मिश्रण से उसका जन भर आया था। गाड़ी ने सीतापूर छोड़ा।

ट्रेन का सफ़र शुरू हुआ। वम्बई पहुँचने पर मोटा चंपालाल उसे स्टेशन पर लेने आया था। दोनों मित्र वहुत वर्षों के बाद मिल रहे थे। ड्रायव्हर ने गोपाल की सुटकेस उठाई और बाहर खड़ी हुई कार में रख दी। कार स्टार्ट हो गई रास्ते में दोनों भिन्न वातें करने लगे। चंपालाल और गोपाल दोनों वचपन के साथी थे। गोपाल ज्यादा बुद्धिमान था फिर भी परिस्थिति ने उसे शिक्षक बना दिया था। चंपालाल वड़े बाप का बेटा होने से शिक्षा पूर्ण होते ही सिफारिश के सहारे एक अच्छी कम्पनी में जौईन हो गया और आज कंपनी का जनरल मॅनेजर था। कम्पनी के वार्षिक लाभ में हिस्सेदार रहने की वजह उसने काफी धन जमाया था। गिरगांव की पुरानी बस्ती कब की छोड़ वरसोवा में बहुत वड़ा फ्लॅट ले लिया था। चंपालाल की शादी हो कर 5 वर्षा बीत चुके थे और वह दो बच्चों का पिता बन चुका था। चंपालाल के फ्लॅट के सामने मोटर खड़ी हो गई। चंपालाल की पत्नी ने गोपाल का स्वागत किया। चंपालाल की शादी में गोपाल आया था। इन पाँच वर्षो में भाभी वदल सी गई मालूम हो रही थी। उसे चष्मा लग गया था। चंपालाल के घर में गोपाल का अच्छा स्वागत हुआ। चंपालाल का घर बड़ा और आलिशान था। करीब 8 लाख रुपये चंपालाल ने इस फ्लॅट पर खर्च किये थे। घर में 2-3 नौकर थे। आज तो गोपाल के आने की खुशी में चंपालाल ने छुट्टी ले रखी थी। उसने अपने दोस्तों

को गोपाल से परिचित करवाया। उसे कम्पनी में ले गया। ठाठ बाठ दिखाये। लक्ष्मी चंपालाल पर प्रसन्न थी। गोपाल चंपालाल का ऐश्वर्य देखकर प्रभावित हुआ था। चंपालाल ने बम्बई में और भी दो बंगले खरीद रखे थे। चंपालाल ने गोपाल के साथ जर्मन एंबेसी के कार्यालय में जाकर व्हिसा, परिचय पत्र कोलोन आने जाने का टिकट उसे दिलवा दिया। पासपोर्ट गोपाल को पहले ही मिल चुका था।

दूसरे दिन चंपालाल कम्पनी में चल दिया। बच्चों को मॉन्टेसरी में पहुँचाया गया। जब चंपालाल की पत्नी बाहर जाने को निकली तब गोपाल को मालूम हुआ कि चंपालाल की पत्नी भी नौकरी करती है। इस बात का गोपाल को आश्चर्य भी हुआ। उससे रहा नहीं गया तो वह पूछ बैठा—"भाभी चंपालाल तो इतना धन कमाता है तो आपको नौकरी करने की क्या आवश्यकता है ?"

इस पर चंपालाल की पत्नी बोली—"भाई साहब ! यह बम्बई है। यहाँ यह सब हर घर में रहता है। फिजूल समय बरबाद करने के बजाय कुछ व्यस्त रहना अच्छा है। यहाँ हर कोई ॲक्टिव्ह रहता है। शाम में हम सब आयेंगे तो मिलकर खाना खायेंगे आप आराम कीजिए या चाहे तो बम्बई की सैर कर आइएगा" "और आपका लंच ?" गोपाल के इस प्रश्न पर चंपालाल की पत्नी हँस दी, बोली—"चंपालाल कंपनी में खा लेते हैं। मैं हमारे कॅन्टीन में खा लेती हूँ। काम करने वाली आया बच्चों को घर में खिला देती है। शाम का डिनर हम सब मिलकर लेते है।"

गोपाल को आश्चर्य हुआ। इतना धन कमाने के बावजू

यह कुटुम्ब एक साथ दो वक्त खाना तक नहीं खाता, चंपालाल की पत्नी समय गुजारने के लिए और ऑक्टिव्ह रहने के लिए नौकरी करती है। अगर न करती तो जरूर किसी ऐसे व्यक्ति का फायदा होता जिसको नौकरी की अत्यंत आवश्यकता है। मगर मुँह से गोपाल कुछ न बोला। यह सबका व्यक्तिगत मामला है और अपने विचार अपने तक सीमित रखना ही अच्छा है यह उसे अनुभव से मालूम हो चुका था।

रविवार को उसे विमान से जर्मनी रवाना होना था। दिल धड़क रहा था। जिन्दगी में पहली बार वह विदेश जा रहा था और जिन्दगी में पहली ही बार वह विमान में बैठने वाला था। यह हवाई जहाज का सफर कुछ घंटों का था। रात भर जर्मनी के बारे में सोचते-सोचते उसे बहुत देर तक नीन्द नहीं आयी।

रविवार को चंपालाल उसकी पत्नी और वच्चों सहित हवाई अड्डे पर उसे पहुँचाने आया था। दोस्त से विदाई लेकर गोपाल विमान में बैठा। विमान के आकाश में उड़ते ही उसकी विदेश यात्रा शुरू हुई।

कोलोन एयरपोर्ट पर जब विमान उतरा तब अंधेरा हो गया था। मगर प्रकाशमान विद्युत दीपों की जगमगाहट से वातावरण प्रकाशमय था। सर्दी काफी थी। गरम कपड़ों के बावजूद गोपाल का शरीर ठंड से काँप रहा था। विमान प्रवास और परदेशगमन का अनुभव लेने के बाद मन खुश था। नये देश का नया वातावरण-नये चेहरे हर तरफ नयापन दिखाई दे रहा था। यह अनुभव भी अजीब था।

विमान स्थल पर व्हाईस ऑफ जर्मनी के कार्यकर्ता मौजूद थे। गोपाल को कोई कठिनाई महसूस नहीं हुई। अब फिक्र की कोई बात ही नहीं रही थी। उसे एक होटल में ठहराने की व्यवस्था की गई थी। होटल में उसका परिचय श्रीलंका और मलेशिया से आये हुए दो व्यक्तियों से करा दिया गया। गोपाल के साथ उन दोनों लेखकों को भी दूसरा और तीसरा पुरस्कार मिला था। दोनों एशियाई मिलने से गोपाल खुश हो गया। उन तीन लेखकों की जल्दी ही मित्रता पक्की बन गई और जर्मनी के वास्तव्य में का समय साथ-साथ व्यतीत करने का उन्होंने निश्चय किया।

दूसरे दिन व्हाईस ऑफ जर्मनी के कार्यालय में आयोजित समारोह में गोपाल और उसके दोनों साथियों का परिचय लोगों से करा दिया गया और उनके लेखन की सराहना कर पुरस्कार दिये गये। गोपाल पुरस्कार का दस हजार मार्क का चेक लेकर बहुत खुश हुआ। आपनी विदेश यात्रा, सत्कार मान सम्मान से ज्यादा उसको पुरस्कार राशी की खुशी थी। इस राशी का भारतीय चलन में परिवर्तन करने के बाद बहन के शादी के लिए अपने पास कितनी रकम जमा होगी इसका विचार उसके मन में आया था। व्हाईस ऑफ जर्मनी के रेडियो पर गोपाल और उसके दोनों एशियाई साथियों का इंटरव्हयू भी हुआ। समारंभ के पश्चात अब कुछ भी काम नहीं था। जाने की तारीख और फ्लाईट निश्चित हो चुकी थी। 8 दिन का समय था। इतने समय में जितना हो सके जर्मन देश देखने का तीनों मित्रों ने निश्चय कर योजना बनाई।

फ्रँकफूर्ट, हाम्बूर्ग म्युनिक इत्यादि शहर देखने के बाद

गोपाल के समझ में एक बात आयी। इतने थोड़े समय में जर्मनी ज्यादा कुछ देखना असंभव था। देखने लायक इतना था कि यात्रा का समय 4 महिने रखने पर भी सब देखना मुश्किल हो जाता। बस! जितना देख सकते थे देख लिया। अन्तिम 2 दिन कोलोन शहर देखने का गोपाल का सुझाव था। जिस कोलोन शहर ने उसके जीवन को प्रगति पथ पर लाकर खड़ा किया था उस शहर पर उसका ज्यादा प्रेम रहना स्वाभाविक ही था। उसके साथियों ने इस बात पर सहमती दे दी।

र्हाईन नदी के किनारे बसा कोलोन शहर अत्यंत सुन्दर और बहुत बड़ा रेल्वे और रोड़ जंक्शन होने से प्रसिद्ध है। जर्मनी की राजधानी 'बॉन' गोपाल ने कोलोन देखने से पहले ही देखी थी। इस राजधानी बॉन से कोलोन सिर्फ बीस मील के अंतर पर है। रोमन लोगों ने दो हजार वर्ष पूर्व अपनी बस्ती यहाँ बसायी थी। बस्ती यानी कॉलोनी, इसी कॉलोनी शब्द का आगे 'कोलोन' बन गया। रोमन गव्हर्नर की हवेली रोमन-जर्मन म्युझियम, आर्ट गॅलरी देखने के बाद गोपाल और उसके साथी कोलोन का जग प्रसिद्ध कॅथेड्राल देखने गए। 515 फीट ऊँचा यह कॅथेड्राल बनाने के लिये 600 वर्ष का कालावधी लगा। कॅथेड्राल के जैसा ही कॅथेड्राल की रचना का इतिहास भी विस्मयकारक है। आखिर यह कॅथेड्राल सन् 1880 में पूर्ण हुआ। कोलोन विश्वविद्यालय भी 700 वर्ष पुराना है। कोलोन शहर की आबादी सिर्फ दस लाख है। इस छोटी आबादी के सुंदर शहर को देखते समय अचानक गोपाल को बम्बई की याद आ गई और बम्बई की विशाल

आबादी का चित्र सामने आते ही रोंगटे खड़े हो गये । 2/3 दिन बाद बम्बई वापस जाना था ।

आखिर प्रयाण का दिन आ ही गया । अपने मित्रों से भावपूर्ण बिदा ले कर गोपाल बम्बई जाने के लिए विमानस्थल गया । विमान आया । गोपाल विमान में सवार हुआ । कुछ ही क्षणों में हवाई अहाज उड़ने के बाद जर्मन देश उसकी आँखों के सामने से ओझल हुआ और करीब 8 घंटों के सफर के बाद बम्बई के हवाई स्थल पर विमान उतरा । जर्मनी की याद लेकर गोपाल भारत में लौट आया था । चंपालाल लेने आया था । गोपाल को आलिंगन दे कर उसने वधाई दी । अब 8 दिन बम्बई में चंपालाल के आग्रह से गोपाल को रहना था । गोपाल का ना करने का सवाल ही नहीं था । चंपालाल बहुत खुश था । अपने मित्र गोपाल पर आज उसे बहुत गर्व हो रहा था । आठ दिन गोपाल के साथ गुजारने का उसने निश्चय किया था । आज चंपालाल के तरफ से गोपाल को ताजमहल होटल में लंच पार्टी थी । पंचतारांकित होटल में लंच लेने का गोपाल का यह पहला अनुभव था । घर में चंपालाल की पत्नी ने उसका स्वागत किया । बच्चे भी फॉरिन से आये हुए अंकल के आगमन से खुश थे । ताजमहल में लंच का कार्यक्रम जोरदार हुआ । लंच के बाद आइसक्रीम खाते समय चंपालाल ने कहा गोपाल तू बहुत भाग्यवान है । बचपन से अंग्रेजी विषय में तेरी रुचि रही है । तेरे पिताजी के आकस्मिक मृत्यु के कारण तुझे लेक्चरर बनने से वंचित होना पड़ा और सीतापूर जैसे गांव में अध्यापक बनना पड़ा । आज उसी अंग्रेजी भाषा ने तुझे विदेश यात्रा करवायी,

पुरस्कार दिलवाया जीवन की राह को फिर प्रगति पर लाया तेरी अंग्रेजी कथा की सराहना जर्मनी में हुई" उसकी बात को बीच में ही काटकार गोपाल ने कहा "माफ करना मित्र तुझे कुछ गलत धारणा हुई है। मेरी जिस कथा की सराहना होकर जर्मनी में पुरस्कार मिला है वह कथा मैंने अंग्रेजी में नहीं हिन्दी भाषा में लिखी थी।"

चंपालाल, उसकी पत्नी और साथ आये हुए मित्रों को इस विधान से एकदम आश्चर्य हुआ। उनका अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। सब लोगों के विस्फारित नेत्र देख गोपाल बोला "इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। हिन्दी भाषा में मुझे रुचि है। मैं हिन्दी अच्छी तरह जानता हूँ और कथा प्रतियोगिता के लिए देश विदेश के अनेक भाषाओं में कथाएँ मंगवाई गई थी। मैंने समझा मेरी पुरस्कृत कथा हिन्दी भाषा में है इसका ज्ञान आप लोगों को पहले ही से होगा। लंच के बाद घर वापस लौटते समय भी मित्रों में भी इसी बात की चर्चा हो रही थी और बार बार आश्चर्य प्रदर्शन होता रहा था।

चंपालाल ने गोपाल के सत्कार हेतु बहुत बड़ी पार्टी और समारोह गोपाल के निरोध के बावजूद आयोजित कर रखा था। पार्टी में बड़े लोग आमंत्रित थे। उद्योगपति, फिल्मी हस्तियां कम्पनी के मालिक, मॅनेजर्स, कवि लेखक और अनेक परिचित मित्र परिवार को भी आमंत्रित किया गया था। कॅटरर्स को खाने का बन्दोबस्त करने का भार सौंपा गया था। कुछ ड्रिंक्स के साथ साथ हॉट ड्रिंक्स का भी बन्दोबस्त था। बिना शराब के कोई बड़ी पार्टी का समापन हो ही नहीं सकता था।

पार्टी में आमंत्रितो का आना शुरू हुआ। चंपालाल ने गोपल का परिचय करवाया। गोपाल एक महान लेखक जमीनदार और अमीर आदमी है। अपनी पुरखों से विरासत में मिली जमीन जायदाद के खातिर सीतापूर में ठहरा है इत्यादि बातें सुनकर गोपाल को आश्चर्य तो हुआ मगर पार्टी में चंपालाल की प्रतिष्ठा कम न हो इस उद्देश्य से कुछ न बोला। मगर जरा देर के बाद थोड़ा समय मिलने के बाद चंपालाल को अकेला देखकर उसने कहा "मित्र मेरे अध्यापक होने से छोटे गांव में रहने से तेरी प्रतिष्ठा कम होती है तो तू मेरे बारे में कुछ न बोल मगर मेरे बारे में झूटा वक्तव्य देकर मुझे संकट में न डाल। सत्य कड़वा जरूर है। मगर असत्य बात असत्य है यह सबको मालूम हुआ तो और बुरा होगा। गोपाल को और संकट में न डालने की बात चंपालाल ने मान ली। झूठे परिचय से परिचय न होना ही अच्छा समझकर गोपाल ही पार्टी में अलग अलग रहने लगा। मगर गोपाल को ज्यादा देर तक अलग रहने की आवश्यकता नहीं रही। शराब का दौर शुरू हो गया और जैसे जैसे बड़े लोग आते गए समारंभ जिस व्यक्ति के खातिर आयोजित हुआ था उसको सब भूल गये और अपने-अपने ग्रूप में और अपने अपने विषयों में बातचीत में खो गए। राजकारण, बिझिनेस, सिनेमा क्रिकेट मॅच जैसे अनेक विषयों पर अपने-अपने गुट में बातचीत होती रही। मुख्य साहित्य का विषय और समारंभ का हेतू किसी के ध्यान में ही नहीं था। इस बीच तथा कथित दो-तीन बड़े लेखक आए। चंपलाल ने गोपाल का परिचय कर दिया। मगर इस नये और सामान्य लेखक से बात करना भी उन

महान लेखकों ने उचित नहीं समझा। दिल से नहीं तो कम से कम ऊपरी भाव से सौजन्य पूर्ण व्यवहार भी उनके लिए अनावश्यक दिखाई दे रहा था। उनकी नजर में विनम्रता और मित्रता के बजाय शत्रुता और घृणा की भावना गोपाल को दिखाई दी। उसे इसकी पर्वाह भी नहीं थी।" समाज के अनेक तथ्य उसको इस तथा कथित प्रतिष्ठित घटकों के अवतक के व्यवहार से मालूम हो गये थे।

एक अंधेरी जगह रखी हुई टेबल के सामने बैठा वह यह सब देख रहा था। शोर गुल, एक दूसरों से भद्दे मजाक, अमीर आदमी को देख उसको घेरे हुए आमंत्रित सज्जन, लड़कियों को अकेले देख उनके आजूबाजू पुरुषों का जमघट यह सब देखकर उसे अजीब सा लग रहा था। खाद्य पदार्थों के लिए खींचा तानी यह सब देख कर उसे अजीब सा लग रहा था। खाद्य पदार्थों की प्लेटे आते ही लोग उन पर इस तरह हमला कर रहे थे जैसा की भिखारी लोग किसी अन्न सत्र पर करते हैं। अमीर और गरीब की समातना बहुत सी वातों में आज दिखाई दे रही थी।

"माफ करना। मैं आपको डिस्टर्ब कर रही हूँ" के शब्द कान में पड़ते ही गोपाल ने देखा एक सुंदर युवती हाथ में डायरी लिये उसके सामने खड़ी थी। उसके साथ एक और भी युवती खड़ी थी। गोपाल ने उनकी तरफ देखा "मुझे ऑटोग्राफ चाहिए" यह कहते हुए युवती ने डायरी सामने की। "आपको कुछ गलत फहमी हो रही है। मैं आटोग्राफ देने उतना बड़ा आदमी नहीं हूँ।" सौजन्याता से गोपाल ने कहा। "गोपाल आपही है ना? चंपालाल जी ने ही आपकी तरफ

हमें भेजा है ।" उन दो लड़कियों को गोपाल ने बाजू की खुर्सियों पर बैठने को कहा, उनके आग्रह पर दोनों की डायरी पर हस्ताक्षर किए । आपकी कथा हमने व्हाईस ऑफ जर्मनी पर सुनी और हम प्रभावित हुए । आपकी और रचनाओं के बारे में भी हमें दिलचस्पी है "कहते हुए लड़की ने अपना परिचय दिया मेरा नाम मीरा है । मेरे पिताजी यहां बम्बई में बहुत बड़े पब्लिशर हैं और आपसे मिलना चाहते है । यह मेरी सहेली वनिता है" मीरा ने परिचय दिया ! "मेरा जर्मनी में पुरस्कृत मेरी रचना के सिवा और कुछ भी साहित्य नहीं जो प्रकाशित हुआ हो और मैं एक अंग्रेजी विषय पढ़ानेवाला छोटा अध्यापक हूँ ।" गोपाल के इस प्रमाणिक परिचय से लड़कियां और प्रभावित हुई । वनीता उठकर गई और आते समय खाद्य पदार्थों से भरी तीन प्लेटें लेकर आयी । उनके साथ बैठकर गोपाल ने खाया । पार्टी जोरों से चल रही थी । मगर अब पार्टी में आमंत्रित लोगों के तरफ गोपाल का ध्यान नहीं था । इन दो सुन्दरियों से बातचीत करने में उसे अभूतपूर्व आनन्द मिल रहा था और अब तक आये कटु अनुभवों को और दृश्यों को वह भूल चुका था । बहुत देर तक उसकी कथाओं ने बारे में और जर्मनी यात्रा के बारे में बातचीत करने के बाद लड़कियां उठ खड़ी हुई और मीरा ने अपने पब्लिशर पिताजी से मिलने के लिये दूसरे दिन चंपालाल के घर आने की बात कही और गोपाल से विदा ली ।

मीरा के आने की प्रतिक्षा सुबह गोपाल कर रहा था । रात में पार्टी बहुत देर तक चलने के बावजूद उसके चेहरे पर जरा भी थकान नहीं थी बल्कि एक नया चैतन्य था । कॉल

बेल बजी तो नौकर ने दरवाजा खोला, मीरा आयी थी चंपालाल और उसके परिवार के साथ बातें कर चाय पीकर मीरा गोपाल के साथ चंपालाल के घर से निकली। उसने ड्रायव्हर को गाड़ी स्टार्ट करने को कहा। 15 मिनट में गाड़ी मीरा के घर के सामने खड़ी थी। घर में जाते ही मीरा ने उसके पिता से परिचय करवाया। गोपाल के व्यक्तित्व और साहित्य से पब्लिशर साहब प्रभावित हुए और उसका साहित्य छापने का उन्होंने वचन दिया।

अगले दो तीन दिनों में मीरा चंपालाल के घर रोज आती रही और गोपाल से उसका परिचय और भी गहरा हो गया। गोपाल और मीरा साथ-साथ अकेले घुमने लगे। चंपालाल की पत्नी ने गोपाल को दो-तीन वार इस बात पर छेड़ा। चंपालाल को भी मीरा और गोपाल एक दूसरे की आकृष्ट होते दिखाई दिये। मगर दोनों की साम्पत्तिक स्थिति का अंतर देखकर यह असंभव-सा दिख रहा था। मीरा के पिता भी गोपाल से काफी प्रभावित थे।

एक दिन जुहू के किनारे पर मीरा और गोपाल बैठे थे तब गोपाल ने सीतापूर वापस जाने की बात कही। मीरा इस बात से नाराज दिखाई दी। गोपाल को यह बात समझ में आई कि मीरा उसकी ओर आकृष्ट है। उसने अपने विचार स्पष्ट किये। वह सीतापूर के शांत और खुले वातावरण को पसंद करता था। उसका मित्र परिवार और निष्पाप प्रामाणिक समाज उसे प्रिय था। उसकी पाठशाला, विद्यार्थी और सीतापूर उसे बहुत प्यारे थे। अपनी बहन बिमला की शादी भी वह सीतापूर के स्कूल के सहपाठी मित्र से कराना चाहता

था। शादी के लिए पर्याप्त धन उसने पुरस्कार के रूप में कमाया था। अपनी बहन और माँ से वह दूर नहीं जाना चाहता था। अप्रत्यक्ष रूप से अपने विचार मीरा को बताए उसकी बातों का तात्पर्य यह था कि अगर मीरा उसे चाहती है और उससे शादी भी करना चाहती है तो कर सकती है मगर उसे सब कुछ छोड़कर सीतापूर आना पड़ेगा। मीरा और गोपाल दोनों ने अपने मन की बात प्रत्यक्ष रूप से नहीं कही। दोनों ने भी प्रत्यक्ष अपने प्रेम की बात करने की चेष्टा नहीं की। उनके मन की बात मन ने जान ली थी। मीरा वहाँ से उठकर घर को चली गई। जाते समय गोपाल ने उसे एक ही बात कही—"मैं तुम्हारे पत्र का इन्तजार करूँगा।"

चंपालाल के साथ एक दो दिन और रहकर गोपाल चंपालाल और उसके पत्नी की आज्ञा लेकर और फिर जल्द मिलने का वायदा कर कर सीतापूर के लिए चल दिया।

सीतापूर आने के बाद गोपाल का भव्य स्वागत हुआ। उसके स्कूल में उसके स्वागत में बड़ा कार्यक्रम आयोजित हुआ। वह सीतापूर के स्कूल में अध्यापन करने के लिए वापस आया इसलिये स्कूल के प्रिन्सिपाल, अध्यापक, विद्यार्थी और सीतापूर वासी बहुत आनन्दित थे। गोपाल की माँ और बहन बिमला की खुशी की तो सीमा ही नहीं थी। गोपाल ने अपनी बम्बई यात्रा, जर्मन यात्रा, पुरस्कार समारोह और बम्बई के बारे में विस्तार पूर्वक सारी बातें बताई। चंपालाल उसकी पत्नी, मीरा और उसके पब्लिशर पिता के बारे में भी सारी बातें कह डाली। मीरा को मिलने के लिए विमला उत्सुक थी।

सीतापूर आकर 8 दिन का समय बीत गया। गोपाल

मीरा के बारे में बार-बार सोचता उसके दिल में आखिर क्या है वह जानना चाहता था । अचानक विमला गोपाल जहाँ बैठा था वहाँ आई और उसने बम्बई से आया हुआ पत्र गोपाल के हाथ में थमाया । काँपते हाथों से गोपाल ने पत्र खोला । अपेक्षानुसार मीरा का पत्र था । उसके विचारों से वह सहमत थी । पिताजी ने भी अपनी सहमती दे दी थी । मीरा गोपाल से शादी करके सीतापूर आकर रहने के लिए तैय्यार थी । सिर्फ शादी बम्बई में करने की उसकी इच्छा थी और धूमधाम से करने की पिताजी की इच्छा थी । गोपाल एकदम आनन्दित हो उठा । उसका यह स्वप्न भी साकार हो गया था । बम्वई में शादी के लिये जाने को वह एकदम तैयार था ।

गोपाल और मीरा की शादी बम्बई में धूमधाम से हो गई । मीरा उसके साथ सीतापूर आ गयी । मीरा की सहेली वनीता ने रंगीत कागज़ में लपेटकर एक प्रेझेन्ट दिया था और सीतापूर आने के बाद खोलने का आग्रह किया था । अब सीतापूर आते ही अधिरता से गोपाल ने वह प्रेझेन्ट खोला । गोपाल की पुरस्कृत कथा की वह एक कॉपी थी । साथ में एक छोटे कागज पर लिखा था "शादी के लिए हार्दिक बधाई और इस लिखित कथा के द्वारा जर्मनी को भ्रमण और मीरा जैसी जीवन साथी मिलने के लिए अभिनंदन ।

रचना

मांडवी नदी का विशाल जलप्रवाह उससे भी विशाल सागर में समा जा रहा था, जितनी उत्सुकता से मांडवी की लहरें सागर की गोद में समाने के लिए आती थी, उतनी ही चेतना से सागर की विशालकाय लहरें उन्हें अपने में समा रही थी। किनारे से दूर उस पार दिखाई देने वाली हरियाली, हिलते डुलते नारियल के पेड़ और नदी के पानी में हिलती नौकाएं, दृष्य को और मनोहारी बना रही थी।

एक विशालकाय नौका-मोटर लांच 25/30 यात्रियों को आस पास की छोटी नौकाओं को पीछे छोड़कर पानी के लहरों की पर्वाह किये बिना ऐसी तेजी से और शान से आगे जा रही थी जैसी वह उस जलाशय की रानी हो। नौका के अन्दर संगीत का जोर शोर था। गिटार, ड्रम्स् जैसे वाद्यों के जोर शोर से वातावरण में मस्ती, गति और रंगीलापन आ गया था। साथ ही अपने रंगीन चित्र विचित्र पोशाखों में नौका विहार के लिए सजधज कर आये यात्री उत्तेजित होकर नाच रहे थे तालियां बजा रहे थे। नौजवान युवक, सुन्दर युवतियां बच्चे और बुढ़े सभी उस वातावरण में तन्मय होकर संगीत और नौका विहार का आनन्द ले रहे थे। नौका के अन्दर चल रहे संगीत और जोशीले डान्स के वातावरण में मस्त यात्रियों की डान्स करनेवाली युवतियों के जादू ने मोहित कर लिया था। निसर्गशोभा और मांडवी की नौका और दिल दोनों को

साथ साथ हिलानेवाली लहरों का आकर्षण अब सब भूल गये थे। इसमें एक ही व्यक्ति अपवाद था—धीरज।

नौका मे धीरज एक ही ऐसा व्यक्ति था जिसे नौका के अन्दर मिलनेवाले आनन्द से बाहर के निसर्ग का आनन्द ज्यादा महत्व का लग रहा था। धीरज अकेला डेक पर आकर पानी की विशाल लहरें और दूर दिखाई देनेवाले हरे हरे पेड़ देखकर मन ही मन कुछ सोच रहा था। जहाँ तक दृष्टि जाएं देखने की चेष्टा कर रहा था। आँखों में सृष्टि सौंदर्य जितना समाने को मिले समाने की कोशिश में था। शायद यह पानी की लहरें और पांडवी नदी के परिसर में फैला यह निसर्ग सौंदर्य फिर देखने को न मिले।

संध्या का समय बस अब खत्म होने को ही था। अस्तांचल के सूरज की लाली चारों ओर फैली थी। मानो दुल्हन की बिन्दिया साजन की बाहों में घुल मिल गयी थी। साजन ने उत्कटता से प्रियतमा को बाहों में ले लिया था। सिंदुरी टिकिया फैल गई। सूर्यास्त हुआ। सूर्य बिम्ब पानी में धुल गया। जैंसे दुल्हन की बिन्दिया और अनुराग की लाली प्रिया के गालों पर छा गई। थोड़ी देर में अंधेरा छा गया। पानी की विशाल लहरों ने रौद्र रूप धारण किया। लहरों के साथ नौका भी जोरों से झोंके लेने लगी। पानी की आवाज में अजीब सी भयानकता आयी थी। अन्दर शोरगुल के संगीत यात्रियों को इसका पता न था सिर्फ धीरज अकेल यह अनुभव ले रहा था। रचना संगीत का आनन्द तो ले रही थी मगर छोटी गुड़िया सी लेस्ली उसे बार बार कुछ पुछ कर तंग कर रही थी। आगे की सीट पर जाकर उसे बैठना था डान्स, नजदीक

जाकर देखना था। तंग आकर आखिर रचना को उठना पड़ा। सामने जाकर अधेड़ उम्र वाली एक महिला से उसने लेस्ली को अपने पास बिठाने की बिनती की। उस महिला ने बड़े आनन्द से बात मान ली और लेस्ली को पास बिठा लिया। एक कॅडबरी का बड़ा सा पॅकेट भी लेस्ली के हाथ में थमा दिया। रचना को समाधान हुआ। अब वह संगीत और डान्स का आनन्द अच्छी तरह ले सकती थी। डान्स करनेवाले और वाद्य बजानेवाले सभी कलाकार बड़ी कुशलता से और प्रामाणिकता से यात्रियों का मनोरंजन कर रहे थे। करीब दो घंटे चेहरे पर जरा सी थकान दिखाए बिना उन्होंने अपने संगीत और नृत्य से यात्रियों को मंत्र मुग्ध कर दिया। नौका विहार का समय खत्म होने जा रहा था अब सिर्फ दस मिनट में नौका किनारे पर लगनेवाली थी। संगीत बन्द हुआ। वातावरण में एक अजीब सी शान्ति थी। नौका विहार का आनन्द लेने के बाद यात्रीगण अब खामोश थे। वातावरण में अजीब सी गम्भीरता छायी रही।, नौका से बिदाई ले कर किनारे पर जाने की कल्पना से सभी को दुख हो रहा था मानो सभी ने वहाँ कुछ खो दिया हो।

रचना लेस्ली को लाने सामने गयी। लेस्ली वहाँ नहीं थी। जिस महिला के पास वह बैठी थी। उसने बताया की बीच में उठकर लेस्ली चली गयी। डान्स की गड़बड़ी में वह कहाँ गयी। उसे मालूम ही नहीं पड़ा। शायद लेस्ली रचना के पास वापस गयी समझकर उस महिला ने उसे फिर ढूँढने की कोशिश नहीं की थी। रचना ने इधर उधर देखा। नौका के अन्दर वह कहीं नहीं थी। रचना के पिता जी के लंडन स्थित

मित्र के बेटे और बहु-स्मिथ और जेनी को गोआ दिखाने की जिम्मेदारी रचना ने ले ली थी। और पणजी में शॉपिंग करने गये स्मिथ और जेनी की बेटी लेस्ली को नौका विहार कराने रचना अपने साथ लायी थी। लेस्ली जब कहीं न मिली तो रचना रो पड़ी। यात्रियों में से लेस्ली को किसी ने नहीं देखा था। डान्स के दौरान लेस्ली शायद डेक पर गयी हो एक यात्री ने अनुमान लगाया। रचना के हाथ पैर यात्री की इस शंका से काँपने लगे। डेक पर चली तेज हवा के कारण लेस्ली पानी में गिर गयी होगी और संगीत के शोरगुल में उसकी चीख किसी को नहीं सुनाई दी होगी।

रचना और चार पाँच यात्री डेक की ओर भागे और आश्चर्य और आनन्द से सभी सामने देखते ही रहे। धीरज लेस्ली का का हाथ पकड़ कर हँसते हुए नौका के अन्दर आ रहा था। रचना ने भाग कर लेस्ली को बाहों में ले लिया। रोते रोते धीरज से कहने लगी—"ओह गॉड ! थँक यूँ व्हेरी मच जंटलमन ! तुमने लेस्ली को और मुझे बचा लिया। मैं आपका यह एहसान लाईफ में कभी नहीं भूल सकती।" "इसमें एहसान मानने की कुछ आवश्यकता नहीं है और न ही मैंने लेस्ली को बचाया है।" हँसते हुए धीरज ने कहा। उसने आगे कहा—"मैं डेक से बाहर देख रहा था अचानक लेस्ली वहाँ आयी। अन्दर म्युझिक चल रहा था डेकपर हम दोनों बातें कर रहे थे।" मैं फिर भी आपकी एहसान मंद हूँ। मेरे लिए तो आप ईश्वर रूप है। इतने जोशीले और मस्ती भरे संगीत में, लहरों की बौछारें शरीर को काट देनेवाली जोरदार और ठंडी हवा में डेक पर आपके जैसा एक नौजवान अकेला

खड़ा रहेगा इसकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी । अगर आप डेक पर न होते तो लेस्ली अकेली का क्या हो जाता इस कल्पना से अभी भी मेरा हृदय काँप उठता है। "मैं आपकी सचमुच ऐहसान मंद हूँ । रचना की बातें सुनकर धीरज सिर्फ मुस्कुराया । इस सुन्दर लड़की से बातें करने का सौभाग्य उसे इस नौका विहार में मिला इसलिए उसको आनन्द हुआ था। इतने में नौका किनारे पर लग गई । रचना ने देखा धीरज एक सुन्दर युवती से और साथ ही एक युवक से कुछ बातें कर रहा था । तीनों आपस में कुछ बातें कर हँस रहे थे । सब यात्री किनारे पर आ गये । धीरज ने रचना से अपना नाम बताया उसका नाम पूछा और रचना ने उसे लेस्ली उसके माता पिता की बात भी कह डाली । उसने पणजी में वह जहाँ उतरा था उस होटल का नाम बताया और यह भी बता दिया कि वह गोआ और किसी को दिखाने आया है । धीरज जिनके साथ था वह युवती और युवक दूर खड़े थे इसलिए उनका परिचय रचना से नहीं हो पाया । रचना गोआ की रहनेवाली है यह भी रचना ने उसे बता दिया । "कल आप मिस्टर स्मिथ और मिसेस जेनी के साथ कहाँ जा रही है" यह प्रश्न धीरज ने पूछ तो दिया मगर ऐसा पूछने से शायद रचना नाराज होगी ऐसा उसे लगा । एक अनजानी युवती को थोड़े से परिचय में ही ऐसा पूछना शिष्टाचार के विरुद्ध था । "हम लोग कल कलंगुट बीच पर जा रहे है । आप वहाँ आए तो शायद भेंट होगी" रचना ने कहा ।

"थँक यू । फिर मिलेंगे" धीरेज ने कहा "अच्छा ! फिर

मिलेंगे, गुड़ नाईट कहकर रचना चली गई।" धीरज रचना की आँखों से ओझल होने तक देखता रहा। बाद में अपने साथियों के साथ होटल की तरफ चल दिया।

दूसरे दिन की प्रतिक्षा करना रात में धीरज के लिए मुश्किल हो गया था। रचना की मूर्ति आँखों के सामने आ रही थी। कलंगुट बीच पर वह शायद मिलने वाली थी। लेकिन कब मिलेगी यह उसने भी पक्का नहीं बताया था। शायद वह आयेगी भी नहीं जिन टूरिस्टों को वह गोआ दर्शन करा रही थी उनका विचार बदल भी सकता था। और धीरज के साथ कुछ ही क्षण की मुलाकात के वाद वह सिर्फ उसके लिए कलंगुट बीच पर आयेगी यह भी संभव नहीं था। इतना जादू धीरज ने रचना पर किया था या नहीं इस बात का धीरज की अंदाजा नहीं था। रात को बहुत देर तक उसे नींद नहीं आयी।

दूसरे दिन धीरज की जब नींद खुली तो सामने बेड टी लेकर मिथिला खड़ी थी। धीरज ने घड़ी की तरफ देखा। सुबह के 9 बज चुके थे। "आज हमें कलंगुट जाना है। मुझे जल्दी क्यों नहीं जगाया ?" धीरज ने मिथिला से पूछा। "मैंने तीसरी बार आपको उठाने की कोशिश की तब आप 9 बजे उठे रात में इतनी देर जागने की भला क्या आवश्यकता थी ?" मिथिला के इस प्रति प्रश्न पर धीरज ने कुछ भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की, जल्दी से मुँह धोकर नहाकर वह तैयार हो गया। रितेश कलंगुट जाने की तैयारी कर चुका था। वॉटर बॅग तैयार थी। गर्मी बहुत थी और बीच पर प्यास लगने के बाद पीने का पानी आसानी से उपलब्ध नहीं होगा

यह उसे किसी ने वताया था। कलंगुट जानेवाली वस आधे घंटे में छूटने ही वाली थी। जल्दी-जल्दी तैयार होकर धीरज, मिथिला और रितेश कलंगुट जानेवाली वस में बैठ गये ओर आधे घंटे में बीच पर पहुँच गये।

कलंगुट बीच पर आज बहुत भारी भीड़ थी। दिन के 11 वजने को थे। धूप बहुत तेज थी। बीच पर ठहरना कष्ट प्रद लग रहा था। मगर इतना सुन्दर और शांत समुद्र तट धीरज ने उसकी जिन्दगी में आज तक कभी भी नहीं देखा था। गर्मी के बावजूद टुरिस्ट अपार उत्साह से समुद्रतट पर घुमने का, रेती में बैठने का और पानी में खेलने का अपार आनंद ले रहे थे। विदेशी यात्रियों की भी भारी भीड़ थी। इस विशाल यात्री समुदाय में धीरज की आँखें रचना को ढूँढ रही थी। मगर वह कहीं भी दिखायी नहीं दे रही थी। वह आज उसे पहचानेगी भी या नहीं इसका पता धीरज को नहीं था। मगर आँखें उसे ढूँढ रही थी। कलंगुट बीच का वह मनोहारी दृश्य निसर्ग प्रेमी धीरज को आज इतना मनोहारी नहीं दिखाई दे रहा था जितना रचना को उस बीचपर देखने बाद दिखायी देता। दोपहर का एक बज गया था। कड़ी धूप में अब ज्यादा घूमना फिरना असंभव था। सबको भूख भी लगी थी। रितेश और मिथिला के आग्रह के बावजूद धीरज ने बीच पर बिकने आये फलों को स्वीकार नहीं किया। किसी होटल में जाकर खाना था। और थोड़ी देर बीच पर बैठने की उसकी इच्छा थी मगर मिथला ने उसकी बात नहीं मानी। आखिर निराश होकर धीरज उठा। तीनों कलंगुट बीच के परिसर में यात्रियों की सेवा और साथ में धन प्राप्ती करने वाले अनेक होटलों

में से एक अच्छा सा रेस्टॉरन्ट ढूँढकर रितेश, धीरज औ
मिथिला लंच करने बैठ गये। मेनूकार्ड मंगाने पर मेनूका
पर लिखे हुए खाद्य पदार्थों की सूचि देखते ही सब के मुँह ;
पानी आया। वहुत सी खाने की चीजें आर्डर करने वे
पश्चात दूसरे दिन के प्रोग्रॅम के बारे में रितेश ने धीरज वे
साथ विचार विनिमय किया। खाद्य पदार्थ सामने आते ही
विना बात किये तीनों ने भोजन किया भूख के सामने अब
बात करने का किसी का मूड़ नहीं था। अच्छे स्वादिष्ट
भोजन से समाधान पाकर तीनों फिर कुछ देर तक बातें
करते बैठे। थकान एकदम चली गयी थी। अब धूप का
भी उतना भय नहीं लग रहा था। कलंगुट बीच पर और एक
राऊंड मारने का धीरज का विचार मिथिला और रितेश को
भी पसंद आया। वॉटर बॅग में पुनः पानी भरना आवश्यक
था। होटल के अन्दर जाकर बॅग पानी से भर कर लाने के लिए
धीरज उठकर होटल के अन्दरी भाग में गया। उसने वेटर
को वॉटर बॅग में पानी भर कर देने की बिनती की। वेटर
पानी भर कर लाने के लिए वॉटर बॅग लेकर गया तब तक
सहजता से धीरज ने होटल में इधर उधर दृष्टि डाली।
अचानक एक टेबल के सामने रचना को बैठी हुई देख धीरज
आश्चर्य और आनन्द का अनुभव करते हुए उल्हासित मुद्रा से
भागकर रचना के पास गया। "आपने मुझे पहचाना ?" उसने
रचना से पूछा "क्यों नहीं मैं तो आपही को ढूँढ रही थी।
सुबह से आप कहाँ गायब थे ?" रचना ने पूछा—"खैर अब
तो हम मिल गये ना ? अब तो मैं आपके साथ रह सकता
हूँ ना ?" आनन्द से धीरज ने पूछा—"अवश्य अवश्य"

कहते हुए रचना ने उसके साथ बैठे हुए स्मिथ और जेनी से उसका परिचय करवाया छोटी लेस्ली ने अंकल को एकदम पहचान लिया, कल शाम में पणजी में नौकाविहार के दौरान जो हुआ मैंने स्मिथ साहब और जेनी को बता दिया है। वे दोनों भी आपके बहुत ही आभारी है। स्मिथ और जेनी ने प्यार से धीरज से हाथ मिलाया और "मे गॉड ब्लेस यू" कह कर उसकी सराहना की। धीरज मन में खुश हुआ। इतने में वेटर वॉटर बॅग लेकर आया "माफ कीजिए मैं अभी आया कह कर वह होटल के बाहरी हिस्से में आया और मिथिला और रितेश के हाथ में वॉटर बॅग देते हुए उसने कहा कलकी मोटर लांच पर मिली हुई रचना आयी है और मैं उसके साथ थोड़ी देर घूम कर आता हूँ तब तक आप बीच पर बैठे रहिए।" कह कर फिर अन्दर की ओर आया तो उसने देखा स्मिथ साहब और जेनी चल दिये थे। रचना लेस्ली के साथ अकेली बैठी थी। "स्मिथ और जेनी थक गये है और वापस जाकर विश्राम लेनेवाले है। मैं और लेस्ली भी जाने वाले थे लेकिन अब आप मिल गये है तो कुछ देर आपके साथ रह कर जल्दी लौटने का वादा मैंने जेनी से किया है और हम आपके लिए ठहरे हैं बोलिए आगे क्या करना है?" रचना के विधान से मनोमन आनन्दित धीरज ने कहा—"हम लोग बीच पर दूर तक घूमकर आयेंगे मुझे आप से बहुत सी बातें करनी है।" रचना आनन्द से लेस्ली का हाथ पकड़ कर उठ खड़ी हुई। बोली मेरी भी यही इच्छा थी। चलिये।

धीरज रचना और लेस्ली के साथ बीच पर आया। दूर पानी के पास मिथिला बैठी थी। रितेश बीच पर ही एक

लड़के के पास से कुछ चीजे खरीद रहा था। मिथिला को देखकर हँसकर धीरज ने हाथ हिलाया। उसने भी हिलाया। "वह अपने साथ नहीं आ रही क्या ?" रचना ने पूछा। "साथ ही रहती है और उसके साथ ही तो वापस बम्बई जाना है मगर आपके साथ फिर कब मिलना होगा" कह कर धीरज रचना के साथ चलने लगा। रचना को थोड़ा आश्चर्य हुआ मगर वह खामोश बैठी।

रचना और धीरज बीच पर चलते रहे। अब कलंगुट का वह समुद्र तट धीरज को बहुत अच्छा लग रहा। धूप का असर भी कुछ कम दिखाई पड़ता था और हवा के झोंके वातावरण को ठंडा बना रहे थे। समुद्र तट से दूर नारियल के पेड़ों से शोभायमान धर्ती समुद्र की शोभा बढ़ा रही थी। हवा के हिलने से नारियल के ऊँचे पेड़ अत्यंत सुन्दर लग रहे थे। "आप बहुत भाग्यवान है।" धीरज ने रचना से कहा। रचना ने प्रश्नार्थक मुद्रा से उसकी ओर देखा। "आपको गोवा जैसे सुन्दर प्रदेश में रहने का भाग्य मिला है। हमारे बम्बई शहर की भीड़ और गंदी बस्तियाँ देखकर मेरे लिए तो गोवा स्वर्ग-सा लगता है। "वैसे मुझे निसर्ग से प्यार है और निसर्ग की शोभा देखने के बाद जीवन के हर दुःख को मैं भूल जाता हूँ। हर वर्ष दो बार तो भी कहीं निसर्ग शोभा का स्थान ढूँढ लेता हूँ और अपने जीवन के कुछ क्षण आनन्दी वातावरण में और खुली हवा में बिताता हूँ।" धीरज बोलते जा रहा था। रचना उसकी बातों को ध्यान से सुन रही थी यह देखकर उसे अच्छा लगा और वह बोलता रहा। लेस्ली आगे-आगे भाग रही थी। बहुत दूर तक चलने के बाद किनारे पर दूर रेती

में रचना के कहने पर वे दोनों बैठ गये। जरा सा दूर जाकर गिली रेती में खेलती लेस्ली रेती का घर बनाने के प्रयास में रेती में बैठ गयी। बहुत देर तक अपने बारे में धीरज उसे बातें सुनता रहा। वह ध्यान पूर्वक सुन रही थी। गरीब घर में पाला पोसा होने के कारण उसने जीवन के बहुत से चढ़ाव उतार देखे थे। ईश्वर की दया से बम्बई के एक प्रायव्हेट शिपिंग कम्पनी में उसे नौकरी मिली थी। नौकरी के बहाने वाली सुमात्रा जैसे छोटे देशों की जहाज यात्रा भी उसे नसीब हुई थी। भगवान की दया से नौकरी अच्छी थी वेतन अच्छा था और कम्पनी के वरिष्ठ भी सब अच्छे लोग थे।

बातों ही बातों में धीरज को यह मालूम हुआ कि रचना गोआ में ही पैदा हुई थी और उसके पिताजी का छोटा होटल मडगांव में है जो उसके दादा-परदादा के जमाने से चल रहा है। उस छोटे होटल की आमदनी अच्छी होती थी। मगर पिताजी को होटल छोड़कर कहीं जाने की फुरसत ही नहीं मिली थी। पिताजी के इंग्लैंड स्थित दोस्त के परिवार के मि. स्मिथ अपनी पत्नी जेनी और बेटी लेस्ली के साथ उनके ही होटल में ठहरे थे और गोआ दिखाना रचना के पिता की आज्ञा ने कर्त्तव्य हो गया था। रचना ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं थी। मगर कॉन्व्हेंट स्कूल में रहने से अंग्रेजी अच्छी बोल लेती थी और विदेशी मेहमान उसकी अंग्रेजी बोली से बहुत खुश थे। रचना पिताजी को होटल के काम में भी मदद करती थी। धीरज के समान उसे भी प्रकृति से बहुत प्रेम था और निसर्ग प्रेमी होने से गोआ छोड़कर कहीं दूर जाने की कल्पना भी उससे सही नहीं जाती थी। लेस्ली की जान धीरज के

कारण ही बच गयी थी और रचना भी बदनामी से बच गई थी। यह बात रचना के दिल में पक्की बैठ गई थी। वह दिल ही दिल में धीरज को चाहने लगी थी। मगर यह असंभव सा लग रहा था। बातों बातों में वे एक दूसरे के बहुत निकट आ गये थे। विचार करते-करते रचना ने देखा तो लेस्ली समुद्र के पानी की तरफ जा रही थी। बुलाने पर भी वापस न आने से उसे पकड़ने रचना समुद्र की ओर गई। उसके पीछे धीरज भी गया लेस्ली पानी के अन्दर खड़ी होकर क्षितिज की तरफ देख रही थी रचना और धीरज भी पानी में जा खड़े हुए धीरज लेस्ली का हाथ पकड़ा इतने में समुद्र की बहुत बड़ी लहर आयी अपनी मार से उन तीनों को पानी में गिरा दिया। रचना पानी की धार से थोड़ी दूर पानी के अन्दर गई थी। किनारे पर लेस्ली को छोड़ धीरज उसकी तरफ गया। रचना पानी में भीग गई थी। हँसते हँसते किनारे की ओर आ रही थी इतने में पानी की और एक बड़ी लहर आयी और उस लहर ने रचना को सामने से आते धीरज के तरफ ढकेल दिया धीरज और रचना दोनों पानी में गिर गये मगर अब रचना धीरज के बाहों में थी। कुछ ही क्षणों में दोनों दूर हो गये और किनारे पर आ गये सब भीग गये थे मगर साथ में और कोई कपड़ा या टॉवेल नहीं रहने से भीगे कपड़े और शरीर को सुखाने के लिए वहां कुछ और देर तक ठैरने के सिवाय दूसरा पर्याय नहीं रहा था। धीरज रचना और लेस्ली के साथ रेती में कुछ और देर तक बैठा रहा। धीरज और रचना अब बिल्कुल चुपचाप से बैठे थे। अभी अभी समुद्र के पानी में जो उनका मिलन हुआ शायद उसी के बारे में सोच रहे

थे । लेस्ली अकेले अंकल और आंटी से बातें करती रहीं उसे जल्दी घर जाना था । अब मम्मी की याद आयी थी । थोड़ी देर बैठने के बाद कपड़े और शरीर जरा सा सुखने के बाद उठकर चलने को रचना ने शुरुआत की । धीरज और लेस्ली भी उसके पीछे पीछे चलने लगे । अब अंधेरा छा गया था । धीरज रचना और लेस्ली को मडगांव तक छोड़ने गया । रचना ने उसके पिता गोपाल स्वरूप से धीरज का परिचय करवया । धीरज के नम्रता पूर्ण व्यवहार से और धीमी आवाज में बोलने के अंदाज से रचना के पिता बहुत प्रभावित हुए । गोआ में कंपनी का छोटा ऑफिस खोलने का इरादा है और हो सका तो बम्बई से गोआ को ट्रान्सफर लेकर जरूर आने का विचार रखता है । गोआ का आकर्षण उसे पहले से ही है । धीरज के विचारों को सुन वे उसे अपने घर का ही एक सदस्य समझने लगे । बातचीत के समय वहाँ मिस्टर स्मिथ और जेनी भी आ गये । उन्होंने भी धीरज से देर तक बातचीत की । कल ओल्ड गोवा जाकर पुराने चर्चेस खासकर सेंट झेवियर का चर्च देखने का मिस्टर स्मिथ का इरादा था । कल उन्हें मिलने का वचन देकर धीरज़ वहाँ से उठ खड़ा हुआ । उसे बाहर के गेट तक पहुँचाने के लिए रचना आयी । रचना से विदाई लेते समय धीरज ने कहा—"रचना तुम्हें मैं जीवन में बहुत देर से मिला । बहुत पहले ही मिलना था । मुझे तुम्हारे जैसे साथी की बहुत दिनों से तलाश थी । कितना अच्छा होता अगर तुम मेरी जीवन साथी बनती हम दोनों गोआ की इस निसर्ग शोभा को दिन रात देखते देखते सारा जीवन बीताते ।" धीरज के इस

अचानक मन की बात. स्पष्ट रूप से कह देने से रचना को आश्चर्य हुआ। मुस्कुराकर वह इतना ही बोली अच्छा। कल मिलेंगे।

रात में होटल में वह जब लेट पहुँचा तब धीरज ने देखा कि रितेश उसकी राह देख रहा है। धीरज ने देर से आने के लिए क्षमा माँगी और मिथिला के बारे में पूछा। उसके आने की प्रतिक्षा बहुत देर तक करने के बाद वह तंग आकर सो गयी थी। कल ओल्ड गोवा जाने का प्रोग्राम रितेश को बताकर धीरज अपने बिस्तर में जाकर लेट गया। दिनभर की थकान के कारण उसे नींद कब लगी पता ही नहीं चला।

दूसरे दिन सुबह 6-30 बजे जब मिथिला उठकर बाहर आयी और उसने देखा तो धीरज को तैय्यार होकर अखबार पढ़ते हुए चाय का आनन्द ले रहा था। मिथिला को आश्चर्य हुआ। रात में होटल को देर से आने की वजह मिथिला को जल्दी जल्दी बताकर उसने उसे जल्दी ओल्ड गोवा जाने के लिए रेड़ी होने को कहा।

ओल्ड गोवा पहुँचकर रितेश धीरज और मिथिला सेन्ट झेवियर के चर्च के सामने जब खड़े थे तो धीरज ने रिस्ट वॉच देखा सुबह के 9-30 बज चुके थे। वहाँ अभी टुरिस्ट लोगों का आना शुरू ही नहीं हुआ था। चर्च के अन्दर एक घंटे से ज्यादा समय गुजारने के बाद बाहर आकर वे तीनों एक झाड़ के नीचे बैठ गये। सामने ही बम्बई से आयी हुई टुरिस्ट बस से कुछ यात्री उतर कर चर्च के तरफ आ रहे थे तभी रचना मि. स्मिथ जेनी और लेस्ली के साथ उनके तरफ

आती दिखाई दी। रचना को देखते ही धीरज उसके पास गया। फिर अन्दर सेन्ट झेनियर चर्च में रचना के साथ जाना था। "चलिए!" कहकर धीरज रचना के साथ निकला तो रचना ने पूछा—"वो अपने साथ नहीं आ रही है क्या?" उसका इशारा मिथिला के तरफ था। धीरज हँसकर बोला "उसका नाम मिथिला है। हम लोग पहले ही चर्च देख चुके हैं और वह थक गयी है और रितेश बम्बई से आये कुछ टुरिस्टों से बातें कर रहा है।" रचना इस पर कुछ न बोली मि. स्मिथ और जेनी धीरज की कम्पनी मिल रही है इसीलिए खुश थे। दिन भर ओल्ड गोआ के चर्चेस् म्युझियम आदि देखने में शाम के चार बज गये थे। धीरज से बातें करने में मि. स्मिथ को आनन्द हो रहा था। धीरज की बातों से ऐसा महसूस होता था जैसे धीरज भारत में नहीं इंग्लैंड में पैदा हुआ हो और मि. स्मिथ का वहुत पुराना दोस्त रहा हो। आज रचना सबके साथ घुमने का आनन्द तो ले रही मगर खुद ज्यादा नहीं बोल रही थी। धीरज ने पणजी के बस स्टँड पर सबसे विदा ली और दूसरे दिन मडगांव आकर कोलवा बीच पर मिलने का वचन दिया। टूर का समय अव थोड़ा ही बचा था और आपस में साथ-साथ जितना ज्यादा समय व्यतीत कर सके उतना समय साथ व्यतित करने की सभी की इच्छा थी। धीरज ने रचना की ओर देखा तो उसे ऐसा लगा जैसे कल फिर मिलने का वह उससे आग्रह कर रही है।

टॅक्सी में सवार होकर रचना, स्मिथ, जेनी और लेस्ली

को लेकर कोलवा बीच पर पहुँची। समुद्र तट पर जाने से पहले बाहर हँडीक्रॅफ्ट की कुछ वस्तुएँ और लेस्ली के लिए कुछ कॅडबरी चॉकलेट्स् खरीदनी थी। रचना धीरज से मिलने के लिये बैचेन थी। "आप लोग शॉपिंग करके जल्दी बीच पर आईए मैं बीच पर बैठती हूँ" कह कर वह बीच की ओर भागी उसकी उत्सुकता देख स्मिथ और जेनी को हँसी आयी। वह बीच पर क्यों इतनी जल्दी भागी यह वे अच्छी तरह जानते थे। धीरज उसका इन्तजार कर रहा होगा यह सोचकर बीच पर उसने इधर-उधर अधीरता से दृष्टि दौड़ाई। पानी के पास रेती में धीरज और मिथिला एक दूसरे के निकट हाथ में हाथ डाले बैठे थे और जोर जोर से हँस रहे थे। सामने रितेश बैठा था वह भी उनके साथ बातें करता हँस रहा था। रचना दूर से यह देख रही थी। मिथिला ने जब धीरज के कंधे पर हाथ रखा तो रचना और आगे न बढ़ी। वह सीधे स्मिथ जहाँ शॉपिंग कर रहा था वहाँ आयी और तबियत कुछ ठीक नहीं है कह कर टॅक्सी में बैठकर वहां से चली गई। मि. स्मिथ और जेनी को बात कुछ समझ में नहीं आयी। वे दोनों लेस्ली को ले कर जब बीच पर आये तो सामने धीरज दिखाई दिया। वंह उनकी प्रतिक्षा कर रहा था। धीरज ने मिथिला और रितेश का परिचय मि. स्मिथ और जेनी से करवाया। रचना के न आने का कारण पूछा तो अचानक तबियत खराब होने से वह बीच तक आकर वापस लौट गई है यह जब धीरज को मालूम हुआ तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ और कुछ निराशा भी हुई। सब मिलकर

कोलवा बीच पर घूमने निकले मि. स्मिथ और जेनी धीरज के साथियों रितेश और मिथिला की कम्पनी मिलने से खुश हो गये थे। रचना साथ में न आने से धीरज ही कुछ नाराज था। दिन भर कोलबा बीच पर समय गुजारकर समुद्र स्नान का आनन्द लेकर और अच्छा सा लंच लेकर स्मिथ और जेनी लेस्ली के साथ धीरज और उसके साथियों से बिदा लेकर लौटने के लिए बाहर टेक्सी के तरफ आये तो धीरज ने रचना से उसके प्रेम की और शादी के प्रस्ताव की बात कही। रितेश और मिथिला शाम को रचना के पिता से मिलने आने वाले थे और थोड़ी देर बाद धीरज भी आनेवाला था। मि. स्मिथ को यह प्रस्ताव एकदम अच्छा लगा। रचना के पिता जी को उनके आने की पूर्व सूचना देने का मि. स्मिथ ने वचन दिया।

जब मि. स्मिथ और जेनी होटल पहुँचे तो रचना कुर्सी पर बैठी एक किताब पढ़ रही थी। "आपकी तबियत अब कैसी है ? जेनी ने पूछा।" थँक यू आय एम फाईन "रचना ने उत्तर दिया। उसकी मानसिक हालत कुछ बिगड़ी हुई दिखाई दे रही थी।" शामको धीरज तुम्हे मिलने आ रहा है। "जेनी के यह शब्द सुनकर रचना उतनी खूष दिखाई नहीं दी। जेनी को आश्चर्य हुआ। मगर वह कुछ न बोली। सीधे अपने कमरे में चली गई।"

स्मिथ और जेनी रचना के पिता के पास आकर बैठे और धीरज के रचना के साथ शादी का प्रस्ताव लेकर बात उठाई तो पिताजी खुश हुए। बोले मैं तो खुद धीरज को अपना

दामाद बनाना चाहता हूँ। आप लोगो ने मेरे मन की बात कही है। रचना भी धीरज को मन से चाहती है मगर आज उसके अचानक वापस होटल को लौटने के वाद तबियत खराब होने की वात की और धीरज के बारे में कुछ पूछने पर सवालों का जवाब देने से नाराजगी दिखाई तो कुछ अजीव सा लगा। मैं समझता हूँ रचना धीरज से शादी करना नहीं चाहती। अव तो स्मिथ और जेनी को भी आश्चर्य हुआ। रचना को क्या हो गया है? कोई नहीं जानता था। शाम के ठीक 7 बजे रितेश और मिथिल आये उन्होंने रचना के पिताजी को अपना परिचय दिया स्मिथ और जेनी भी आये। रितेश और मिथिला ने धीरज रचना के शादी का प्रस्ताव रखा रचना के पिताजी को प्रस्ताव एकदम मंजूर था सिर्फ रचना के हाँ कहने की आवश्यकता थी। रचना की इच्छा के विरुद्ध निर्णय लेना पिताजी उचित नहीं समझा। धीरज वहाँ थोड़ी देर में आने ही वाला था। उसके आते ही रचना को बुलाकर हाँ या ना का जवाब लेकर फैसला धीरज के सामने होना था। सब लोग धीरज की प्रतिक्षा कर थे।

धीरज आते ही उसका सबने स्वागत किया। धीरज आने की खबर मिलते ही रचना भी वहां आ गयी। रचना के पिता जी ने रचना को सीधे सवाल किया। "धीरज के भैय्या और भाभी आये है और धीरज के साथ तुम्हारे विवाह का प्रस्ताव लाये हैं मगर तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कोई निर्णय मैं नहीं लूँगा बोलो धीरज को जीवन साथी बनाना तुम्हें स्वीकार है?" रितेश धीरज मिथिला रचना के पिता और स्मिथ दाम्पत्य

रचना के उत्तर की प्रतिक्षा में थे। "मुझे धीरज से शादी करना मंजूर है। अपने मुँह से पिताजी को यह बात पूछने की मुझसे हिम्मत नहीं हो रही थी। वास्तव में मैं खुद धीरज का प्रस्ताव आप लोगों के सामने रखनेवाली थी। आश्चर्य में पड़ने की अब सामने बैठे हुए सभी की बारी थी। रचना का उत्तर उसके पिताजी को और स्मिथ दाम्पत्य को एकदम अनपेक्षित था। कोलवा बीच से खराब तबियत का बहाना करके होटल वापस आने के बाद पिताजी ने धीरज के बारे में पूछने पर इस विषय पर नीरसतापूर्ण उत्तरों से वास्तव में ऐसा जान पड़ता था जैसे रचना धीरज से शादी के लिए तैयार नहीं। मगर प्रत्यक्ष पूछने पर उसने बिना हिचकिचाये स्पष्ट रूप से सबके सामने स्वीकृति दे दी थी।

वातावरण में रंगीलापन आ गया था आपस में हास्य विनोद करते सब बैठे थे। सब लोग खुश थे डिनर रचना के होटल में अब होना था। धीरज रचना की शादी अगले ही रविवार मडगांव में होनी थी। बम्बई से धीरज के माता-पिता और कुछ मित्र आने वाले थे। रितेश भैया और मिथिला भाभी तो वहाँ थे ही। डिनर के बाद रचना और धीरज को अकेला छोड़ रचना और जेनी के रूम में शादी की और बातचीत करने के बहाने चले गये।

धीरज ने रचना का हाथ पकड़ा और पूछा "रचना!" जेनी ने मुझे बताया कि सुबह कोलवा बीच पर से तबियत का बहाना करके तुम वापस गयी तब तुम्हारी तबियत को वास्तव में कुछ नहीं हुआ था। किसी बात से तुम नारज थीं ?

वैसे तुम्हारे पिता ने जब मुझसे शादी का तुम्हारे सामने प्रस्ताव रखा था तब भी तुमने नाराजगी दिखायी थी। कहीं तुम किसी दवाव में आकर तो मुझसे शादी नहीं कर रही हो ? अगर ऐसा है तो मैं तुम्हे इस बन्धन से मुक्त करता हूँ, मुझे थोड़ा दुख होगा मगर तुम पर मैं कोई अन्याय नहीं होने दूंगा।"

धीरज की बात पर हँसते हुए रचना बोली "नहीं धीरज ! ऐसी कोई बात नहीं। मोटर लाँच पर पहली बार लेस्ली को लेकर जब तुम आये उसी क्षण से मैं तुम्हें चाहने लगी थी। मोटर लाँच पर तुम मिथिला से बात कर रहे थे। तुमने रितेश भैय्या और मिथिला का मुझसे परिचय नहीं कराया। दूसरे दिन भी कलंगुट बीच पर मिथिला को दूर से ही देखकर तुमने हाथ हिलाया और मेरे साथ बीच पर घूमने चल दिये। मेरा परिचय नहीं कराया मैं संभ्रम में पड़ गई "उसे बीच में टोकते हुए धीरज बोला पगली भैय्या और मिथिला भाभी को एकान्त मिले इसलिये मैं दूर दूर रहता था। तुम मिल गई तो उनसे दूर दूर रहना मेरे लिए आसान बन गया। तुम्हारे बारे में मैंने मिथिला को पहले ही दिन सब बता दिया।"
"लेकिन इससे मैं गलत फहमीं का शिकार बन गई" रचना ने कहा। धीरज आश्चर्य से देख रहा था। दूसरे दिन तुम मिथिला से सेन्ट झेवियर चर्च के परिसर में झाड़ के नीचे बैठे थे। मैंने देखा तुम लोग कुछ बातें कर कर हँस रहे थे। मैं वहाँ आते ही तुम मेरे पास आये मिथिला नहीं आई।"

"हाँ ! उस समय हम तुम्हारी ही बात कर रहे थे।

भाभी मुझे चिढ़ा रही थी। तुम आ गई तो भाभी ने कहा था "धीरज ! लो तुम्हारी प्रेमिका आ गयी अब मैं तुम्हें डिस्टर्ब नहीं करती रितेश और मैं थोड़ी देर इधर उधर घूम कर होटल वापस चले जायेंगे। और तब मैंने भी भाभी को चिढ़ाया था "इसी बहाने तुम्हें और रितेश को एकान्त मिल जायगा मेरी बला रचना के साथ दूर हो जायेगी।" धीरज की बातें सुनकर रचना को अब उसके तब के विचित्रता पूर्ण व्यवहार का कारण समझ में आया।

"और कोलवा बीच पर आकर तुम क्यों वापस चली गई ?" धीरज ने पूछा तो रचना ने कहा उसका कारण फिर मेरी गलत फहमी और मूर्खता है। मैंने तुम्हें और मिथिला को हाथ में हाथ डालकर बातें करते हुए देखा तो मेरे मन में जो गलत फहमी थी वह और गहरी हो गयी और मैंने समझा कि तुम शादी शुदा हो। मिथिला तुम्हारी पत्नी है। रितेश तुम्हारा या मिथिला का भाई होगा और मैं पगली एक विवाहित पुरुष को अपना प्रियकर मानने लगी थी। मुझे तुम पर और अपने आप पर गुस्सा भी आया और निराश होकर मैं चली गयी थी। कल रात तुमने जब मुझसे कहा था कि काश "तुम मेरी जीवन साथी रही होती" तो मैंने सोचा शायद तुम अपनी सुन्दर पत्नी से खुश न हो "और यह सोचकर मुझे तुम पर दया भी आ गई थी।" रचना की बातें सुनकर धीरज आश्चर्य में पड़ गया था। रचना को इतनी गलत फहमी हुई होगी इसका पता उसे न था। आवश्यकता न होने से उसने अपने और परिवार के बारे में

कुछ नहीं कहा था। अगर वह पूछती तो वह बता देता। अब गलत फहमियाँ दूर हो गई थी। रचना और धीरज अब इधर उधर की बातें कर रहे थे। इतने में रचना के पिता, स्मिथ, जेनी, मिथिला, रितेश सब वहाँ आये।

मिथिला ने कहा "रचना तुम बहुत भाग्यवान हो कि धीरज जैसा सुशील और निसर्ग प्रेमी पति तुम्हें मिल रहा है।" मिथिला को रोकते हुए धीरज ने कहा वास्तव में भाग्यवान तो मैं हूँ। अगर प्रकृति की रचना का आनन्द लेने मैं मोटर लाँच के डेक पर मैं अकेला न होता और छोटी लेस्ली डेक पर न आती तो मेरा किसी से परिचय न होता और ईश्वर की यह सुन्दर रचना मेरे जीवन में न आती" धीरज ने रचना के तरफ देखा अपनी तारिफ और ज्यादा न हो इसलिए शरमाकर वह अन्दर भाग गई। मि. स्मिथ और जेनी कुछ समझ में न आने से वह एक दूसरे को देखते रहे। रितेश मिथिला और रचना के पिता धीरज की बात पर मुस्कुरा रहे थे।